गीताञ्जलि

परम पूज्य सुधांशुजी महाराज

12·1

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 2786
भारती पुस्तकालय

गीताञ्जलि

पु०सं० 2786
भारती पुस्तकालय

परम पूज़्य सुधांशुजी महाराज

द्वादश संस्करण	:	2 मई, 2004
प्रति	:	1100
प्रकाशक	:	विश्व जागृति प्रकाशन ओंकारेश्वर महादेव मन्दिर, जी-ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली - 110015
दूरभाष	:	011-546 4402, 546 7496
फैक्स	:	91-11-519 3700
e-mail	:	info@sudhanshujimaharaj.com
website	:	www.sudhanshujimaharaj.com
संकलन	:	परम पूज्य सुधांशु जी महाराज
अनुमति	:	महाराज श्री
प्रकाशन प्रयास	:	दुर्गा दास डुडेजा
प्रूफ रीडिंग	:	दिनेश मीणा
कम्प्यूटर ग्राफिक्स	:	लिसी मैथ्यू एवं मुकेश
मुद्रक	:	एन. बी. सी. प्रेस इन्टरनेशनल 76/2 इस्कॉन टेम्पल रोड, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

सर्वाधिकार सुरक्षित :

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को मैकेनिकल, इलैक्ट्रॉनिक, फोटोग्राफी, रिकॉर्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने से पूर्व विश्व जागृति प्रकाशन की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य : 50.00

स्व० श्रीमती प्रेमवती गुप्ता

पु०सं० 2786
भारती पुस्तकालय

की पुण्य स्मृति में
यह पद्य-पुष्पगुच्छ

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता
एवं
समस्त गुप्ता परिवार

विषय सूची

प्रार्थना प्रदीप 1
प्रार्थना की शक्ति 2
हमारा कर्त्तव्य 4
प्रभु स्तुति 8
प्रार्थना 9
जीवन संगीत 10

भजन–गीताञ्जली कैसेट भाग-1

नमस्कार भगवान् तुम्हें 12
तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना 13
मेरा नाथ तू है 14
भगवान् मेरी नैया 15
तेरे नाम का सिमरन 16
दाता तेरे सिमरन का 17
हम सब मिलके आये दाता 18
मेरे दाता के दरबार में 19

भजन–गीताञ्जली कैसेट भाग-2

मेरा उद्देश्य हो प्रभु 20
मानव तू अगर चाहे 21
साथ ले लो पिता 22
उस प्रभु की है कृपा बड़ी 23
तेरी दया का दान मिले 24
आनन्द स्रोत बह रहा 25
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता 26
बातों ही बातों में 27
जगत् मे चिन्ता मिटी उन्हीं की 28

भजन–वन्दना कैसेट भाग-1

डूबतों को बचा लेने वाले 29
हे ज्ञान रूप भगवन् 30
ईश्वर तुम्हीं दया करो 31
उठ नाम सिमर मत सोये रहो 32
शरण में आये हैं हम तुम्हारी 33
जागो रे जिन जागना 34
इक झोली में फूल भरे हैं 35

भजन–वन्दना कैसेट भाग-2

आये तेरे द्वार नमस्कार 36
गाये जा गाये जा 37
ईश्वर जो कुछ करता है 38
प्रभु को ना याद किया 39
किसी के काम जो आये 40
न ये तेरा न ये मेरा 41
कर बंदगी और भजन धीरे-धीरे 42
दाता तेरी भक्ति का 43
उलझ मत दिल बहारों में 44
सारे जहां के मालिक 45

भजन–नमन कैसेट

जीवन की घड़ियाँ 46
हर देश में तू हर वेश में तू 47
तेरे करम से बेनियाज़ 48
हे मेरे सद्गुरू प्रणाम बार-बार 49
शरण में आये हैं हम तुम्हारी 50

तुम मेरे जीवन के धन हो 51
सुबह को बचपन हंसते देखा 52

सिमरन-कैसेट

ओम नमो: नारायणा: 53
ओम नम: शिवाय 54
ओम नमो: भगवते वासुदेवाय 55

भजनमाला

ओ३म् का सिमरन किया करो 56
हे जगपिता, हे जगप्रभु 57
सुबह शाम भजन कर ले 58
ईश्वर से करते जाना प्यार 59
जिस विधि चाहो उस विधि राखो 60
भीतर है सखा तेरा 61
तू व्यापक डाली डाली है 62
कुछ काम करके जाना 63
प्रभु तेरा ओ३म् नाम 64

महाराजजी के द्वारा गाए गए नए भजन

अशरण शरण शान्ति के धाम 65
किसने दीप जलाया 66
गुण गोविन्द गायो नहीं 67
जय जय राधा रमण हरि बोल 68
जहाँ ले चलोगे 69
नैय्या पड़ी मँझधार प्रभु 70
भला करो भगवान 71
राम का सिमरन 72
राम तजूँ मैं गुरू ना बिसारूँ 73
हे नाथ अब तो 74
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम 75
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी 76

वर्णक्रमांक अनुसार

अज्ञान के अंधेरों से 77
अद्वितीय दानी 77
आदमी में अगर आदमी की तरह 78
आये हैं दुनियां में 79
इतना दिया मालिक ने मुझको 80
इतनी शक्ति हमें देना 81
इन्सान की खुशबू रहती है 82
उड़ जायेगा हंस अकेला 83
उठ जाग मुसाफिर 84
उमर का पंछी उड़ता जाता 85
ऊपर गगन विशाल 86
एक सहारा तेरा नाम 87
ऐसी कमाई कर लो 88
ऐसी लागी लगन 89
ऐसा कोई सन्त मिले 90

ओ दुनियाँ के रखवाले 91
ओउम नाम के हीरे मोती 92

क्या लेकर आया जग में 93
कर ईश्वर से प्यार 94
कर ले भला होगा भला 95
कण-कण में जो रमा है 96
करूँ वन्दना मैं उमानाथ 97
कोई दुनिया में आता है 98
कृपा का तेरी एक कण चाहता... 99
काटें से भी खराब है 100
कबीर के दोहे 101
कबीरा जब हम पैदा हुए 102
कैसी प्रभु तूने यह कायनात...... 103

चंचल मन मत कर 104
छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे 105

जब तेरी डोली निकाली जायेगी	106
जब नैया तेरी डोले	107
जब दर पे तुम्हारे	108
ज़रा आ शरण में तू ओउम् की	109
ज़रा तो इतना बता दो भगवान	110
जिस आदमी का सर झुके	111
जन्म देने वाले इतना तो बोल रे	112
जन्म-जन्म का दुखिया प्राणी	113
जीवन है बेकार भजन बिन	114
जीवन खत्म हुआ तो	115
जिन्दगी का सफर	116
ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं	117
तू ही इष्ट मेरा	118
तू कर प्रियतम से प्रीत	119
तू प्यार का सागर है	120
तन में बल सेवा नहीं	121
तेरा पार किसी ने	122
तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार	123
तेरा वर्णन	124
तेरे दर को छोड़कर	125
तेरे चरणां विच	126
तेरे तन में राम तेरे मन में राम	127
तेरी रहमतों का	128
तेरी सांसें गिनी हुई है	129
तेरी बन्दगी जो की है	129
तस्वीर तेरी भगवन	131
तुम्हीं दीनानाथ हो	132
दया कर दान भक्ति का	133
देव तुम्हारे कई उपासक	134
देखी बहुत निराली महिमा......	135
दयालु दया कर	136
दुनियाँ बनाने वाले	137
दरबार में मेरे सत्गुरु के	138
धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार	139
निज चरणों की भक्ति	140
नन्हा सा फूल हूँ मैं	141
नमस्ते 'प्रभुवर'	142
पाके सुन्दर बदन	143
पास रहता हूं तेरे सदा मैं अरे	144
पग-पग मुझे गिराता आया	145
प्रभु बंधे हुए खिंचे हुए......	146
प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर...	147
प्रभु मेरे जीवन को	148
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी	149
पितु मातु सहायक	150
प्रश्न : उत्तर	151
बहे सत्संग की गंगा	153
बीत गये दिन भजन बिना रे	154
बोलो-बोलो कागा	155
ब्रह्म ज्ञान की सीढ़ियों में	156
भूले न भूले	157
भरोसा कर तू ईश्वर पर	158
भगवान मेरा जीवन	159
भगवान जैसा कोई नहीं	160
मैं क्या जानूं मेरे रघुराई	161
मैं नहीं मेरा नहीं	163
मैं ढूंढता तुझे था	164
मन में जग जाये जोत तुम्हारी	165
मन फूला फूला फिरे जगत में	166
मैंने गुरुवर को देखा	167
मेरा शीश झुकायो	168
मेरा जीवन है तेरे हवाले	169
मेरे प्रभु तू इतना बता	170
मेरे मन में बसे हो	171

मेरे प्राणों के आधार	172
मेरे देवता मुझ को	173
मेरे मालिक तेरी	174
मुझे प्रेम का पंथ बता दे	176
मुझे तूने मालिक	177
मुझे गर्व न और	178
मांग बन्दे मांग	179
मैली चादर ओढ़ के कैसे	180
माई री मैंने लियो गोविन्द मोल	181
मंगल मुहूर्त है	182
मिलता है सच्चा सुख केवल	183
मुझको माधव का	184
मुझको दो वरदान राम जी	185
ये गर्व भरा मस्तक मेरा......	186
ये नर तन जो तुझ को मिला है	187
ये भावना बना ले	188
यूं ही जीवन गवाने का......	189
यह जीवन हमारा तुम्हारे लिए हो	190
राम-वन्दना	191
लबपे आती है	192
लिखा कौन मिटाये रे बन्दे	193
लीला तो तेरी अजब निराली	194
लगता है ईश्वर से यह दिल	195
वेखीं दिल न किसे दा दुखावीं	196
शांति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में	197
श्री रामचन्द्र कृपालु	198
सब निराकार और निर्विकार	199
सदा फूलता-फलता भगवन्	200
सर्व मंगल कामना	201
सुन नाथ अरज अब मेरी	202
सीता राम सीता राम कहिए	203
सरल है बहुत जपना प्रभु	204
समय बड़ा बलवान रे	205
सच्चा तू करतार है	206
संसार के वाली ने	207
सूंघता कोई नहीं फूल	208
सदियों से जीव भटकता	209
सतगुरु के चरणों में	210
सत्गुरु प्यारे से	211
हे प्रभु तुझसा न कोई	212
हे जगदीश्वर हे भगवान	213
हे जग त्राता विश्व विधाता	214
है कृपा तेरी मेरे सत्गुरु	215
हो जाये मेरी विनती	216
हर घड़ी हर पल सुमिरन तेरा	217
हर दम है तैयार तू	218
हम आये शरण तुम्हारी	219
हस्ती तो क्या है	220
हृदय में बस प्रकाश तुम्हारा	221
हिम्मत न हारिये	222
त्रिलोकपति दाता सुखधाम	223
आरती	224

❖❖

<u>प्रार्थना प्रदीप</u>

मनन योग्य कुछ विचार

प्रार्थना कैसी हो

प्रार्थना खूब लम्बी हो यह जरूरी नहीं। प्रार्थना के शब्द सुन्दर हों यह आवश्यक नहीं। भाषा अलंकार पूर्ण हो यह भी आवश्यक नहीं और भाव सुसंगत हो यह भी आवश्यक नहीं। भगवान् न प्रार्थना की लम्बाई देखते हैं न भाषा का सौन्दर्य देखते हैं, और न भावों की सुसंगति ही देखते हैं। भगवान् तो भावना के भूखे हैं। वह तो हृदय की निष्कपटता, सरलता तथा शुद्धता पर मुग्ध होते हैं।
'God hears no more than the heart speaks; and if the heart be dumb, God will certainly be deaf.'

अर्थात् भगवान् सिर्फ हृदय की सच्ची भावना के बिना निर्जिव प्रार्थना में हृदय की भाषा सुनते हैं। यदि हृदय गूँगा है तो भगवान् भी निश्चय ही बहरा होगा।
सुन्दर शब्दों से सजी प्रार्थना में भी हृदय हो शब्द न हों यह अच्छा है अपेक्षाकृत शब्द हों पर हृदय न हो।

'He prayeth best who loveth best.'

–Caleridge

जो सबसे अधिक प्रेम करता है वह सबसे उत्तम प्रभु की प्रार्थना करता है।

प्रार्थना की शक्ति

सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास युक्त प्रार्थना से हृदय में शान्ति की धारा तथा आत्मा में आनन्द की वृष्टि होती है। भगवान् की ओर झुका हुआ हृदय कुछ ही क्षणों में जिस आनन्द को अनुभव करता है वह सैकड़ों स्वादिष्ट भोजनों से प्राप्त नहीं हो सकता।

"In the morning, prayer is the key that opens to us the treasure of God's mercies and blessings; in the evening, it is the key that shuts us up under his protection and safeguard."

–H.W. Beecher

प्रभात में, प्रार्थना प्रभु की कृपा तथा आशिर्वादों के खजाने को खोलने की कुंजी है, सांयकाल में, प्रार्थना प्रभु की संरक्षा तथा सुरक्षा में बन्द होने की कुंजी है।

"Prayer is the wing where with the Soul flies to heaven and meditation the eye where-with wee see God."

–Anbrose

प्रार्थना वह पंख है जिससे आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ती है और ध्यान वह आंख है जिससे हम प्रभु का प्रत्यक्ष करते हैं।

"God dwells far off from us, but prayer brings him down to our earth, and links his power with our efforts."

–M. Gasparin

भगवान् हमसे दूर निवास करते हैं, परन्तु प्रार्थना उन्हें इस भूतल पर ले आती है, और उनकी शक्ति को हमारे प्रयत्नों के साथ संयुक्त कर देती है।

"If one draws near to God with praise and prayer even half a foot, God will go twenty times nearer to meet him."

–Arnold

यदि कोई स्तुति और प्रार्थना द्वारा एक हाथ भर भगवान् के समीप पहुंचता है, तो भगवान उस अपने भक्त से मिलने के लिये पचासों मील आगे बढ़ जाते हैं।

"Prayer is a virtue that prevaileth against all temptation."

प्रार्थना वह शक्ति है जो सब प्रलोभनों पर विजय पाती है।

"More things are wrought by prayer than the world dreams of."

–Tennyson

प्रार्थना में हमारी कल्पना से भी अधिक कार्य करने की शक्ति है।

हमारा कर्त्तव्य

सुन्दर सुन्दर वस्तुओं के लिये प्रभु की सेवा में प्रार्थना मात्र कर देना पर्याप्त नहीं है। प्रार्थना के पश्चात् हाथ पर हाथ धर कर जो प्रमाद में बैठा रहता है, वह कुछ पाता नहीं है। प्रार्थना तो कठोर पुरूषार्थ की भूमिका है।

स्तुति क्या हुई यदि उसका हमारे जीवन पर कोई प्रभाव न हुआ। हमने प्रभु को परमदानशील कहा और स्वयं कुछ भी दान न किया। उसे सत्य का आधार कहा और हमारे अपने जीवन में असत्य की ही प्रधानता बनी रही। अग्नि-देव को महान् कह कर प्रकाश और अपने में कोई महत्ता ही धारण न की। उस ज्योति स्वरूप का नाम तो लेते रहे पर स्वयं नाम मात्र को भी अन्धकार से बाहर न हुए। कथन और आचरण में इस प्रकार के पारस्परिक विरोध के रहते हमारी स्तुति को कौन सच्ची स्तुति कह सकता है। यदि किसी गुण का सचमुच हमारे हृदय में आदर है तो उसे हमें अपने जीवन में ढालना भी तो चाहिए। हम लाख कहते रहें कि हम प्रभु की पूजा करते हैं, परन्तु पूजा तो गुणों की ही होती है। किसी गुण की पूजा करने का प्रत्यक्ष तो यही है कि हम उसे अपने में धारण करें। स्तुति की सफलता इसी में है कि हम स्वयं अपनी स्तुति के पात्र बन जायें। प्रभु की जिस महिमा का गुणगान हम अपने स्त्रोतों में कर रहे हैं, उसी महिमा को धीरे-धीरे अपने आचार विचार में विकसित करते जाए। अन्त में वह समय तो आ जाए हम अपनी भक्ति के पूरे नही, तो अधूरे भाजन तो बन ही जायें।"

-पं० चमूपति जी

"Prayer is the girding on the armour for battle; the pilgrims preparation for his journey. It must be supplemented by action or it amounts to nothing."

–A. Phelps.

प्रार्थना युद्ध के लिये कवच से सुसज्जित होना है, और दीर्ध यात्रा के लिये पथिक की यह प्रारम्भिक तैयारी। प्रार्थना पुरूषार्थ से पूर्ण की जानी चाहिए, अन्यथा यह फल शून्य है।

"By what we require of God we see what he requires of us."

–Jerney Taylor.

जो कुछ हम परमात्मा से मांगते हैं उससे हमें यह मालूम पड़ता है कि परमात्मा हमसे क्या चाहता है।

"If you would have God hear you when your pray, you must hear him when he speaks. He stops his ears against the prayers of those who stop their ears against his laws."

–T. Brooks

यदि तुम चाहते हो कि परमात्मा सुने जब तुम प्रार्थना करते हो, तो तुम्हें परमात्मा को सुनना चाहिए जब वह बोलता है। उस के नियम के उल्लंघन करने वालों की प्रार्थना को वह भी अनसुनी कर देता है।

"Pray to God at the beginning of all the works, so that thou may bring them all to a good ending."

–Xenaphon

शुभ समाप्ति के लिए प्रत्येक कार्य से पहले प्रार्थना करनी चाहिए।

"Never think that God's delay are God's denials— True prayer always receives what it asks or something better."

—Tryon Edward

कभी न सोचो कि प्रभु का विलम्ब उसकी अस्वीकृति है। सच्ची प्रार्थना से जो कुछ मांगता है वह अथवा उससे भी अधिक शुभ वस्तु मिलती है।

प्रार्थना के अनुकूल जीवन ढालने का प्रयास करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

सान् पैडरो के निम्न उदाहरण से इस भूमिका को समाप्त करना उचित होगा।

If you would endure with patience the adverties and miseries of this life

Be a man of prayer.

If you would acquire strength and courage to vanquish the temptations of the enemy

Be a man of prayer.

If you would live with a gay heart and pass lightly along the road of penance and sacrifice

Be a man of prayer.

If you would drive away vain thought, and cares which worry the soul like flies

Be a man of prayer.

If you would nourish the soul with the sap of devotion and have it always filled with good thoughts and desires

Be a man of prayer.

Finally if you would uproot from your soul all vices and plant virtues in their place

Be a man of prayer.

For herein does a man receives the affection and grace of the Holy spirit, who teaches all things.

"यदि तुम जीवन के सब संकटों और मुसीबतों को धैर्य पूर्वक सहन करना चाहते हो, तो प्रार्थना करने वाले बनो।"

यदि तुम दुश्मन के प्रलोभनों पर विजय पाने की शक्ति तथा साहस प्राप्त करना चाहते हो, तो प्रार्थना करने वाले बनो।

यदि तुम प्रसन्न हृदय वाले रहना चाहते हो, और तपस्या व बलिदान की राह पर हँसते-हँसते चलना चाहते हो, तो प्रार्थना करने वाले बनो।

यदि तुम मक्खी और मच्छरों की तरह आत्मा को सताने वाले व्यर्थ विचारों और चिन्ताओं से मुक्त होना चाहते हो, तो प्रार्थना करने वाले बनो।

यदि तुम भक्ति रस से आत्मा को पुष्ट करना चाहते हो, सदा शुभ विचारों तथा कामनाओं से आपूर्ण रखना चाहते हो, तो प्रार्थना किया करो।

अन्त में यदि तुम अपनी अन्तरात्मा से सब पापों को जड़ मूल से उखाड़ फेंकना चाहते हो और उनके स्थान पर पुण्यों का आरोपण करना चाहते हो तो प्रार्थना किया करो। क्योंकि प्रार्थना द्वारा ही मनुष्य सनातन गुरू पवित्र प्रभु के स्नेह प्रसाद तथा कृपा को प्राप्त करता है।

।।इतिशम्।।

प्रभु स्तुति

ओ३म् तद् विष्णु परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव-चक्षुराततम्।

नमः शम्भवाय च
मयो भवाय च
नमः शंकराय च
मयस्कराय च
नमः शिवाय च
शिवतराय च

सदा सदा के साथी मेरे
तेरी जय जयकार करूं
हर पल सिमरूं नाम तिहारा
तेरा ही गुणगान करूं
तप संयम का जीवन राखूं
क्षमा का श्रृंगार करूं।
तेरी जय जयकार करूं
मैं भव सागर से पार तरूं।।

अन्तर्यामी नाथ तुम, जीवन के आधार।
जो तुम छोड़ो बांह तो कौन लगाये पार।।

प्रार्थना

हे सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमेश्वर! आप अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणीमात्र की, सम्पूर्ण कामनाओं को, तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो शुभ तथा हितकर है उसे तुम बिन मांगे हमारी झोली में, डालते हो। तुम्हारे आंचल में, शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरणशीतल छाया में परम तृप्ति है। शाश्वत शान्ति की उपलब्धि है अभिलाषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो हम तुम्हारी अमृत तथा प्रेममयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्तःकरण को मलीन बनाने वाली, स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की, आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम आपको पुकारते और आपका आंचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हममें सात्विक वृत्तियां जागृत हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएं हमारी सम्पत्ति हों । हमारे शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो। मन सूक्ष्म हो, जीवात्मा पवित्र तथा सुन्दर हो। तुम्हारे स्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा रहे। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो। विद्या और ज्ञान से परिपूर्ण हो।

हे प्रभो। अपने आशीर्वाद की वर्षा करो दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन समर्पित हो। हमें अपनी सेवा में लेकर कृतार्थ करो।

ओ३म शान्तिः शान्ति शान्ति ओ३म

जीवन संगीत

भारतीय संस्कृति मर्यादा, शील, सदाचार और उल्लास की संस्कृति है। इसीलिए भारत का जनजीवन धार्मिक पर्वों और सांस्कृतिक उल्लासों से प्रभावित दिखाई पड़ता है। जीवन जीते-जीते कुछ न कुछ निराशा, विषाद, पीड़ा जब अनुभव होने लगती है तब हमें आवश्यकता होती है आशा, विश्वास, सुख, चैन और मस्ती भरी जिन्दगी की। एकाएक बीच-बीच में ही कोई पर्व त्यौहार आ जाता है और हम अपनी तनाव भरी जिन्दगी में फिर उल्लास अनुभव करने लगते हैं। इसलिए जब अमावस्या की गहन अंधियारी रात्रि में दीपावली के दीप जलते हैं तो मानो निराशा की गहरी रात्रि में आशा और उल्लास के करोड़ों दीपक जल गये हैं और कह रहे हैं कि न घबरा अन्धेरे से। हर जीवन में अंधियारी भी आती है पर अन्धेरे के बाद सवेरा होता ही है।

जब आशा के अंकुर उगने लगे नयी बहार, नयी ऋतु का आगमन हुआ। प्रकृति के सात रंग धरती पर बिखरने लगे, धरती का कण-कण खिलने लगा हो तो होली की उमंग अनेक रंगों को लेकर ढोल-बाजों के साथ वातावरण में संगीत उत्पन्न करने लगी। फिर एकाएक जीवन, संगीत और रस से भावविभोर हो गया। सभी पर्वों का धर्म से, जीवन से, मानव के उत्थान से गहन सम्बन्ध है। यह सत्य है कि जीवन का संगीत, लय, तान, स्वर के सही आरोह अवरोह में आबद्ध रहे तो ही आनन्द का संचार होता है।

जीवन को, अपनी आयु को और समय को व्यर्थ काटना, गवाना यह जीवन का आदर्श नहीं। आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करना यह जीवन का आदर्श हैं। कवि के शब्दों में-

बहुत से लोग बस अपने दुःखों के गीत गाते हैं
दीवाली हो कि होली हो, सदा मातम मनाते हैं।
मगर दुनियां उन्हीं की रागनी पर झूमती हरदम
जो जलती चिता में भी बैठ कर वीणा बजाते हैं।।
दुःख हो या सुख, हानि हो या लाभ
जीत हो या हार अपने जीवन को
मधुर संगीत से, आनन्द और उत्साह से
भरे रखना जीवन संगीत है

जब कभी आप बहुत प्रसन्न होते हैं तब आप गुनगुनाते हैं, गाते हैं। जब आप जल से अपने शरीर को भिगोते हैं स्नान करतें समय, तब भी आप गाते हैं जब आप अकेले जा रहे जों और अन्धेरे से डर रहे हों तो भी आप गाते हैं या गुनगुनाते हैं। जब आप पूर्ण निश्चिन्त होते हैं तब भी गुनगुनाते हैं। आप के जीवन के यादगार पल वही थे जब आप निश्चित प्रसन्न थे और ढोल बाजें के मधुर संगीत में आनन्द मग्न थे।

गीत संगीत आपके मन को बांधता है और तन को पुलकित करता है परन्तु यह गीत संगीत भी यदि भोग विलास, शृंगार से जुड़ जाये तो फिर यह भी मानव के पतन का कारण बनता है न कि उत्थान का। इसलिए जीवन को भक्ति संगीत से जोड़िये।

हमारे पूर्वजों ने जहाँ कहीं सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखा, चाहे वह पर्वत या झरना हो, या हिमगिरी की सुन्दर उपत्यका हो या पर्वत से बहकर नीचे आती गंगा हो या नदियों का संगम हो या सागरों का एक स्थान पर सम्मिलन हो, हमारे वंशजों ने उस स्थान को धर्म से जोड़ उसे तीर्थ का स्थान दिया। जहां प्रकृति का संगीत है, चारों ओर शान्ति है, और प्रभु की रचना का सौन्दर्य है वहां बैठकर मन तरंगित होता है उसे तीर्थ का नाम दिया गया। विदेशियों ने अपने देश में जहां प्राकृतिक मनोरम दृश्य देखे उसे भोग विलास, रमण और विहार का स्थल (पिकनिक स्थल) बना दिया। हमारी संस्कृति मर्यादा और शील सदाचार को आगे रख कर चलती है। जिससे ऐसे प्राकृतिक दृश्यों के मनोहारी सौन्दर्य में भी अपने प्रभु की याद आती है। वहां जो संगीत जन्म लेता है वह भजन का रूप धारण करता है। अपने प्रभु को पुकारने का उसकी प्रार्थना उपासना करने का, एक कारगर उपाय भजन है। भजनों के द्वारा उस परम प्यारे की महिमा का गान करें। इस बात को ध्यान में रखकर प्रभु भक्ति के भजनों का एक संग्रह चौदह वर्ष पूर्व किया था। जिसकी लगातार मांग प्रभु प्रेमी करते रहे हैं।

यह संस्करण आपको भेंट करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। प्रभु करे गीतांजली के भजनों के पठन व सिमरण से हर व्यक्ति के जीवन में नयी चेतना और आनन्द उमंगों का संचार हो। शुभकामनाओं के साथ।

-आचार्य सुधांशु

नमस्कार भगवान् तुम्हें

नमस्कार भगवान् तुम्हें भक्तों का बारंबार हो ।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो ।।

तुम कण-कण में रमे हुए हो, तुझमें जगत् समाया है ।
तिनका हो चाहे पर्वत हो, सभी तुम्हारी माया है ।।
तुम दुनियाँ के हर प्राणी के, जीवन के आधार हो ।।१।।

सबके सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जगत् की माता हो ।
भाई बन्धु रक्षक, सखा तुम, सहायक रक्षक दाता हो ।।
चींटी से लेकर हाथी तक, सब के सृजन हार हो ।।२।।

ऋषि मुनि और योगी जन सब, तुम ही से वर पाते हैं ।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे, दर पे शीश झुकाते हैं ।।
परम कृपालु परम दयालु, करुणा के आधार हो ।।३।।

जीवन के तूफानों में प्रभु, तुम ही एक सहारा हो ।
डगमग डगमग नैय्या डोले, तुम ही नाथ किनारा हो ।।
तुम खेवट हो इस नैय्या के और तुम ही पतवार हो ।।४।।

❖❖

"अहंकार करने से ईश्वर की कृपा खत्म हो जाती है"।
-आचार्य सुधाँशु

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ
तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूँ।

ये माना के दाता हो तुम कुल जहाँ के,
मगर कैसे झोली फैलाऊं मैं आके।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है,
उसी को निभाने के काबिल नहीं हूँ।।

तुम्हीं ने अता की, मुझे ज़िन्दगानी,
तेरी महिमा फिर भी मैंने न जानी।
कर्ज़दार तेरी दया का हूँ इतना,
ये कर्जा चुकाने के काबिल नहीं हूँ।।

ज़माने की चाहत में खुद को मिटाया,
तेरा नाम हरगिज़ जुबां पे न आया।
गुनहगार हूँ मैं सज़ावार हूँ मैं
तुम्हें मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।

यही मांगता हूँ मैं सिर को झुका लूं,
तेरा दीद इस बार जी भर के पा लूं।।
सिवा दिल के टुकड़े के ऐ मेरे दाता,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।।

❖❖

मेरा नाथ तू है

मेरा नाथ तू है मेरा नाथ तू है
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है ।।

चला जा रहा हूँ मैं राह पे तुम्हारी
राहों में आये जो तूफान भारी
थामे हुए जो मेरा हाथ तू है,
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।
मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है ।।१।।

मेरा इष्ट तू है, मैं तेरा पुजारी,
तेरा खेल मैं हूँ तू मेरा खिलाड़ी ।
मेरी ज़िन्दगी की हर बात तू है,
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।
मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है ।।२।।

तेरा दास हूँ मैं तेरे गीत गाऊँ,
तुझे भूल के भी न कभी भूल जाऊँ ।
तू ही दीन बन्धु पितु मात तू है,
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।
मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है ।।३।।

सेम्बल का लाल लाल सुमन मिले हैं कहाँ से?
पीले-पीले पुष्प किसने दिये हैं बबूलों को ।
तूली तूलिकाएँ ले-ले कैसे सेजता है कौन ।
सुललित लतिका के कलित दुकूलों को ।।
"हरिऔध" किसके खिलाये ये कलियाँ खिलीं?
दे दे दान मंजुल मिलिन्द अनुकूलों को ।
किस से रंगीली साड़ियां ये तितली को मिलीं?
कौन रंगरेज रंगता है इन फूलों को ।।

भगवान् मेरी नैया

भगवान् मेरी नैया उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना ।।

दल बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आके ।
तुम देखते न रहना, झट आके बचा लेना ।।

सम्भव है झंझटों में, मैं तुम को भूल जाऊँ ।
पर नाथ दया करके, मुझ को न भुला देना ।।

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक ।
ये बात अगर सच है, सच करके दिखा लेना ।।

❖❖

तेरे नाम का सिमरन

तेरे नाम का सिमरन करके, मेरे मन में सुख भर आया
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।।

दुनियाँ की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा
ना पाकर अपना कोई, जब मैंने तुम्हें पुकारा
हे नाथ! मेरे सिर ऊपर तूने अमृत बरसाया।।१।।

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए
जितनी भी बार गिरा हूँ तूने पग पग मुझे उठाया।।२।।

भवसागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नैय्या
तट छूना भी मुश्किल था नहीं दीखे कोई खिवैया
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारे लाया।।३।।

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रूप तुम्हीं ने धारा
तेरी शरण में होके दाता, तेरा तुम ही को चढ़ाया।।४।।

❖❖

विलासी ज़िन्दगी नीचे
गिराती जायेगी जितना सहनशक्ति को
बढ़ाओगे, उतने महान हो जाओगे।

दाता तेरे सिमरन का

दाता तेरे सिमरन का वरदान जो मिल जाये,
मुरझाई कली दिल की इक आन में खिल जाये।

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है,
इक बूंद जो मिल जाये, तकदीर बदल जाये।।

ये मन बड़ा चंचल है, चिन्तन में नहीं लगता।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाए।।

हे नाथ मेरे दिल की, बस इतनी तमन्ना है।
पापों से बचा लेना, पाँव न फिसल जाए।।

देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो।
जीवन ये सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए।।

ए! मानव तू दिल से, प्रभु नाम का सिमरन कर।
दोषों भरे जीवन का काँटा ही बदल जाए।।

❖❖

जिसे मान सम्मान मिलने पर अकड़ना नहीं आता और अनादर मिलने पर जो दुःखी नहीं होता, जो भला करके प्रसन्न होता है, जिसके सद्गुण–उदारता, सरलता और गम्भीरता है, जिसके स्वभाव में बदला लेना और बैर रखना नहीं है, ऐसे व्यक्ति का हृदय भगवान का मन्दिर है।

–आचार्य सुधाँशु

हम सब मिलके आये दाता

हम सब मिलके आये दाता तेरे दरबार ।
भरदे झोली सब की तेरे पूर्ण भण्डार ।।

होवे जब सन्ध्या काल, निर्मल होके तत्काल
अपना मस्तक झुका के, करके तेरा ख्याल
तेरे दर पे आके बैठे सारा परिवार ।।

लेके दिल में फरियाद, करते हम तुम को याद
जब हों मुश्किल की घड़ियां मांगें तुम से इमदाद
सब से बढ़के ऊँचा जग में तेरा आधार ।।

चाहे दिन हों विपरीत, होवे तुमसे ही प्रीत
सच्ची श्रद्धा से गावें, तेरी भक्ति के गीत
होवे सब का प्रभु जी, तेरे चरणों में प्यार ।।

तू है सब जग का वाली, करता सब की रखवाली
हम हैं रंग रंग के पौधे, तुम हो हम सब के माली
"पथिक" बगीचा है, ये तेरा सुदंर संसार ।।

❖❖

"आसक्ति और मोह का परित्याग ही भक्ति मन्दिर का द्वार है। जब तक व्यक्ति मोह का परित्याग नहीं करता तब तक भक्ति का पाठ नहीं सीखता ।"

–आचार्य सुधांशु

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।

क्या साधु, क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी।
अन्तर्यामी अंदर बैठा, सब का हिसाब लगाता।।१।।

बड़े-बड़े कानून प्रभु के, बड़ी-बड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं मिलती, मिले न पाई ज्यादा।
इसीलिए वह दुनियाँ का है, जगत्पति कहलाता।।२।।

चले न उस के आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी,
उस की लेन-देन की बंदे, रीत बड़ी है बाकी।
समझदार तो चुप है रहता, मूरख शोर मचाता।।३।।

उजली करनी कर ले बन्दे, कर्म न करीयो काला,
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
उसकी तेज नज़र से बंदे, कोई नहीं बच पाता।।४।।

❖❖

"दुनियाँ की आँखों में धूल झोंककर यदि बच भी गए तो सब कर्मों को देखने वाले नियन्ता से बचकर कहाँ जाओगे।"

-आचार्य सुधाँशु

मेरा उद्देश्य हो प्रभु

मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को तेरी पालना।
कर कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना।।
मानव के नाते से पिता, जाऊँ कभी जो भूल मैं।
मेरी विनय है आप से, बनकर सखा संभालना।।
जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, श्रद्धा व प्रेम से करूँ।
आयें अभद्र भाव जो, उनको सदा ही टालना।।
रक्षा मेरी जो तुम करो, रक्षा तेरी में मैं रहूं।
अपने गुणों के साँचे में, जीवन को मेरे ढालना।।
मृत्यु का मुझ को भय न हो, मांगू यही वरदान मैं।
मेधा बुद्धि की भिक्षा को, झोली में मेरी डालना।।

❖❖

सुमिरन कर ले मेरे मना,
तेरी बीती उमर प्रभु नाम बिना।।
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेह बिन।
नदी नीर बिन, धेनु क्षीर बिन, वाणी सत्य बिना,
जैसे तरूवर फल बिन सूना, वैसे ही प्राणी नाम बिना।
हस्ती दन्त बिन, पक्षी पंख बिन, नारी पुरूष बिना,
जैसे पुत्र पिता बिन हीना, वैसे ही प्राणी प्रभु नाम बिना।
काम, क्रोध, मद, लोभ, विरोध, त्यागो सन्त जना,
नानक शाह कहें सुन सन्तो, प्रभु बिन कोई नहीं

मानव तू अगर चाहे

मानव तू अगर चाहे दुनियाँ को झुका देना।
बस ईश्वर के दर पे सर अपना झुका देना।।

राजी हो प्रभु जिसमें वो काम सही होगा।
भगवान् जो चाहेगा दुनियाँ में वही होगा।।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना।।१।।

रक्षक है अनाथों का दुनियाँ का सहारा है।
भव पार किया उसने जिसने भी पुकारा है।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना।।२।।

धरती और सागर के रत्नों को जो पाना हो।
आकाश में उड़ना हो, पाताल में जाना हो।।
डोरी परमेश्वर को पहले पकड़ा देना।।३।।

चाहेंगी सदा तुझ को खुशियाँ और आशाएँ।
चूमेंगी चरण तेरे सब ओर सफलताएँ।।
जीवन को मानव राहों पे लगा देना।।४।।

❖❖

साथ ले लो पिता

साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊँगा।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा।।
राहें चिकनी खड़ी और पथरीली हैं
कांटो झाड़ी भरी और जहरीली हैं
दो सहारा कि इनमें मैं फँस जाऊँगा।।
वरना सम्भव...

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर
मुझ को उलझा डुबाने चली हर प्रहर
दे दो पतवार वरना न तर पाऊँगा।।
वरना सम्भव...

दुनिया इस ओर कहती है आ मौज ले
पर उधर धर्म कहता है दुःख मोल ले
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊंगा।।
वरना सम्भव...

सत्य कहता हूँ भूला भी मैं हूँ तुम्हें
पायी दुनिया मगर इक न पाया तुम्हें
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा।।
वरना सम्भव...

❖❖

वह व्यक्ति सज्जन है जो अपने धन, सम्पत्ति का दुरुपयोग नहीं करता और कुल का अहंकार नहीं करता परन्तु सन्मार्ग में इनका सदुपयोग करता है।

–आचार्य सुधाँशु

उस प्रभु की है कृपा बड़ी

उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।
घण्टी बज जाये कब कूच की, मौत हरदम सिराने खड़ी ।।

इन्हीं शुभ कर्मों का फल है ये, तुझे मानव का चोला मिला,
जो आया है जायेगा वो, बन्द होगा न ये सिलसिला ।
वेद की कहती इक-इक कड़ी ।।१।।

इस जवानी पे इतरा न तू, बातों-बातों में मुक जायेगी,
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा, और कमर तेरी झुक जायेगी।
टेक कर के चलेगा छड़ी ।।२।।

जो करना है ले आज कर, कुछ खबर प्यारे कल की नहीं,
मानव चोले को कर ले सफल, ढील दे इसमें पल की नहीं ।
टूट श्वासों की जाये लड़ी ।।३।।

❖❖

देह धरे का दण्ड है, सब कोऊ को होय ।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय ।।

तेरी दया का दान मिले

तेरी दया का दान मिले, तेरा सहारा मिल जाये ।
भवसागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाये ।।

जीवन की टेढ़ी राहों में, चलकर न तुझको जान सका ।
आशाओं की झोली भर जाये, इक तेरा द्वारा मिल जाए ।।

मैं दीन हूँ दीनदयाल है तू, अलपज्ञ हूँ मैं, सर्वज्ञ है तू ।
अज्ञान का पर्दा हट जाये, तेरा उजियारा मिल जाये ।।

इस दुर्लभ अवसर को पाकर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका ।
अब दिल की तड़प ये कहती है, कहीं प्रीतम प्यारा मिल जाये ।।

मैं नर हूं, तू नारायण है, इतना तो भेद ज़रूरी है ।
यदि शरण तेरी मैं पा न सका, नर तन तो दुबारा मिल जाये ।।

❖❖

पतिव्रता मैली भली, काली भली कुरूप ।
पतिव्रता के रूप पर, वाँरू कोटि सरूप ।।

आनन्द स्रोत बह रहा

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है ।
अचरज है जल में रहके मछली को प्यास है ।।

फूलों में ज्यों सुवांस, ईख में मिठास है ।।
भगवान् का त्यों विश्व के कण-कण में वास है ।।

ज्ञान चक्षु खोल के, तू देख तो सही ।
जिसको तू ढूढँता है वो तेरे पास है ।।

कुछ तो समय निकाल, आत्मशुद्धि के लिए ।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ।।

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है ।
अचरज है जल में रहके मछली को प्यास है ।।

आनन्द मोक्ष को न, पा सकेगा तब तलक ।
कि जब तलक 'प्रकाश' तू इन्द्रियों का दास है ।।

❖❖

तुम ही हो

सूर्य सोम में, वायु व्योम में, सलिल धार धरणी में तुम ।
सुत कलत्र में पुण्य पत्र में, स्वर्ण, अश्म, अरणी में तुम ।।
शत्रु मित्र में, सुख संघर्ष में, अनल अतल सागर में तुम ।
सब में सभी दिशा में छाये केवल हे सुखसागर तुम ।।

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता
जीवन में लगे ठोकर न कहीं ।
जाने अनजाने भी मुझ से
नुकसान किसी का हो न कहीं ।।
उपकार सदा करता जाऊँ
दुनिया अपकार भले की करे ।
बदनामी न हो जग में मेरी,
कोई नाम भले ही दे न कहीं ।।१।।
जो तेरा बनकर रहता है,
कांटो में फूल सा खिलता है ।
कितने ही काटे पाँव चुभें,
पर फूल भी हों काटे न कहीं ।।२।।
तू ही बस मेरा ऐसा है,
दुःख में भी साथ नहीं तजता ।
दुनियाँ मुझे प्यार करे न करे,
खोऊं तेरा भी न प्यार कहीं ।।३।।
मन हो मधुपूर्ण कलश मेरा
आँखों से ज्योति छलकती हो ।
तुम से मधु ऐसा पीने को
जागत ही रहूँ सोऊं न कहीं ।।४।।
मैं क्या हूं, राह मेरी क्या है,
यह सत्य सदा मैं समझ सकूँ
इस राह पे चलते-चलते कभी,
मेरे पाँव थकें न, रुकें न कहीं ।।५।।
मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता।

बातों ही बातों में

बातों ही बातों में बीती रे उमरिया
तुझे होश न आया, यूँ ही वक्त गंवाया
किया कभी न भजन ओ मेरे मन

बाल अवस्था यूँ ही गंवायी, की बहुत नादानी
होश रहा तुझे कुछ भी नहीं, जब आयी तुझपे जवानी
वृद्ध भयो जब सूझे कछु ना,
यूँ ही गया यूं मन बचपन ओ मेरे मन...

मानव तन मुश्किल से मिला है सब ने ये ही बताया
पर तूने अनमोल खज़ाना, कौड़ी समझ लुटाया
जान बूझकर अपने हाथों, यूँ न गंवा तू अपना धन,
ओ मेरे मन...

मानव तन जिस ने दिया तुझको उसको काहे भुलाया
घट घट में जो रमा हुआ है दिल में नाहीं बसाया
मन मंदिर में उस प्रियतम को,
बिठला कर ले मूंद नयन, ओ मेरे मन...

❖❖

अपने कानों को सत्संग सुनने की शक्ति दो, प्रशंसा सुनकर कानों को न कमज़ोर करना और न अपने मन को।

जगत् मे चिन्ता मिटी उन्हीं की

जगत् मे चिन्ता मिटी उन्हीं की जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
वही हमेशा हरे भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

न पाया राजा वज़ीर बनकर,
न पाया तुझ को फकीर बनकर
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे
जो तेरे चरणों में...

किसी ने जग में करी भलाई,
किसी ने जग में करी बुराई ।
वही सुमारग पे चल पड़े हैं,
जो तेरे चरणों में...

प्रभु जी विनती सुनो हमारी,
बनाओ बिगड़ी दशा हमारी ।
निराशितों के हो आसरा तुम,
जो तेरे चरणों में...

न पाया तुझ को किसी ने बल से,
न पाया तुझ को किसी ने छल से ।
वही परमपद को पा गये हैं,
जो तेरे चरणों में...

❖❖

डूबतों को बचा लेने वाले

डूबतों को बचा लेने वाले।
मेरी नैया है तेरे हवाले।

लाख अपनों को मैंने पुकारा
सब के सब कर गए हैं किनारा।
और कोई न देता दिखाई
सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।

कौन तुझ बिन भँवर से निकाले। मेरी नैय्या है तेरे..

जिस समय तू बचाने पे आए।
आग में भी बचा कर दिखाए।
जिस पे तेरी दया दृष्टि होवे।
कैसे उस पे कहीं आँच आए।

आँधियों में भी तू ही सम्भाले। मेरी नैय्या है तेरे..

पृथ्वी सागर व पर्वत बनाए।
तूने धरती पे दरिया बहाए।
चाँद सूरज करोड़ों सितारे।
फूल आकाश में भी खिलाए।

तेरे सब काम जग से निराले। मेरी नैय्या है तेरे..

बिन तेरे चैन मिलता नहीं है
फूल आशा का खिलता नहीं है
तेरी मरज़ी बिना इस जहां में।
एक पत्ता भी हिलता नहीं है।

तेरे बस में अन्धेरे उजाले। मेरी नैय्या है तेरे..

❖❖

हे ज्ञान रूप भगवन्

हे ज्ञान रूप भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो
करूणा के चार छींटे करुणानिधान दे दो ।

सुलझा सकें हम अपनी जीवन की उलझनों को
प्रज्ञा, ऋतम्भरा, बुद्धि का दान दे दो ।

दाता तुम्हारे दर पर किस चीज़ की कमी है
चाहो तो निर्धनों को दौलत की खान दे दो ।

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें जो
इन बाजुओं में शक्ति, हे शक्तिमान दे दो ।

हे ईश तुम हो सबकी बिगड़ी बनाने वाले
जीवन सफल बने ये, थोड़ा सा ज्ञान दे दो ।

डर है प्रभु तुम्हारा रास्ता न भूल जाएं
भक्तों की मण्डली में हमको भी स्थान दे दो ।

❖❖

इन्सान जहाँ जहाँ बेबस है वहाँ वहाँ वो दुःखी है ।

-आचार्य सुधांशु

ईश्वर तुम्हीं दया करो

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है

माता तू ही पिता तू ही, बन्धु तू ही सखा तू ही
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है

जग को रचाने वाला तू, दुःखड़े मिटाने वाला तू
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है

तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन
तेरे ही आते हम शरण, तुम बिन हमारा कौन है

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है

पुत्र हैं हम सभी तेरे, तू है पिता परमात्मा
श्रेष्ठ मार्ग पर चला, तुम बिन हमारा कौन है

❖❖

"अगर सही राह मिली है तो फिर आगे बढ़ना। बार-बार भटकने से, जगह-जगह कुआँ खोदोगे तो पानी नहीं मिलेगा। एक जगह कुआँ खोदोगे तो पानी अवश्य मिल जायेगा।"

-आचार्य सुधांशु

उठ नाम सिमर मत सोये रहो

उठ नाम सिमर मत सोये रहो
मन अन्त समय पछतायेगा
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया
फिर हाथ कछु न आएगा।।

हास विलास में बीती उमरिया
बहुत गयी रही थोड़ी उमरिया
जल गया दीपक बुझ गयी बाती
कोई न राह दिखायेगा।।

पाप बोझ से भर ली गठरिया
जाना रे तुझको दूर नगरिया
जैसा करेगा वैसा भरेगा
कोई न साथ निभाएगा।।

प्रभु नाम धन भर लो खज़ाना
रहना नहीं ये देश बेगाना
प्रभु के चाकर होकर चलिए
प्रभु के सेवक होकर चलिए
भव सागर तर जायेगा।।

❖❖

भगवान का भजन ही सच्चा जीवन संगीत है।

शरण में आये हैं हम तुम्हारी

शरण में आये हैं हम तुम्हारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

न हम में बल है, न हम में शक्ति,
न हम में साधन, न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

जो तुम हो स्वामी, तो हम हैं सेवक,
जो तुम हो पालक, तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

बुरे जो हैं हम, तो हैं तुम्हारे,
भले जो हैं हम, तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर भी हैं दुखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रदान कर दो महान शक्ति,
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे तापहारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

सुना है हम अंश है तुम्हारे,
तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

जागो रे जिन जागना

जागो रे जिन जागना, अब जागन की बार
फिर क्या जागे नानका, जब सोवे पांव पसार।।

गुण गोविन्द गायो नहीं, जनम अकारथ कीन्ह
कहे नानक हरिभजमना जेहि विधि जग को मीन।।

जो प्राणी ममता तजै, लोभ, मोह, अहंकार
कहे नानक आपन तरे, औरन लेत उबार।।

संग सखा सब तज गये, कोई न निभियो साथ
कहे नानक इस विपद में, एक-एक रघुनाथ।।

सुख में बहुसंगी भये, दुःख में संग न कोय
कहे नानक हरिभजमना, अन्त सहाइ होय।।

झूठे मान काहे करे, जग सुपना ज्यों जान
इनमें कछु तेरो नहीं, नानक कहयो बखान।।

❖❖

चार का परिचय चार अवस्थाओं में मिलता है :
दरिद्रता में मित्र का, निर्धनता में स्त्री का,
रण में शूरवीर का और
मुसीबत में बन्धु बान्धवों का।

इक झोली में फूल भरे हैं

इक झोली में फूल भरे हैं
इक झोली में कांटे रे,
कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ भी नहीं
ये तो बांटने वाला बाँटे रे,
कोई कारण होगा...
पहले बनती हैं तकदीरें
फिर बनते हैं शरीर
ये प्रभु की है कारीगरी
तू क्यों है गंभीर।।
अरे कोई कारण होगा...
नाग भी डस ले तो मिल जाये,
किसी को जीवन दान।
चींटी से भी मिट सकता है,
किसी का नामो निशान।।
अरे कोई कारण होगा...
धन का बिस्तर मिल जाये
पर नींद को तरसे नैन।
काँटों पर भी सोकर आये
किसी के मन को चैन।।
अरे कोई कारण होगा...
सागर से भी बुझ सकती नहीं
कभी किसी की प्यास
कभी एक ही बूँद से हो जाती पूर्ण आस।
अरे कोई कारण होगा...

आये तेरे द्वार नमस्कार

आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार
सब जग की आधार; नमस्कार नमस्कार
मंगलमयी मां हम आये तेरे द्वार
आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार

सूरज और चाँद में तेरा ही उजाला है
तूने पहन रखी है सितारों की माला है
सब जग की आधार, नमस्कार नमस्कार
आये तेरे द्वार नमस्कार

पर्वतों की चोटियों को बादल हैं चूमते
पृथ्वी सूर्य, चाँद-सितारे गा रहे हैं झूमते
नियम के अनुसार, नमस्कार नमस्कार
आये तेरे द्वार नमस्कार

कोयल की ये कूह कूह सब के मन को भा रही
शीतल मन्द पवन तेरा, गीत मधुर गा रही
जपत रही सौ बार, नमस्कार नमस्कार
आये तेरे द्वार नमस्कार

मानुष तन को देखो कितना सुन्दर बनाया है
मन, बुद्धि और इन्द्रियों को इसने सजाया है
अष्टचक्र नौ द्वार, नमस्कार नमस्कार
आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार

गाये जा गाये जा

गाये जा, गाये जा, भगवान की महिमा गाये जा।
सुबह शाम इस मन मंदिर में झाड़ू रोज़ लगाये जा।।

तरह-तरह के खेल हैं इसमें, दुनियां एक तमाशा है।
कहीं खुशी है कहीं गमी है आशा कहीं निराशा है।।
वो चाहे हँसाये, चाहे रुलाए, अपना फर्ज़ निभाये जा।

चिन्ता और चिता इस जग में दोनों समान कहाती हैं।
इक ज़िन्दे को इक मुर्दे को, दोनों समान जलाती हैं।
जो दु:ख को दिखाये वही दुखड़े मिटाये,
चिन्ता दूर भगाये जा, गाये जा, भगवान की महिमा ....

कौन हमेशा रहा जगत् में, किसका यहाँ ठिकाना है
बाँध ले अपना बिस्तर बाबा, ये तो देश बेगाना है,
ये जग है सराय, कोई आये कोई जाये
'पथिक' यही समझाये जा, गाये जा, भगवान की महिमा ....

गाये जा, गाये जा, भगवान की महिमा गाये जा।

❖❖

परमात्मा एक है।
उसको अनेक लोग अनेक भावों से भजते हैं।
संसार में ईश्वर के सिवा दूसरी कोई भी
सार वस्तु नहीं है।

ईश्वर ज़ो कुछ करता है

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है

जब से दुनियां बनी है तब से रोज़ बदलती है
जो शै आज यहां है कल वो आगे चलती है
देख के अदला बदली तू आहें क्यों भरता है
मानव तू परिवर्तन से...

दुःख सुख आते जाते रहते सब के जीवन में
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है
मानव तू परिवर्तन से...

कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा
जल में कमल खिलेगा फिर से वो मुस्काएगा
देता है जो कष्ट वही, कष्टों को हरता है
मानव तू परिवर्तन से...

वो दाना ही फलता है जो खाक में मिल जाए
सहे राह के कांटे जो मंज़िल अपनी पाए
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है
मानव तू परिवर्तन से...

❖❖

प्रभु को ना याद किया

प्रभु को न याद किया, जीवन बरबाद किया
हाए रे बन्दे, ये क्या किया, तूने ये क्या किया

भँवरे की भाँति तूने, हर गुलसे प्यार किया
एक फूल चंपा का था, उसके न पास गया
गर उसके पास जाता, आनन्द प्रभु को पाता
अन्त में ये न पछताता
हाए रे बन्दे ये क्या किया, तूने ये क्या किया

सुंदर सा फूल प्यारे, जिसने बनाया तूझे
उसके न पास गया, ले गई माया तुझे
गर उसके पास जाता, आनन्द प्रभु को पाता
अन्त में ये न पछताता
हाए रे बन्दे, प्रभु को न याद किया

❖❖

किसी के काम जो आये

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है
कभी सुख है कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है
जो मुश्किल में न घबराये उसे इन्सान कहते हैं।।

ये दुनिया एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर
कोई हँस हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रो कर
जो गिर कर फिर संभल जाये उसे इन्सान कहते हैं।

अगर गलती रुलाती है, तो ये राह भी दिखाती है
बशर गलती का पुतला है, ये अक्सर हो ही जाती है
जो गलती करके पछताये उसे इन्सान कहते हैं।

अकेले ही जो खा-खा कर, सदा गुज़रान करते हैं
यों भरने को तो दुनियाँ में पशु भी पेट भरते हैं
जो बन्दा बाँट कर खाये उसे इन्सान कहते हैं।

किसी के काम जो आये...............

❖❖

मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में है। चरित्र के कारण ही एक मनुष्य दूसरे से अधिक आदरणीय समझा जाता है।

न ये तेरा न ये मेरा

न ये तेरा न ये मेरा, मंदिर है भगवान का
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का

हम सब खेल खिलौने उसके, खेल रहा करतार रे
उसकी ज्योति सबमें चमके, सब में उसी का है प्यार रे
मन मंदिर में दर्शन कर ले, उस प्राणों के प्राण का ।।

तीर्थ जाये मंदिर जाए, अनगिन देव मनाए रे
दीन रूप में प्रभु खड़े हैं, देख के नैन चुराए रे
मन की आँखें खुल जायें तो, क्या करना और ज्ञान का ।

कौन है ऊँचा, कौन है नीचा, सब है एक समान रे
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में, सब में प्रभु पहचान रे
सरल हृदय को शरण में राखे, प्रभु भोले नादान रे ।

❖❖

व्यक्ति बुद्धिमान होने के साथ, जब वह सच्चे अर्थों में धार्मिक बनेगा, तभी मनुष्य 'मनुष्य' बन सकेगा। जो सच्चा धार्मिक है वह सबके हृदयों पर राज करता है और उसका राज सदा के लिए रहता है।

कर बंदगी और भजन धीरे-धीरे

कर बंदगी और भजन धीरे-धीरे।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे।।

दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा।
काबू में आयेगा मन धीरे-धीरे।।

सफर अपना आसान करता चला जा।
छूटेगा ये आवागमन धीरे-धीरे।।

सुनें कान तेरे सदा संत वाणी।
कर संत वाणी का मनन धीरे-धीरे।।

दुनियाँ में शुभ काम करता चला जा।
कर शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे।।

❖❖

दाता तेरी भक्ति का

दाता तेरी भक्ति का सुख है निराला
अमृत पीवे कोई कर्मां वाला ।

दाता तेरे दर का जो है भिखारी
आशा तृष्णा मिटे मन की सारी
प्रभु भक्ति में मन होवे मतवाला,
अमृत पीवे कोई ...

प्रेम का दीपक प्रेम की बाती
जगमग जोत जले दिन राती
मन मन्दिर में करो उजियारा,
अमृत पीवे कोई ...

प्रभु भक्तों को देना सहारा
भवसागर से पार उतारा
करो कृपा ओ दीन दयाला,
अमृत पीवे ...

❖❖

उलझ मत दिल बहारों में

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या ।
सहारे टूट जाते हैं, सहारों का भरोसा क्या ।
तमन्नाएँ जो तेरी हैं फुहारें हैं ये सावन की
फुहारें सूख जाती हैं फुहारों का भरोसा क्या ।।

तू सम्बल नाम का लेकर, किनारों से किनारा कर
किनारे टूट जाते हैं, किनारों का भरोसा क्या ।।

तू अपनी अक्लमंदी पर, विचारों पर न इतराना
जो लहरों की तरह चंचल, विचारों का भरोसा क्या ।।

परम प्रभु की शरण लेकर विकारों से सजग रहना
कहां कब मन बिगड़ जायें, विकारों का भरोसा क्या ।।

दिलासे जो जहाँ के हैं, सभी रंगीं बहारें हैं
बहारें रूठ जाती हैं, बहारों का भरोसा क्या ।।

अगर विश्वास करना है तो कर दुनियां के मालिक पर,
धनी, अभिमानी, लोभी, दुनियादारों का भरोसा क्या ।।

❖❖

सारे जहां के मालिक

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है

हम क्या बतायें तुझको, सब कुछ तुम्हे खबर है,
हर हाल में हमारी तेरी तरफ नज़र है ।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है ।

हाथों को हम दुआ की खातिर में लायें कैसे ।
सजदे में तेरे आकर सिर को झुकायें कैसे
मजबूरियाँ हमारी, सब तू ही जानता है

रो कर कटे या हँस कर, कटती है ज़िन्दगानी
तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी
तेरी खुशी समझकर, सब गम भुला दिया है

दुनियाँ बनाके मालिक जाने कहाँ छिपा है
आता नहीं नज़र तू बस एक ही गिला है
भेजा है जो जहां में तेरा ही शुक्रिया है ।

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है

❖❖

जीवन की घड़ियाँ

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो,
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।
चादर न लम्बी तान के सो,
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।

ओ३म् ही जग का सार है,
जीवन है, जीवन आधार है।
प्रीति न उसकी मन से तजो,
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।
जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो,
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।

चोला यही है कर्म का,
करने को सौदा धर्म का
इसके बिना न मार्ग कोय
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।
जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।

मन की गति सम्भालिये,
ईश्वर की ओर डालिये।
धोना जो चाहे जीवन को धो,
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।
जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो
ओ३म् जपो हरि ओ३म् जपो।।

❖❖

हर देश में तू हर वेश में तू

हर देश में तू हर वेश में तू
तेरे नाम अनेक तू एक तो है।

तेरी रंग भूमि ये विश्व धरा
हर खेल में तू, हर मेल में तू ।।

सागर से उठा बादल बनकर
बादल से गिरा जल हो करके।

फिर नहर बना नदिया गहरी
तेरे भिन्न प्रकार, तू एक तो है ।।

सावन की फुहारों में रिमझिम
तारों में चमकते हों झिलमिल।

तेरा रूप अनूप है चारों तरफ
बस मैं और तू एक तो है ।।

ये दृश्य दिखाया है जिसने
वह है गुरुदेव की पुण्य-धरा।

तेरा दास कहे बस और दिखा
बस मैं और तू सब एक तो है ।।

❖❖

चार बातों को याद रखो : दूसरों के द्वारा किया हुआ अपने पर उपकार, अपने द्वारा किया हुआ दूसरों का अपकार, मृत्यु और भगवान ।

तेरे करम से बेनियाज़

तेरे करम से बेनियाज़, कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहां कमी नहीं।।

जीने को जी रहा हूँ मैं, मालिक तेरे बगैर भी।
ज़िन्दगी जिसको कह सकूँ, ऐसी तो ज़िन्दगी नहीं।।
तेरे करम से बेनियाज़...

कब से पुकारता है दिल, सुनता मगर कोई नहीं।
मेरा तो इस जहान में, तेरे सिवा कोई नहीं।।
तेरे करम से बेनियाज़...

माना के मैं गरीब हूँ, माना के मैं फ़कीर हूँ।
मुझसे न ऐसे रूठिये, जैसे मेरा कोई नहीं।।
तेरे करम से बेनियाज़...

सजदा करूँ किसको बता, जब तू ही सामने नहीं।
कायले बन्दगी तो हूँ, काबिले बन्दगी नहीं।।
तेरे करम से बेनियाज...

गम पे गम उठाये जा, तीरों पे तीर खाये जा।
उफ न कर लबों को सी, आशिकी है, दिल्लगी नहीं।।
तेरे करम से बेनियाज़...

इसकी नजर मिली तो क्या, उसकी नज़र फिरी तो क्या।
जिस बन्दगी में होश हो, वो बन्दगी बन्दगी नहीं।।
तेरे करम से बेनियाज़...

❖❖

हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार

हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार,
होंठों पर हो आपका ही नाम बार-बार,
हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार ।।

चरणों में हो मन सदा, चरण हों मंज़िल सदा
हे दयाल भक्ति का दे दान बार-बार,
ऐ मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार ।।

मेरे दाता आपने क्या नहीं दिया हमें,
धन्य-धन्य आपको प्रणाम बार-बार,
हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार ।।

सोये जग को फिर जगाने, आये हो गुरूवर सदा
भक्ति में मन को लगाना नाथ बार-बार
हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार

बार-बार हो जन्म, हर जन्म में आप हम
यूं ही हमको देना आप ज्ञान बार-बार
हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार

चाँदनी का दीप लेकर, थाल फूलों से सजा
आरती हम आपकी करें रोज़ बार-बार
हे मेरे सद्‌गुरू प्रणाम बार-बार

❖❖

शरण में आये हैं हम तुम्हारी

शरण में आये हैं हम तुम्हारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

न हम में बल है न हम में शक्ति,
न हम में साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक,
जो तुम हो पालक तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

बुरे जो हैं हम, तो हैं तुम्हारे,
भले जो हैं हम, तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर भी हैं दुखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रदान कर दो महान शक्ति,
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे तापहारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।

❖❖

तुम मेरे जीवन के धन हो

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु सबके पालनहार हो।।

जागते सोते कभी भी मैं तुम्हें भूलूँ नहीं,
भेष दो राजा का मुझको या गले कटिहार हो।

भर रहा धन-धान्य से ही सबके तू परिवार को,
देके तुम थकते नहीं हो, ऐसी तुम सरकार हो।

जप रहे तेरा नाम पंछी, गीत गाती है पवन
रंग रहे रंगों से जग को अजब रचनाकार हो।

ज़िन्दगी की नाव मैंने, सौंप दी प्रभु आपको,
तुम डुबाओ या बचाओ मेरे खेवनहार हो।

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणधार हो।
एक तुम दाता दयालु सबके पालनहार हो।।

तुम मेरे जीवन के धन हो..........

❖❖

पद से नहीं बल्कि तुम से पद की शोभा होनी चाहिए।
यह तभी होगा जब तुम्हारे कार्य महान् और अच्छे हों।
-आचार्य सुधाँशु

सुबह को बचपन हंसते देखा

सुबह को बचपन हंसते देखा, फिर दोपहर जवानी
सांझ बुढ़ापा ढलते देखा, रात को खत्म कहानी
सुबह को बचपन हंसते देखा।।

बचपन बेपरवाह के जिसमें, खेल कूद के मेले,
आयी जवानी अंधी होकर, पाप की आग से खेले
वृद्ध अवस्था थर-थर काँपे, आये याद पुरानी
सुबह को बचपन हंसते देखा।।

झूठे जग के बंधन झूठे, झूठा जीवन सपना
तू किसका बनता फिरता है, कौन है तेरा अपना
यहां किसी ने सदा नहीं रहना, दुनियाँ आनी जानी
सुबह को बचपन हंसते देखा।।

जीवन में आशाओं के तूने, कितने महल सजाये
धरा धराया रह जाये जब, अन्त बुलावा आये
टूटा पिंजरा छूटा पंछी हो गई खत्म कहानी
सुबह को बचपन हंसते देखा।।

उलझा जीवन जीता रहा तू, कभी हार न मानी,
राम न सिमरा, काम न बिसरा, करता गया मनमानी
समय बदल गया, तू न बदला, हो गयी भारी हानि,
सुबह को बचपन हंसते देखा।।

ओम नमो: नारायणा:

ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:

ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:

ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:

ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:

ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:
ओम नमो: नारायणा:, ओम नमो: नारायणा:

ओम नमः शिवाय

ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,

ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,

ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,

ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,

ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,
ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय,

ओम नमोः भगवते वासुदेवाय

ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय

ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय

वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय
वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय
वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय
वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय

वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय
वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय
वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय
वासुदेवाय प्रभु वासुदेवाय

ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय
ओम नमोः भगवते वासुदेवाय

❖❖

ओ३म् का सिमरन किया करो

ओ३म् का सिमरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।

सुर दुर्लभ मानव तन तूने बड़े भाग्य से पाया है
विषयों में फंस करके बन्दे हीरा जन्म गंवाया है
दुष्ट संग न किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।१।।

पता नहीं ये कब रूक जाए चलते चलते स्वांसा ।
इक क्षण में सब खत्म हो जाए जग का सभी तमाशा ।।
सुबह शाम जप किया करो, याद प्रभु को किया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।२।।

हर प्राणी से प्यार करो सब में वही समाया है ।
मिलकर रहना सब हैं अपने कोई नहीं पराया है ।।
द्वेष भाव न किया करो, दुःख न किसी को दिया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।३।।

सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में बात न समझो झूठी
वही अमर पद पाते, जो पीते नाम की बूटी
प्रभु नाम रस पिया करो, राघव भूल न किया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।४।।

❖❖

हे जगपिता, हे जगप्रभु

हे जगपिता, हे जगप्रभु
मुझे अपने नाम का दान दो ।
तुझे अपने मन में देख लूं
वह ज्ञान दो वह ध्यान दो ।।
मेरे मन में तेरा रंग हो,
मेरी ज्ञान गंग तरंग हो ।
मेरी काम क्रोध से जंग हो,
मुझे लोभ, मोह से अमान दो ।।
प्रभु तेरी भक्ति का बल मिले,
मुझे धैर्य शक्ति प्रबल मिले ।
जो मिले विचार अटल मिले,
मुझे ऐसी ऊँची उड़ान दो ।।
मेरा सरल शुद्ध व्यवहार हो,
मन वैर भाव से आर हो ।
मेरा हर किसी से प्यार हो,
मुझे ऐसा प्रेम महान दो ।।
मैं शहीद मन को मिटा सकूं,
मैं किसी के काम भी आ सकूं,
मैं किसी को अपना बना सकूं,
मुझे ऐसी मधुर ज़बान दो ।।
प्रभु तेरी वाणी पढ़ा करूं,
तेरा ही नाम जपा करूं ।
तेरा साम गान सुना करूं,
यही सोच दो यही ध्यान दो ।।

❖❖

सुबह शाम भजन कर ले

सुबह शाम भजन कर ले मुक्ति का यतन कर ले।
छुट जायेगा जन्म-मरण प्रभु का सिमरन कर ले।।

ये मानव का चोला, हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से वो फूल नहीं खिलता।
मौका है ये जीवन का, गुलज़ार चमन कर ले।।१।।

नर इन कानों से सुन, तू संतों की वाणी,
मन को ठहरा करके, बन जा आत्म ज्ञानी।
जिव्हा तो चले मुख में, तू ओ३म् जपन कर ले।।२।।

इस मैली चादर में, हैं दाग लगे कितने,
पर ज्ञान के साबुन में, हैं झाग भरे इतने।
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।।३।।

सुन वेदों में गूँज रही, मन्त्रों की मधुर ध्वनियाँ,
बलिदान की कड़ियों में, तू गूंथ नयी लड़ियाँ।
प्रभु के आगे अब तो नीची गर्दन कर ले।।४।।
सुबह शाम भजन कर ले..............

❖❖

चार गुण बहुत दुर्लभ हैं:
धन में पवित्रता, दान में विनय,
वीरता में दया और अधिकार में निरभिमानता।

ईश्वर से करते जाना प्यार

ईश्वर से करते जाना प्यार,
ओ नादान मुसाफिर।
नैय्या को करते जाना पार, ओ नादान मुसाफिर...

प्रीति ना तोड़ देना,
हिम्मत ना छोड़ देना।
वरना तू डूबेगा मझधार, ओ नादान मुसाफिर...

जीवन में खुशबू भर ले,
जग को सुगंधित कर ले।
करना जो चाहे मौज बहार, ओ नादान मुसाफिर...

श्रेष्ठों की संगत करना,
बदियों से हरदम डरना।
जीते जी करना पर उपकार, ओ नादान मुसाफिर...

जब तक है जोशे जवानी,
बिगड़ी हर बात बनानी
होने न पावे अत्याचार, ओ नादान मुसाफिर...

जीवन अनमोल हीरा,
मिट्टी में ना रोल वीरा।
तुम को समझाया बारंबार, ओ नादान मुसाफिर...

ऋषियों की शान रखना,
भारत की आन रखना।
देना हो सिर भी देना वार, ओ नादान मुसाफिर...

जिस विधि चाहो उस विधि राखो

जिस विधि चाहो उस विधि राखो ना कोई ज़ोर हमारा ।
तुझ बिन भगवन् इस दुनियाँ में ना कोई और हमारा ।।

टूटी फूटी अपनी किश्ती ना कोई पतवार है ।
सिर पर है तूफान बला का, कौन लगाये पार है ।
कौन लगाए पार प्रभु जी, काफी दूर किनारा ।।१।।

जीवन साथी झूठे निकले मुझे अकेला छोड़ गये ।
एक-एक ही झटके में सब प्रेम की डोरी तोड़ गये ।
ये जीवन भी - जीवन क्या है, जीवन दो दोबारा ।।२।।

दुःख सागर में डूब गया तो, फिर तेरी बदनामी ।
भिक्षा दो आनन्द की मुझ को, हे आनन्द के स्वामी ।
मुजरिम का इन जुर्मों से अब कैसे हो छुटकारा ।।३।।

जिस विधि चाहो............

❖❖

जो बन्दा खुदी से जुदा हो गया ।
खुदा की कसम वो खुदा हो गया ।।

भीतर है सखा तेरा

भीतर है सखा तेरा, तू मन टिका के देख।
अन्तःकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख।।

है इन्द्रियों की शक्ति बाहर की ओर जो,
बाहर की ओर से इन्हें भीतर को मोड़ दो
कर द्वार सकल बन्द, समाधि लगा के देख।।१।।

शुद्ध आत्मा से उसकी तू रचना का ध्यान कर
निश्चय ही झूम जाएगा महिमा का गान कर
श्रद्धा की देवी रूठी हुई है मना के देख।।२।।

साथी पवित्र देव है बिगड़ी बने न क्यों
जीवन ये तेरा भक्ति रस में सने न क्यों
भाति आदर्श भक्तों की, जीवन बिता के देख।।३।।

मिलता है सखा तेरा इस ही उपाय से
मिलता नहीं कदापि अन्यत्र जाए से
सन्तों की वाणी को तू आज़मा के देख।।४।।

❖❖

चार चीज़ें मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलती हैं:
भगवान को याद रखने की लगन,
सन्तों की संगति,
चरित्र की निर्मलता और उदारता।

तू व्यापक डाली डाली है

तू व्यापक डाली डाली है, कोई जगह न तुझसे खाली है।
तेरी ही अद्भुत माया है, तूने ही जगत बनाया है।
सब पर ही तेरा साया है, जग बाग तेरा तू माली है।
तू व्यापक ...

सब वृक्ष और बेलें झूम रहीं, तेरे चरणों को हैं चूम रहीं।
तेरी प्रेम की वायु घूम रही, तेरी महिमा अजब निराली है।
तू व्यापक ...

सब पक्षी तुझे ही ध्याय रहे और तेरे ही गुण गाये रहे।
तेरे चरणों में मन लगाये रहे, तू ही प्रभु सबका वाली है।
तू व्यापक ...

तू सब जग का दुःख हरता है, और सबका पालन करता है।
क्या राजा है क्या प्रजा है, तेरे दर पर सभी सवाली है।
तू व्यापक ...

सब मिलकर तेरे गुण गाते हैं, चरणों में शीश झुकाते हैं।
दो भक्ति दान यह चाहते हैं, तेरे दर पर अलख जगाते हैं।
तुझसे ही प्रीत लगा ली है।
तू व्यापक ...

❖❖

कुछ काम करके जाना

कुछ काम करके जाना दुनियाँ से जाने वाले
जाते हैं रोज़ लाखों बेकार खाने वाले

चौरासी लाख खोये हर जन्म मरण रोये
अब व्यर्थ मत गंवाना दिन चार जीने वाले

हिंसा, असत्य, चोरी कर करके माया जोड़ी
क्या साथ ले चलेगा सब छोड़ जाने वाले

जोरू, ज़मीन, ज़र से करता है क्या मोहब्बत
सब छोड़ने पड़ेंगे नहीं साथ जाने वाले

कीजे सदा भलाई मत कर कभी बुराई
नेकी बदी रहेगी दुनियाँ से जाने वाले

जन्मा है जो भी मित्रो! मरना ज़रूर होगा
अब बेखबर न रहना परलोक जाने वाले

❖❖

आज को संभालने से कल संभल जाता है।
भूत-भविष्य की चिन्ता में सब कुछ गल जाता है।।

प्रभु तेरा ओ३म् नाम

प्रभु तेरा ओ३म् नाम सब का सहारा है
सारे ब्रह्माण्ड का जीवन आधारा है

तू है सुखों का दाता, तू ही भवसागर त्राता
भक्तों को पार लगाता, मन का उजियारा है
प्रभु तेरा ओ३म् नाम सबका सहारा है ।

जग को रचाने वाला, बिगड़ी बनाने वाला
दुःखड़े मिटाने वाला, सखा तू हमारा है
प्रभु तेरा ओ३म् नाम सबका सहारा है ।

कण-कण में तू है समाया, तेरी है सब में छाया,
किसी ने न भेद पाया, कैसा ये नज़ारा है ।
प्रभु तेरा ओ३म् नाम सबका सहारा है ।

सुखमय संसार बनाया वेदों का ज्ञान कराया
तेरे में द्वार आया प्रीतम प्रभु प्यारा है ।
प्रभु तेरा ओ३म् नाम सबका सहारा है ।

❖❖

अशरण शरण शान्ति के धाम

अशरण शरण शान्ति के धाम
एक सहारा तेरा नाम - 4
अशरण शरण......

विशव विधाता भव भय त्राता
जन मन रंजन मंगल दाता
असुर निकन्दन तेरो नाम
एक सहारा तेरा नाम - 4
अशरण शरण......

ब्रह्मा विश्णु तू ही महेशवर
सच्चदानन्द तू विघनेशवर
तू ही है बुद्धि का धाम
एक सहारा तेरा नाम - 4
अशरण शरण......

तू ही भक्ति तू ही शक्ति
दुर्गा भवानी तू कल्याणी
करती पूर्ण सबके काम
एक सहारा तेरा नाम - 4
अशरण शरण......

भक्ति देना शक्ति देना
अपने दर की सेवा देना
जपता रहूँ बस तेरो नाम
एक सहारा तेरा नाम - 4
अशरण शरण......

❖❖

किसने दीप जलाया

किसने दीप जलाया
दीप जलाकर किया उजाला
अपना आप छिपाया
किसने दीप जलाया

लहर रहा आंखों के आगे
सागर यह सुष्माता का।
किसने रूप दिया जल थल को
किसने व्योम सजाया।।
किसने दीप जलाया

स्रोत कहां है इस सागर का
है कितनी गहराई।
सागर ने क्यों अपने भीतर
अपना स्रोत छिपाया
किसने दीप जलाया।।

है वह कौन, कहां का वासी
कैसे कोई बताये।
नहीं किसी ने देखा उसको
सन्तजनों ने गाया।।
किसने दीप जलाया

दीप जलाकर किया उजाला
अपना आप छिपाया

किसने दीप जलाया.......

गुण गोविन्द गायो नहीं

गुण गोबिन्द गायो नहीं जनम अकारथ कीन।
कहो नानक हरि भज मना जेहि विधि जल को मीन।।

वृद्ध भयो सूझे नहीं काल पहुँच गयो आन।
कहो नानक नर बांवरे क्यों न भजे हरि नाम।
सुत दारा सुन पति सकल, जिन अपनी कर मान।
इनमें कुछ संगी नहीं नानक साथ जान।
गुण गोविन्द गायो नहीं..............

पतित उद्धारण भय हरण हरि अनाथ के नाथ।
कहो नानक तेही जानिये सदा बसत हरि नाम।
तन-धन जिहो तुझ दियो ता सिमरन-जिहे नहीं कीन।
कहो नानक मन बांवरे, अब क्यों डोलत जीव।
गुण गोविन्द गायो नहीं..............

तन-धन सम ते सुख दियो और जहँ लेते धार।
कहो नानक सुन रे मना सिमरत काहे नाहि।
सब सुख दाता राम है, दूसर नाही कोय।
कहो नानक सुन रे मना, यही सिमरत गति होय।
गुण गोविन्द गायो नहीं..............

जिस सिमरत गति पाइये, यही भज ले तू मीत,
कहो नानक सुन् रे मना अवध जात है मीत।
घट-घट में हरि यूँ बसे, सन्तन कहियो पुकार,
कहो नानक हर भज मना, क्यों न भजे करतार।
गुण गोविन्द गायो नहीं..............

❖❖

जय जय राधा रमण हरि बोल

जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि बोल

❖❖

जहाँ ले चलोगे

जहाँ ले चलोगे वहाँ मैं चलूँगा
जहाँ नाथ रख लोगे वहीं मैं रहूँगा
जहाँ ले चलोग..........

ये जीवन समर्पित चरण में तुम्हारे
तुम्ही मेरे स्वर्वस्व तुम्ही प्राण प्यारे
तुम्हें छोड़ कर नाथ किससे कहूँगा
जहाँ ले चलोग..........

न कोई उलाहना न कोई अर्जी
करलो करालो जो है तेरी मर्जी
कहना भी होगा तुम्ही से कहूँगा
जहाँ ले चलोगे..........
जहाँ नाथ रख लोगे..........

दया नाथ दयनीय है मेरी अवस्था
तेरे हाथ में अब सारी व्यवस्था
जो भी कहोगे तुम वही मैं करूँगा
जहाँ ले चलोग..........
जहाँ नाथ रख लोगे..........

जहाँ ले चलोग..........

❖❖

नैय्या पड़ी मँझधार प्रभु

नैय्या पड़ी मँझधार प्रभु! बिन कैसे लागे पार।
नैय्या पड़ी मँझधार गुरु बिन कैसे लागे पार।।

मैं अपराधी जनम-जनम का, नख-शिख भरा विकार।
तुम दाता दु:खभंजना, मेरी करो सँभाल।
गुरु बिन कैसे लागे पार.........................

अवगुण दास कबीर के बहुत हैं गरीब नवाज।
जो मैं पूत कपूत हूँ तो भी पिता को लाज।।
प्रभु बिन कैसे लागे पार.........................

अन्तर्यामी एक तुम्हीं हो जीवन के आधार।
जो तुम छोड़ो साथ प्रभुजी! कौन लगायो पार..
प्रभु बिन कैसे लागे पार.........................

साहब तुम मत भूलियो, लाख लोग मिल जायं।
हमसे तुमरे बहुत है-2, तुम सम हमरो नाय।
गुरु बिन कैसे लागे पार.........................

जतन बहुत सुख के किए, दु:ख का किया न कोय।
सुख दु:ख साथी साईयाँ, हरि भावे सो होय।।
प्रभु बिन कैसे लागे पार.........................

❖❖

भला करो भगवान

भला करो भगवान सबका भला करो
दाता दया निधान सबका भला करो

तुम हो माता-पिता हमारे
ये जग चलता तेरे सहारे
हम तेरी सन्तान, सबका भला करो

तू दुनिया का प्रीतम प्यारा
सबसे ऊँचा सबसे न्यारा
दाता दयानिधान, सबका भला करो

तू है सबका पालन हारा
सबको मिलता तेरा सहारा
हे जगदीश महान, सबका भला करो
दाता दयानिधान..................

भरदो सबकी झोलियाँ दाता
तुम हो सबके भाग्य विधाता
दो सबको वरदान, सबका भला करो
दाता दयानिधान सबका भला करो

भला करो भला करो
भला करो भगवान सबका..............

❖❖

राम का सिमरन

राम का सिमरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।

सुर दुर्लभ मानव तन तूने बड़े भाग्य से पाया है
विषयों में फंस करके बन्दे हीरा जन्म गंवाया है
दुष्ट संग न किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।१।।

पता नहीं ये कब रूक जाए चलते चलते स्वांसा ।
इक क्षण में सब खत्म हो जाए जग का सभी तमाशा ।।
सुबह शाम जप किया करो, याद प्रभु को किया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।२।।

हर प्राणी से प्यार करो सब में वही समाया है ।
मिलकर रहना सब हैं अपने कोई नहीं पराया है ।।
द्वेष भाव न किया करो, दुःख न किसी को दिया करो ।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।३।।

❖❖

धन तो बहुत कमाया लेकिन धर्म कितना कमाया?
कर्म तो बहुत किए—पर सेवा कितनी की?
नाम तो बहुत बोला—पर संसार का, करतार का नहीं!

राम तजूँ मैं गुरू ना बिसारूँ

राम तजूँ मैं गुरू ना बिसारूँ
गुरू के सम हरि को न निहारूँ
हरि ने जन्म दिया जगमहि
गुरू ने आवागमन छुड़ाई
राम तजूँ मैं ....
गुरू के सम हरि ....
हरि ने कुटुम्ब जाल में गेरि
गुरू ने काटि ममता मेरी
राम तजूँ मैं ....
गुरू के सम हरि ....
हरि ने रोग-भोग उलझायो
गुरू जोगी कर सब छुड़ायो
राम तजूँ मैं ....
गुरू के सम हरि ....
हरि ने मोसो आप छिपायो
गुरू ने दीपक देह दिखायो
राम तजूँ मैं ....
गुरू के सम हरि ....
चरणदास पर तन-मन वारूँ
गुरू ना तजूँ हरि को तज डारूँ
राम तजूँ मैं ....
गुरू के सम हरि ....
राम तजूँ मैं ....

❖❖

हे नाथ अब तो

हे नाथ अब तो एसी दया हो
जीवन निरर्थक जाने न पाए
ये मन न जाने क्या-क्या कराए
कुछ बन न पाए मेरे बनाए
हे नाथ अब तो....

ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ
तुमको को ही चाहूँ तुमको ही पाऊँ
संसार का सब भय मिट जाए
हे नाथ अब तो....

वो योगयता दो सत्कर्म कर लूँ
हृदय में अपने सद्भाव भर लूँ
नर तन हैं साधन भवसिंधू तर लूँ
ऐसा समय फिर आए न आए
हे नाथ अब तो....

संसार में ही आसक्त रहकर
दिन रात अपने मतलब की कहकर
सुख के लिए लाखों दुख है उठाए
ना बन सका कुछ मेरे बनाए
हे नाथ अब तो....

हरे रामा रामा राम, सिया राम राम

हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम

हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम

हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम

हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम

हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम
हरे रामा रामा राम, सिया राम राम

❖❖

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
हे नाथ नारायण वासुदेवा
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा
हे नाथ नारायण वासुदेवा

❖❖

अज्ञान के अंधेरों से

अज्ञान के अंधेरों से हमें
ज्ञान के उजालों की ओर ले चलो।
असत्य की दीवारों से हमें
सत्य की शिवालों की ओर ले चलो।।
सारे जहाँ के सब दुःखों का एक ही तो निदान है
या तो वो अज्ञान है अपना या तो वो अभिमान है
नफरतों के ज़हर से हमें
प्रेम के प्यालों की ओर ले चलो।
अज्ञान के अंधेरों से हमें
ज्ञान के उजालों की ओर ले चलो।।
अपनी मर्यादा न छोड़ें
अपनी सीमा में रहें
न करें अन्याय न
अन्याय औरों का सहें
कायरों की पंक्ति से
वीर हृदय वालों की ओर ले चलो।
अज्ञान----------

अद्वितीय दानी

बाप अपनी कमाई में से थोड़ा सा भी भाग,
प्राण प्यारे पुत्र को लताड़ कर देता है।

पति अपनी पत्नी को प्रेम भरी,
बगिया उजाड़ कर देता है।

स्वामी निज सेवक को वेतन महीने पर,
देता है तो हुलिया बिगाड़कर देता है।

किन्तु भगवान बिन माँगे सुख सम्पदा,
देता है 'प्रकाश' तो छप्पर फाड़कर देता है।।

आदमी में अगर आदमी की तरह

आदमी में अगर आदमी की तरह
आदमियत न आये तो वह क्या करे

अक्ल दी शक्ल दी, दे दिया कुल जहां
मुँह दिया मुँह में दे दी मीठी जबां
हर तरीका सलीका दिया
आदमी को समझ न आये तो वह क्या करे।।

जीना चाहे तो जीने को दी ज़िन्दगी
बन्दा परवर बन्दे को दी बन्दगी
बन्दगी छोड़कर आदमी आग से
खुद ही अँगार खाये तो वह क्या करें।।

लाखों ही नेमते तेरी आराम को
कितना खुदगर्ज़ है भूला भगवान को
ज़र्रे ज़र्रे में है वह समाया हुआ
तू नहीं देख पाये तो वह क्या करे।।

आँख दी अपने ईश्वर को पहचान ले
क्या हकीकत है तेरी तू यह जान ले
हर कदम पर वह तेरा निगहेबान है
खुद को खुद से छिपाये तो वह क्या करे।।

तुझको जीवन मिला सबका उपकार कर
है ये अनमोल जीवन न इसको बेकार कर
नाम करना था रोशन धरम के लिए
जुल्म तू जो कमाये तो वह क्या करें।।

देने वाले ने रखी कसर कुछ नहीं
लेने वाले ने पाया अगर कुछ नहीं
तेरे हाथों में दे दी है सुन्दर कलम
नाम तू न कमाये तो वह क्या करे।।

❖❖

आये हैं दुनियां में

आये हैं दुनियां में जो खाली हाथ जायेंगे।
नेकी पर चलते रहे तो वो ही मुक्ति पायेगें।।

साथ न जायेंगे साथी और दौलत के अम्बार।
खोया जीवन जिनके पीछे वो न दिल बहलायेंगे।।

जिधर देखो सामने है मोह ममता की दीवार।
पारकर लेंगे जो इसे वो न ठोकर खायेंगे।।

लोभ में फंसकर जिन्होंने पाप जीवन में किये।
हाथ मलमल के सभी वो अन्त में पछतायेंगे।।

लाखों लोगों का जहां से मिट गया नामो निशां।
कुछ हैं किस्से प्यार के जो लोग फिर दोहरायेगें।।

हैं सभी स्वार्थ के बन्दे, कोई भी अपना नहीं।
जब समां निकला तो वो ही सब के सब ठुकरायेंगे।।

आये हैं दुनियां में............

सत्संग का आमन्त्रण

धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए, अपने घर में सुख, शान्ति और आनन्द की अभिवृद्धि के लिए, उचित मार्ग निर्देशन के लिए, भगवान की भक्ति और प्रभु के स्वरूप को समझने के लिए, विश्व जागृति सत्संग से जुड़िये। विश्व जागरण के मंत्रदाता परम पूज्य श्री आचार्य यशपाल सुधाँशु जी महाराज के संदेश सुनें और सुनायें।

इस समय हज़ारों श्रद्धालु भक्ति गंगा में स्नान कर जीवन को तरंगित कर रहे हैं।

इतना दिया मालिक ने मुझको

इतना दिया मालिक ने मुझको, जितनी मेरी औकात नहीं।
ये तो दया है प्रभु की मुझ पर, मुझमें तो कोई बात नहीं।।

वो है मेरे दीनों–ईमां, क्या मैं उनकी नज़र करूँ।
पास मेरे अश्कों के अलावा और कोई सौगात नहीं।।

मेरा दाता करम की भरे झोलियां
तैनूं मंगना न आवे तें मैं किं कराँ

तू भी वहीं पे चल उस दर पै
जहाँ सबकी बिगड़ी बनती है
एक तेरी तकदीर बनाना उनके लिए कोई बात नहीं।।

❖❖

तिथी.........
2786

यदि आप दुःखी होने से बचना चाहते हैं तो हर हाल में प्रसन्न रहने की आदत बनाइये, जहाँ हैं, जैसे हैं, जिस तरह हैं, हम ठीक हैं, परन्तु अपना कर्तव्य प्रयास और परिश्रम सदा करना चाहिए, क्योंकि हम कर्म करने और कर्मफल भोगने ही तो दुनियाँ में आये हैं। ऐसा मानकर सदा सन्तुष्ट और कर्मशील रहें।

–आचार्य सुधाँशु

इतनी शक्ति हमें देना

इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मन का विश्वास कमज़ोर हो ना।।

हम चले नेक रस्ते पे हम से।
भूलकर भी कोई भूल हो ना।।

दूर अज्ञान के हो अंधेरे।
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।।

हर बुराई से बचते रहें हम।
जितनी भी दे भली जिंदगी दे।।

बैर हो ना किसी का किसी से।
भावना मन में बदले की हो ना।।

हम चले नेक रस्ते पे हम से।
भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

हम न सोचे हमें क्या मिला है।
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।।

फूल खुशियों के बांटे सभी को।
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन।।

अपनी करुणा का जल तू बहा के
कर दे पावन हर एक मन का कोना

❖❖

इन्सान की खुशबू रहती है

इन्सान की खुशबू रहती है, इन्सान बदलते रहते हैं।
दरबार लगा रहता है यहां, दरबारी बदलते रहते हैं।।

जो हिम्मत वाले माँझी हैं, तूफानों से टकराते हैं।
इन तूफानों से क्या कहना, तूफान बदलते रहते हैं।।

जो पक्के इकरारों के इकरारों पर मिट जाते हैं।
जो बातों के बातूनी हैं ऐलान बदलते रहते हैं।।

एक दस्तरखान लुकमा बनते हैं, है ये दुनियाँ सब मौत का।
एक दस्तरखान यहाँ, मेहमान बदलते रहते हैं।

ये मेल है बस दो दिन का, कुछ कर चलिए कुछ दे चलिए।
इक दिल की हकूमत बसती यहाँ, सुलतान बदलते रहते हैं।।

ओ भोले मानव! पागल तू क्यों मरता है वरदानों पर।
बलिदानी ही ज़िन्दा रहते हैं वरदान बदलते रहते हैं।।

❖❖

तीन चीज़ें फिर नहीं लौटती :
मुँह से निकली बात, छूटा हुआ तीर, बीती हुई उम्र।

उड़ जायेगा हंस अकेला

उड़ जायेगा हंस अकेला,
दो दिन का दर्शन मेला।

राजा भी जायेगा रंक भी जायेगा,
गुरु भी जायेगा, जायेगा चेला।।

माता पिता बन्धु भी जायेंगे,
और यह धन का थैला।
तन भी जायेगा मन भी जायेगा,
तू क्यों भया है मैला।।
उड़ जायेगा...

तू भी जायेगा तेरा भी जायेगा,
सब माया का खोला।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी,
संग चले न धेला।।
उड़ जायेगा...

साथी तेरे पार उतर गये,
तू क्यों रहा अकेला।
प्रभु नाम निष्काम जपो तब
मिट जायेगा झमेला।।
उड़ जायेगा...

❖❖

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।।

उठ नींद से अँखियाँ खोल जरा,
और अपने प्रभु में ध्यान लगा।
यह प्रीति करन की रीति नहीं,
प्रभु जागत है तू सोवत है।।

जो कल करना हो आज करले,
जो आज करना है अब करले।
जब चिड़ियों ने खेत चुग लिया,
फिर पछताये क्या होवत है।।

नादान भुगत करनी अपनी,
और पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है।।

❖❖

उमर का पंछी उड़ता जाता

उमर का पंछी उड़ता जाता
क्यों प्राणी प्रभु नाम न गाता रे,
किसे पता है कल क्या होगा,
काल चक्र चलता मदमाता।
क्यों प्राणी प्रभु...

आज कहे कल नाम रटूँगा,
कल आये फिर कल जप लूंगा,
बीता कल कभी लौट न आता
क्यों प्राणी प्रभु...

कच्ची सांसों की ये आशा
कर जाये कब बन्द तमाशा
तू मूरख मन क्यूं भरमाता
क्यों प्राणी प्रभु...

❖❖

दोहे

ऊंचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराए।
नीचा हो भारि पिए, ऊँचा प्यासा जाए।
साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जा के हृदय साँच है ताके हृदय आप।
जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ पाप है, जहाँ क्षमा तहँ आप।

ऊपर गगन विशाल

ऊपर गगन विशाल, नीचे गहरा पाताल, बीच में धरती
वाह मेरे मालिक तूने किया कमाल।

एक फूंक से रच दिया तूने सूरज अगन का गोला,
एक फूंक से रचा चन्द्रमा लाखों सितारों का टोला।

तूने रच दिया पवन झकोला, ये पानी और ये शोला
ये बादल का उड़न खटोला, जिसे देख हमारा मन डोला।
सोच-सोच हम करें अचम्भा, नज़र नहीं आता एक भी खम्बा
फिर भी ये आकाश खड़ा है, हुए करोड़ों साल।
तूने किया कमाल..............

तूने रचा इक अद्‌भुत प्राणी, जिसका नाम इंसान,
जिस की नन्हीं जान में भरा हुआ तूफान।
इस जग में इंसान के दिल को कौन सका पहचान,
इसमें ही शैतान छुपा है, इसमें ही भगवान्।
बड़ा गज़ब का है यह खिलौना, इसकी नहीं मिसाल,
तूने किया कमाल..............

चारों तरफ इक इन्द्रजाल सा, तूने रचा विधाता,
तू हम सबके बीच बसा है, फिर क्यों नज़र न आता,
पत्ता-पत्ता लता-लता ढूंढ रहा सब तेरा पता,
कहां छुपा है ये बता, सामने आजा अब न सता,
एक बार तो झलक दिखा जा, कर जा हमें निहाल।
तूने किया कमाल..............

❖❖

एक सहारा तेरा नाम

अखिलाधार अमर सुख धाम, एक सहारा तेरा नाम।
कैसी सुन्दर सृष्टि बनाई, चन्द्र सूर्य सी ज्योति जगाई।
कैसी अद्भुत वायु बहाई, एक से एक विलक्षण काम।
एक सहारा तेरा नाम ।।१।।

सुन्दर सरस सुधा सम पानी, अमृत अन्न खायें सब प्राणी।
गुण गावें ज्ञानी और ध्यानी, भजें निरंतर आठों याम।
एक सहारा तेरा नाम ।।२।।

पत्र-पत्र रंग रूप निराला, पुष्प-पुष्प में गंध विशाल।
फल-फल पृथक् प्रेम रस प्याला, लीला तेरी ललित ललाम।
एक सहारा तेरा नाम ।।३।।

आप अमर सत् पथ के स्वामी, मैं हूं अमर असत् पथगामी।
एक नाम के दोनों नामी, मैं गुण रहित आप गुण ग्राम।
एक सहारा तेरा नाम ।।४।।

❖❖

चार चीज़ों का सदा सेवन करना चाहिए:
सत्संग, संतोष, दान और दया।

ऐसी कमाई कर लो

ऐसी कमाई कर लो जो संग जा सके।
मुश्किल पड़े तो राह में वह काम आ सके।

संसार में आता कोई साथी नज़र नहीं।
बस नाम के हैं साथी वह साथी अमर नहीं।
बनाओ उसी को साथी जो साथ जा सके।।
मुश्किल पड़े तो.................

पापों में सदा मन को लगाते चले गये।
बदियों का ही सामान बढ़ाते चले गये।
लेकिन कभी न धर्म को साथी बना सके।।
मुश्किल पड़े तो.................

दुनियाँ की चकाचौंध में जीवन बिता दिया।
अनमोल रत्न पाके यूँ ही गंवा दिया।
मानव वही है जो इसका फायदा उठा सके।।
चिन्ता की कोई बात.................

❖❖

"धन कमाने की कला अवश्य सीखो परन्तु धन के सदुपयोग की कला उससे पहले सीखो अन्यथा यह धन ऐब और बुरी लत की लानत देने वाला भी हो सकता है।"

—आचार्य सुधांशु

ऐसी लागी लगन

ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन,
वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी-2
महलों में पली, बनके जोगन चली,
मीरा रानी दीवानी कहाने लगी-2
ऐसी लागी लगन.................

कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं
मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी-2
बैठी संतों के संग, रंगी मोहन के रंग
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी-2

राणा ने विष दिया, मानों अमृत पिया
मीरा सागर में सरिता समाने लगी-2
दुःख लाखों सहे, मुख से गोविन्द कहे
मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी-2
वो तो गली-2 हरिगुण.................

बुद्धिमान लोग निन्दा स्तुति से विचलित नहीं होते।

ऐसा कोई सन्त मिले

मुझे प्रेम का पंथ बता दे, ऐसा कोई सन्त मिले।
भटक रहा हूँ कब से जग में, इस माया के पड़ बन्धन में,
मेरा आवागमन मिटा दे, ऐसा कोई सन्त मिले.......

इस झूठे जग में भरमाया, सत्य मान कर प्रेम लगाया,
इस भ्रम को कोई मिटा दे, ऐसा कोई सन्त मिले.......

सन्त दरश का बड़ा है महातम, बड़े भाग्य से मिले समागम
मोहे प्रभु की शरण लगा दे, ऐसा कोई सन्त मिले.......

यह जीवन दिन चार रहेगा, ऐसा अवसर नहीं मिलेगा
मानव तन सफल बना दे, ऐसा कोई सन्त मिले.......

सन्त कृपा बिन हरि नहीं मिलते, पाप सभी दर्शन से धुलते
मेरा रोम रोम पुलका दे, ऐसा कोई सन्त मिले.......

❖❖

भगवान से मिलन होने के लिये भाव आवश्यक हैं।
नम्र होकर चलना, मधुर बोलना और बांट कर खाना ये
तीन गुण आदमी को ईश्वरीय पद पर पहुँचाते हैं।

ओ दुनियाँ के रखवाले

तूने गिरते लाख सम्भाले, ओ दुनियाँ के रखवाले।
दुनिया के रखवाले ओ दुनियाँ के रखवाले।।

एक बेल से कांटे निकले और कांटो संग फूल।
जगह-जगह पर हीरे उगले, तेरी दया से धूल।।

तू ही जल में मोती डाले, दुनियाँ के रखवाले।
बस कर रोम-रोम के अन्दर, परे कहाने वाले।।

तेरे खेल के क्या कहने हैं, तेरे खेल हैं न्यारे।
तू ही संग में कोड़े पाले, दुनियाँ के रखवाले।।

जलचर, नभचर, भूचर और बन पर्वत फुलवारी।
ज़र्रे ज़र्रे में व्याप रही है निर्मल ज्योति तिहारी।।

सूर्य चन्द्र तारागण भी तुम हो चमकाते।
दुनियाँ के रखवाले, दुनियाँ के रखवाले।।

❖❖

ओउम नाम के हीरे मोती

ओ३म नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली-गली ।
ले लो रे कोई ओ३म् का प्यारा, आवाज़ लगाऊं गली-गली ।।

माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा ।
धन दौलत और रूप खज़ाना, यहीं धरा रह जायेगा ।
सुन्दर काया माटी होगी,
चर्चा होगी गली-गली ।।१।।

मित्र प्यारे सगे संबंधी, इक दिन तुझे भुलायेंगे ।
कल जो कहते अपना-अपना, आग में तुझे जलायेंगे ।
दो दिन का यह चमन खिला है,
फिर मुरझाये कली-कली ।।२।।

क्यों करता है मेरी-मेरी, तज दे इस अभिमान को ।
छोड़ जगत् के झूठे धंधे, जप ले प्रभु के नाम को ।
गया समय फिर हाथ न आये,
तब पछताये घड़ी-घड़ी ।।३।।

जिसको अपना कह करके, मूरख तू इतराता है ।
छोड़ के बन्दे साथ विपद् में कभी न कोई जाता है ।
दो दिन का यह रैन बसेरा,
आखिर होगी चला-चली ।।४।।

क्या लेकर आया जग में

क्या लेकर आया जग में क्या लेकर चले जाएगा।
प्रभु सिमरन और धन कर्मों का नर जीवन में ही पाऐगा।।

कुटुम्ब, कबीला, सोना, बंगला साथ न तेरे जायेंगे।
इनकी खातिर पाप क्यों करता यश न तुझे दिलायेंगे।।

समय गंवाया खान पान में जग के जाल में जकड़ा सब।
परमानन्द के पान का वक्त मिलेगा तुझ को कब।।

काम क्रोध को दिया बढ़ावा परहित धर्म कमाया ना।
इस कारण नर जीवन पाकर सच्चे सुख को पाया ना।।

कुछ नहीं बिगड़ा संभल जा अब भी नेक कमाई कर ले तू।
प्रभु सिमर मन उज्ज्वल कर ले, सब से प्रीति कर ले तू।।

झूठी खुशी विषयों में पायी, आनन्द लिया न भक्ति में।
प्रभु नाम जपा ना मानव, व्यर्थ जिया इस धरती पे।।

❖❖

"बौद्धिक उन्नति में हम धर्म को जोड़ नहीं पाते इसीलिए बौद्धिक उन्नति भी उन्नति नहीं कहला पाती, वह संसार से जुड़ी मायावी बुद्धि रह जाती है। सबसे ज्यादा ज़रूरी है व्यक्ति को आत्मिक विकास करना।"

-आचार्य सुधांशु

कर ईश्वर से प्यार

कर ईश्वर से प्यार मानव कर ईश्वर से प्यार ।
संकट मोचन विघ्न विनाशक सुखदायक दातार ।
मानव! कर ईश्वर से प्यार

जिस जगदीश्वर से उपजा है यह अद्‌भुत संसार ।
जो कण-कण में रमा हुआ है जड़ चेतन आधार ।
मानव! कर ईश्वर से प्यार

तू अशक्त और नाव पुरानी आन फंसी मझधार ।
खेवट एक वही भव सागर पार उतार हार ।
मानव! कर ईश्वर से प्यार

सदा किया कर प्यार परस्पर पर हित पर उपकार
धर्म धुरंधर धन धरणीधर दया धर्म उर धार ।
मानव! कर ईश्वर से प्यार

तज कुपथ चल सरल सुपथ पर तज कुवचन कुविचार ।
"पथिक" समझ सब जीव स्वयं सम कर सुमधुर व्यवहार ।
मानव! कर ईश्वर से प्यार

❖❖

"चिन्ता उन्हें होती है जिन्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं होता ।"
-आचार्य सुधांशु

कर ले भला होगा भला

कर ले भला होगा भला अन्त भला है,
बस यही संसार में जीने की कला है।

जिसने किया नेकी बदी का विचार,
राज़ जीवन का समझा वो सारा,
रंग भरी दुनिया से मुंह मोड़ लिया है।

पाप जिसने कभी न किया है,
दीन दुःखियों को जीवन दिया है,
उसका हरा बाग सदा फूला फला है।

उस पिता की शरण में जो आया,
ईश-भक्ति में मन को लगाया,
क्रोध की अग्नि में कभी जो न जला है।

शोक-सिन्धु से चाहो जो तरना,
भूलकर भी बुरा कुछ न करना,
मान लो इसको बड़ी बेमोल सलाह है।।

कर ले भला होगा भला..................

❖❖

दुःख तो तब कटेगा, जब तुम दूसरों को सुख बाँटोगे।

कण-कण में जो रमा है

कण-कण में जो रमा है हर दिल में है समाया
उसकी उपासना ही कर्त्तव्य है बताया।।
दिल सोचता है खुद वह कितना महान होगा।
इतना महान जिसने संसार है रचाया।।
देखा ये तन के पुर्ज़े करते हैं काम कैसे।
जोड़ों के बीच कोई कब्ज़ा नहीं लगाया।।
एक पल की रोशनी से सारा जहान चमका।
सूरज का एक दीपक आकाश में लगाया।।
अब तक ये गोल धरती चक्कर लगा रही है।
फिरकी बनाके कैसी तरकीब से घुमाया।।
कठपुतलियों का हमने देखा अजब तमाशा।
छुप कर किसी ने सबको संकेत से नचाया।।
हर वक्त के साथी रहता है साथ सबके।
नादान "पथिक" उसको तू जानने न पाया।।

❖❖

सहनशक्ति बढ़ने के साथ संकल्प शक्ति बढ़ेगी, संकल्प शक्ति बढ़ने के साथ दुःख हल्का पड़ेगा, वही लोग जो आपका विरोध कर रहे थे अच्छा करने के लिए, सहयोग करने के लिए तैयार हो जायेंगे।

-आचार्य सुधाँशु

करूँ वन्दना मैं उमानाथ

करूँ वन्दना मैं उमानाथ तेरी,
मुझे अपने चरणों का दे दो सहारा
हे नैया भंवर में पड़ी डगमगाती
भव सिन्धु का मुझको दिखा दो किनारा
करूँ वन्दना मैं उमानाथ...

जटाओं में भोले के गंगा सुहावे
मस्तक पे सुन्दर शशि जगमगाये
गले सर्प माला बड़ी शोभा भावे
है श्मशान में वास शम्भु तुम्हारा
करूँ वन्दना मैं उमानाथ...

सारे जगत को सुखी हो बनाते
स्वयं ज़हर पी सबको अमृत पिलाते
तभी तो महादेव भोले कहलाते
कृपा दृष्टि का मुझको कर दो इशारा
करूँ वन्दना मैं उमानाथ...

मेरे भाव गीतों को स्वीकार कर लो
मेरी वाणी में भगवान चमत्कार भर दो
प्रभु दास हो जाऊँ बस यही एक वर दो
कि कण-कण में देखूँ तुम्हारा नज़ारा
करूँ वन्दना मैं उमानाथ...

❖❖

कोई दुनिया में आता है

कोई दुनियाँ में आता है, कोई दुनियाँ से जाता है
ये चक्कर रुक नहीं सकता, कोई इसको चलाता है।

भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा,
जो जैसा बीज बोता है, वो वैसा ही फल पाता है।

प्रभु का ध्यान करने से सभी दुःख दूर होते हैं,
कभी सुख पा नहीं सकता प्रभु को जो भुलाता है।

वो कण-कण में समाया है, नज़र फिर भी नहीं आता,
वही सृष्टि का कर्त्ता है वही मुक्ति का दाता है।

जिसे हर ऋषि मुनि योगी तपस्वी याद करते हैं,
उसी के ही मगन मन से 'पथिक' भी गीत गाता है।।

कोई दुनियाँ में आता है..................

❖❖

मन को अच्छे मार्ग पर चढ़ाने के लिए चार सीढ़ियाँ हैं: सत्य का स्वीकार, संसार में उपरामता, आचरण की पवित्रता तथा उच्चता और पापों के लिए भगवान से क्षमा प्रार्थना।

कृपा का तेरी एक कण चाहता हूँ

न मैं धाम धरती, न धन चाहता हूँ।
कृपा का तेरी एक, कण चाहता हूँ।।

रटे नाम तेरा वह, चाहूँ मैं रसना।
सुनूं यश तेरा, वह श्रवण चाहता हूँ।।१।।

विमल ज्ञान धारा से, मस्तिष्क उर्वर।
वह श्रद्धा से भरपूर मन चाहता हूँ।।२।।

करें दिव्य दर्शन, तेरा जो निरन्तर।
वही भाग्यशाली, नयन चाहता हूँ।।३।।

नहीं चाहना है मुझे स्वर्ण छवि की।
मैं केवल तुम्हें, प्राण धन चाहता हूँ।।४।।

'प्रकाश' आत्मा में, आलोक तेरा हो।
परम ज्योति प्रत्येक, क्षण चाहता हूँ।।५।।

❖❖

कांटे से भी खराब है

काटे से भी खराब है, जिस गुल में बू न हो ।
वीराने के समान है, जिस दिल में तू न हो ।।

गूंगी जबां हो जिस पे, तेरी गुफ़्तगू न हो ।
जल जाये दिल वह, जिस में तेरी जुस्तजू न हो ।।१।।

इन्सां है वह जो, आप सा जाने जहान को ।
तफरीक जिसके दिल में, कभी मैं व तू न हो ।।२।।

कुछ कर ले काम नेक, कि फुर्सत का वक्त है ।
हासिल जो बात आज है, शायद वह कल न हो ।।३।।

खोले हुए हों हाथ, जब दुनियाँ से हम जुदा ।
लिपटी हुई कफ़न में कोई आरजू न हो ।।४।।

❖❖

दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से
अधिक दुःखदायी होता है ।

कबीर के दोहे

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोय
इक दिन ऐसा आएगा मैं रौंदूगी तोय।
आए हैं सो जायेंगे राजा, रंक, फ़कीर
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर।
निर्बल को न सताइए जाकी मोटी हाय
बिना जीव की खाल से लोह भस्म हो जाय।
चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।

हाड़ जले ज्यूं लाकड़ी
केश जले ज्यूं घास
सब जग जलता देख के
भये कबीर उदास।

दुःख में सुमिरन सब करें
सुख में करै न कोय
जो सुख में सुमिरन करै
तो दुःख काहे को होय।

❖❖

कबीरा जब हम पैदा हुए

"कबीरा जब हम पैदा हुए जग हंसा हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो हम हँसे जग रोये।।

चदरिया झीनी रे झीनी
झीनी रे झीनी झीनी झीनी
राम नाम रस भीनी चदरिया
झीनी रे झीनी...

अष्ट कमल का चरखा बनाया
पाँच तत्व की पूनी
नौ-दस मास बुनन को लागे
मूरख मैली कीनी चदरिया
झीनी रे झीनी...

जब मोरी चादर बन घर आई
रंगरेज को दीनी
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने
कि लालो लाल कर दीनी चदरिया...

चादर ओढ़ शंका मत करियो
ये दो दिन तुम को दीनी
मूरख लोग भेद नहीं जाने
दिन दिन मैली कीनी
चदरिया झीनी रे झीनी...

ध्रुव प्रह्लाद सुदामा ने ओढ़ी
शुकदेव ने निर्मल कीनी
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी
ज्यूँ की त्यूँ धर दीनी
चदरिया झीनी रे झीनी...

कैसी प्रभु तूने यह कायनात बांधी

कैसी प्रभु तूने यह कायनात बांधी।
एक दिन के पीछे एक रात बाँधी साथ-साथ बांधी
कभी थकते नहीं हैं ये घोड़े
तूने सूरज के रथ में जो जोड़े
रजनी ब्याहने चला चांद दुल्हा बना
साथ चन्द्रमा के तारों की बारात बांधी...
कैसी खूबी से बांधे ये मौसम
वर्षा, सर्दी, हेमन्त और ग्रीष्म
ये बहार का समां और पतझड़ की खिज़ां
हवा बादलों के बीच बरसात बांधी।
पक्षी जलचर व जन्तु चौपाये
तूने सबके हैं जोड़े बनाये
नाग और नागिन राग और रागिनी
साथ स्त्री और पुरूष की भी जात बांधी...।
तू ही सबका पिता तू ही मात है
जो समझ में न आये तू वो बात है
तेरी क्या बात है सौ की एक बात है
तूने हर बात में है कोई बात बांधी...।
नत्था सिंह है अनन्त तेरी माया
जग के कण-कण में तू है समाया
जग से बाहर नहीं फिर भी ज़ाहिर नहीं
अपने दामन में ऐसी करामात बांधी...।

❖❖

चंचल मन मत कर

चंचल मन मत कर कुटिलाई
बीते जन्म अनेकों मूरख, अजहूँ समझ न आयी।
परम पुनीत वेद पथ तज कर, औघट घाट नहायी ।।

धर्म अर्थ काम मोक्ष के फल चारों सुखदायी।
अधकचरे डोरे डारत है निपट निर्लज्ज अन्यायी ।।

श्वान समान घूमता डोले, जन जन याचत जाई।
फंसयो दीनता के चक्कर में, तां पर चाहत भलाई ।।

जो सुख चाहे तो केवल मान सीख सुखदायी।
तज गठरी अवगुण सिर पर से, कर ले नेक कमायी ।।

❖❖

तेरे फूलों से भी प्यार तेरे काँटो से भी प्यार
जो भी देना चाहे दे दे करतार दुनिया के तारन हार
चाहे दु:ख दे चाहे सुख दे हँसी भरा संसार
आँसू भरा संसार। तेरे फूलों....

हमको दोनों हैं पसन्द तेरी धूप और छाया
किश्ती किनारे लगा है नाव बीच मझदार
चाहे डुबो चाहे ले चल पार। तेरे फूलों....

छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे

छुप नहीं सकते पाप तुम्हारे ऐ मूर्ख इन्सान
सब कुछ देख रहा भगवान

देखने में तू भोला भाला, मुँह का मीठा, मन का काला
सूरत से इन्सान बना है, सीरत से शैतान,
सब कुछ देख रहा भगवान...

चाहे कितना यज्ञ रचा ले, चाहे कितने पाठ पढ़ा ले
बिना राम का जाप किये, सब कर्म निष्फल जान
सब कुछ देख रहा भगवान...

फिक्र न कर दिन आयेगा, भेद तेरा, सब खुल जायेगा
तेरी देह से निकलेंगे जब तड़प-तड़प कर प्राण
सब कुछ देख रहा भगवान...

❖❖

दो चीज़ें मनुष्य का विनाश करने वाली हैं :
मान बड़ाई के लिए दौड़ना और निर्धनता से डरना।

जब तेरी डोली निकाली जायेगी

जब तेरी डोली निकाली जायेगी,
बिन मुहुर्त ही उठा ली जायेगी ।।

सब महल और माढ़ियां यहाँ रह जाएँगी,
तन से जब यह 'रूह' निकाली जायेगी ।।
बिन मुहुर्त...

वक्त है कुछ कूच का सामान कर,
फिर तबीयत कब संभाली जाएगी ।।
बिन मुहुर्त...

ज़र्रे-ज़र्रे में नज़र आयेगा वह,
आँख जब उससे मिला ली जाएगी ।।
बिन मुहुर्त...

काम, क्रोध, लोभ, मोह सब जाए छूट,
ज्योति जब मन में जगा ली जाएगी ।।
बिन मुहुर्त...

जब बने शैदा ही उसके प्रेम में,
खाक फिर दुनियाँ पै डाली जाएगी ।।
बिन मुहुर्त...

वीर दीवानगी में है मज़ा,
जब लगन प्रभु से लगा ली जाएगी ।।
बिन मुहुर्त...

❖❖

जब नैया तेरी डोले

जब नैया तेरी डोले
और मन तेरा घबराये
तू जप कर ले, तू तप कर ले ।।

जब श्रद्धा तेरी डगमग हो,
और सुख शांति खो जाये
तब जप कर ले, तब तप कर ले ।।

गंगा स्नान करना क्यूं क्यूं,
काशी में करवट लेना क्यूं क्यूं,
अरे मन मंदिर में मूरत बिठाकर
तू जप कर ले तू तप करले ।।

क्यों भूला ब्रह्मा पुत्र है तू
क्यों भूला उनका अंश है तू
अरे दिव्य ज्ञान पाने के लिए
तू जप कर ले, तू तप कर ले ।।

जो मांगे सुख सम्पत्ति तुझको मिले
जो मांगे दर्शन तुझको मिले
अरे दिव्य दान पाने के लिए
तू जप कर ले तू तप करले ।।

❖❖

जब दर पे तुम्हारे

जब दर पे तुम्हारे ही अधमों का ठिकाना है
फिर मेरी ही किस्मत में क्यों रंज उठाना है
तारोगे तो तर लेंगे, छोड़ोगे तो बैठे हैं
दरबार से उठकरके, हरगिज़ नहीं जाना है
जब दर पे तुम्हारे.................

मेरी तो कोई करनी, निभने की नहीं भगवन
जैसे भी निभाओगे, अब तुम को निभाना है
जब दर पे तुम्हारे.................

फरियाद के सुनने में अब कौन सिवा तेरे
जब तुम न सुनो मेरी, फिर किस को सुनाना है
जब दर पे तुम्हारे.................

दृगबिन्दू की शक्लों में ख्वाईश तो है इस दिल की
ज़रीया तो है आँखों का, आँसू का बहाना है
जब दर पे तुम्हारे.................

❖❖

जो मनुष्य विपत्ति में भी अपने ऊपर ईश्वर की कृपा को देख सकता है, वह कभी मृत्यु के कष्ट के अधीन नहीं हो सकता।

ज़रा आ शरण में तू ओउम् की

ज़रा आ शरण में तू ओउम् की, मेरा ओउम् करुणानिधान है ।
कण-कण में है रमा हुआ, पत्ते-पत्ते में विद्यमान है ।।

ऋषि मुनि पा इसको तर गये योगी भी झोलियाँ भर गये ।
अन्त नेति हैं कर गए, ये नाम इतना महान है ।।

इस नाम से तू लगा लगन, दिन रात इसमें तू हो मगन ।
तुझे शक्ति इक मिल जाएगी, ये नाम मुक्ति का धाम है ।।

ये नाम इतना महान् है, इस में भरा विज्ञान है ।
लहर-लहर करती गान है, मेरे आउेम् का ही नाम है ।।

इस नाम में इतना असर, दुःख दर्द पीड़ा का न डर ।
इच्छा पूर्ण हो तेरी प्रभु मेरे देवता का प्रमाण है ।।

❖❖

"सूरज के निकलने मात्र से ही अन्धेरा दूर हो जाता है, पर ज्ञान प्राप्त कर लेने भर से मन का अंधेरा दूर नहीं होता है। मन की कलुषता तो तभी दूर होती है, जब ज्ञान का उपयोग मनुष्य सत्पथ पर चलने के लिए करता है ।"

-आचार्य सुधांशु

ज़रा तो इतना बता दो भगवान

ज़रा तो इतना बता दो भगवान
लग्न ये कैसी लगा रहे हो।
मुझी में रहकर मुझी से मेरी
यह खोज कैसी करा रहे हो।।

हृदय भी तुम हो, तुम ही हो प्रियतम
प्रेम भी तुम हो तुम ही हो प्रेमी
पुकारता मन तुम ही को क्यों है
तुम ही जो मन में समा रहे हो।।

सीप भी तुम हो तुम्हीं हो मोती
दीप भी तुम हो, तुम ही हो ज्योति
तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को ढूंढूं
नयी यह लीला बता रहे हो।

मन भी तुम हो तुम्हीं हो रचना
संगीत तुम हो तुम ही हो रसना।
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ
नयी यह रीति बता रहे हो।।

कर्मा भी तुम हो तुम ही हो कर्त्ता
धर्म भी तुम हो तुम ही हो धरता
निमित्त कारण मुझे बना कर
यह नाच कैसा नचा रहे हो।।

❖❖

जिस आदमी का सर झुके

जिस आदमी का सर झुके भगवान के आगे
सारी दुनियाँ झुकती है उस इन्सान के आगे

खुले आकाश में उड़ती पतंगें साथ में डोरी
उसे क्या डर भला जिसकी प्रभु के हाथ में डोरी
ताकत फीकी पड़ती है उस बलवान के आगे।।१।।

बसे वह देवता बन कर जमाने के ख्यालों में
उसी के नाम के चर्चे अंधेरों में उजालों में
सूरज भी क्या चमकेगा उसकी शान के आगे।।२।।

बड़े से भी बड़ा लालच उसे फिसला नहीं सकता
मुसीबत के दिनों में वह कभी घबरा नहीं सकता
उसको ठहरा पाओगे हर तूफान के आगे।।३।।

वह सारे इम्तहानों में हमेशा पास होता है
"पथिक" जीवन की राहों में न कभी उदास होता है
मंज़िल खुद आ जाती है उस मेहमान के आगे।।

❖❖

बिनु विश्वास भगति नहिं, तेहि बिन, द्रवहि न राम।
राम कृपा बिनु सपनेंहु जीव न लहे विश्रामा।।

जन्म देने वाले इतना तो बोल रे

जन्म देने वाले इतना तो बोल रे
कैसे चुकाऊं इन सांसों का मोल रे

तेरी कृपा से मिला मुझको ये तन
जिसमें बसाऊं तुझे दिया है वो मन

तन की तो खोली आँखें मन की भी खोल रे
जन्म देने वाले इतना तो बोल रे।।

मैंने किया न कोई दान धर्म
छल से भरे हैं मेरे सारे कर्म
नाम भुलाया मैंने तेरा अनमोल रे

मद में हमेशा रहा मैं सदा चूर-चूर
मन्दिरों से भगवान् मैं रहा दूर-दूर
किसी से न बोले मैंने दो मीठे बोल रे।।

जन्म देने वाले इतना तो बोल रे.........

❖❖

नाम सिमरण का चस्का लगता है बड़ा कठिन, पर एक बार जहाँ चस्का लगा, वहाँ फिर एक पल भी नाम से खाली नहीं जाता है।

जन्म-जन्म का दुखिया प्राणी

जन्म-जन्म का दुखिया प्राणी
आया शरण तुम्हारी, प्रभु आया
कदम-कदम पर घोर मुसीबत, सिर पर विपदा भारी
प्रभु आया शरण तुम्हारी...

उठी है चारों ओर अंधेरी, बुझे न दीपक मेरा
मेरी जीवन की कुटिया में छाये न कभी अंधेरा
तेज हवा से बचाकर इसे करना तुम रखवारी
प्रभु आया शरण तुम्हारी...

ध्रुव की भक्ति मुझको देना, वीर अभिमन्यु की शक्ति देना
वीर कर्ण सा मुझे बनाना, दुनियाँ में बलकारी
प्रभु आया शरण तुम्हारा...

मेरे सारे संकट हरना, शरणागत की रक्षा करना
तुम बिन मेरा इस दुनियाँ में कोई नहीं हितकारी
प्रभु आया शरण तुम्हारी...

❖❖

चार चीज़ों पर भरोसा रखें :
भगवान, सत्य, पुरुषार्थ और स्वार्थहीन मित्र

जीवन है बेकार भजन बिन

जीवन है बेकार, भजन बिन जीवन है बेकार-२
बीत चुका सो बीत चुका है, अगला जन्म संवार
भजन बिन जीवन...

माया ने तुझको बहकाया,
संग चले न तेरी काया,
क्यों बनता होशियार,
भजन बिन जीवन...

धन, दौलत और महल खज़ाना,
जिसको मूर्ख अपना जाना,
जायेगा हाथ पसार,
भजन बिन जीवन...

दीन दयाल की शरण में आओ,
अपना जीवन सफल बनाओ
तब जो उद्धार,
भजन बिन जीवन...

छोड़ के झूठे रिश्ते नाते
कर ले प्रभु से प्यार,
भजन बिन जीवन...

❖❖

जीवन खत्म हुआ तो

जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया।
जब शमां बुझ गई तो महफिल में रंग आया।।

मन की मशीनरी ने तब ठीक चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर एक पुर्ज़े पर जंग आया।।

फुरसत के वक्त में न सुमिरन का वक्त निकला।
उस वक्त, वक्त मांगा, जब वक्त तंग आया।।

आयु ने 'नत्थासिंह' जब हथियार फैंक डाले।
यमराज फौज ले के करने को जंग आया।।

जीवन खत्म हुआ तो..................

❖❖

सेहत, मान और धन हाथ से निकल जाये तो भी प्रयत्न से उसे प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु हाथ से निकला समय कभी वापस नहीं लौटता। अतः हीरे जवाहरात से भी मूल्यवान समय को खर्च करते समय अवश्य विचारें, विचार कर ही इसका समुचित उपयोग करें।

जिन्दगी का सफर

जिन्दगी का सफर करने वाले।
अपने मन का दीया तो जला ले।
वक्त की धार यह कह रही है।
कष्ट क्यों आत्मा सह रही है।
देख ऐसी जगह तू खड़ा है
ज्ञान गंगा जहां बह रही है।
बढ़ के गंगा में डुबकी लगा ले।
अपने मन का दीया..............

रात लम्बी है गहरा अंधेरा।
कौन जाने कहाँ हो बसेरा।
तू है अनजान मंज़िल का राही
चलते रहना ही है काम तेरा।
रोशनी से डगर जगमगा ले।
अपने मन का दीया..............

सूनी-सूनी ये मंज़िल की राहें
चूमना तेरे कदमों को चाहें
गहन वन में कहीं खो न जाना।
भटक जाएं न तेरी निगाहें।
हर कदम सोच कर तू उठाले।
अपने मन का दीया..............

बस तुझे है अकेले ही चलना।
बहुत मुमकिन है गिरना फिसलना।
गिर के गिरना नहीं बात कुछ भी।
है बड़ी बात गिर के सम्भलना।
यह 'पथिक' बात दिल में बसा ले।
अपने मन का दीया..............

ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं

पा के सुंदर बदन, कर प्रभु का भजन।
ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं।।

जो आया यहां उसको जाना पड़े।
दुनियाँ फानी का कोई भरोसा नहीं।।

बालपन खेल और कूद में खोया।
फिर जवानी का आसार आने लगा।।

इस सुन्दर बेला में कर कमाई भली।
नौजवानी का कोई भरोसा नहीं।।

अरबों वाले गये खरबों वाले गये।
कितने गोली व गोले रिसाले गये।।

कितने राजा गये कितनी रानी गई।
राजधानी का कोई भरोसा नहीं।।

श्रेष्ठ जीवन बना, कर सभी का भला।
तेरे जीवन में सुख शांति आ जायेगी।।

अगर करेगा भला तेरा होगा भला।
बद गुमानी का कोई भरोसा नहीं।।

खाली हाथ जहां से सिकन्दर गया।
सब खज़ाने की चाबी धरी रह गई।।

वैद्य लुकमान को भी कज़ां खा गई।
लाभ हानि का कोई भरोसा नहीं।।

तू ही इष्ट मेरा

तू ही इष्ट मेरा, तू ही देवता है ।
तू ही बन्धु मेरा, तू ही पिता है ।।

नहीं चाहना है कोई और दिल में ।
तुझे चाहता हूँ, यही चाहना है ।।१।।

रहा ढूंढ है तुझ को, कब से ज़माना ।
तू दिल में है, और दर्दे दिल की दवा है ।।२।।

खतावार है दरअसल अहले दुनियाँ ।
फ़कत इक तू ही, दुनियाँ में बेखता है ।।३।।

जहालत से हम तुझ को, देखें न देखें ।
मगर तू हमें, हर घड़ी देखता है ।।४।।

बहुत कोशिशें की, बहुत सिर खपाया ।
समझ में न आया, कि संसार क्या है ।।५।।

अगर दर्दे दिल है तो दिल को टटोलो ।
इस दिल में ही दर्दे दिल की दवा है ।।६।।

जवानी जवानी में कुछ काम कर लो ।
समझते हो जिसको जवानी, हवा है ।।७।।

पता पत्ता-पत्ता दे रहा है ।
सरासर गलत है कि तू लापता है ।।८।।

मुसाफिर जरा इस मुसाफिर से पूछो ।
कहाँ से चला है? कहाँ जा रहा है ।।९।।

तू कर प्रियतम से प्रीत

तू कर प्रियतम से प्रीत यूं ही दिन बीतते जाते हैं,
तू हार के बाज़ी जीत यूं ही दिन बीतते जोते हैं।

शुरू से है यह तानाबाना आने के संग जाना,
कुएं से भर-भर लौटे आये खाली हुए रवाना,
है यही जगत् की रीत यूं ही दिन बीतते जाते हैं।

दुःख की धूप कहीं है सिर पर, कहीं है सुख की छाया,
बदल-बदल कर समय सभी पर वारी-वारी आया,
वर्षा, गर्मी कभी शीत यूं ही दिन बीतते जाते हैं।

सैंकड़ों संगी साथी सब जो बने हैं तेरे सहारे,
तू इनका है बहुत ही प्यारा ये हैं तेरे प्यारे,
परवाह नहीं कोई मीत नहीं यूं ही दिन बीतते जाते हैं।

अब भी 'नत्था सिंह' समझ जा काफी समय बिताया,
खुद बेसमझ ज़रा न समझा, औरों को समझाया,
लिख लिखकर गाया गीत यूं ही दिन बीतते जाते हैं।

तू कर प्रियतम से प्रीत..............

❖❖

भक्त भगवान की आत्मा है वह भगवान का जीवन है, प्राण हैं।

तू प्यार का सागर है

तू प्यार का सागर है तेरी इक बूंद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने चले जायेंगे जहाँ से हम
तू प्यार का सागर है..................

घायल मन का पागल पंछी उड़ने को बेकरार
पंख है कोमल आँख है धुंधली, जाना है सागर पार
अब तू ही इसे समझा राह भूले थे कहाँ से हम।
तू प्यार का सागर है..................

इधर झूम के गाये जिन्दगी, उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी
कानों में ज़रा कह दे कि आये कौन दिशा से हम।
तू प्यार का सागर है..................

❖❖

परमात्मा जिसके साथ है, सफलता उसके हाथ है। अपना मनोबल बढ़ायें। अनागत भय से भयभीत न हों। आज को अच्छा बनाने के लिए पुरुषार्थ करें। प्राप्त वस्तु में सन्तोष और अप्राप्त वस्तु के लिए बेचैन न हों।

तेरा पार किसी ने

तेरा पार किसी ने पाया नहीं ।
तू दृष्टि किसी की भी आया नहीं ।।

न कोई खास मुकाम तुम्हारा ।
जिधर किधर तेरा चमत्कारा ।।
नस नाड़ी बंधन से न्यारा,
माता-पिता सुत, जाया नहीं ।।१।।

बिन हाथों यह जगत् रचाया,
पात-पात में आप समाया ।
नाना विधि फलफूल उगाया,
तुझको किसी ने बनाया नहीं ।।२।।

अनन्त अपार वेदों ने गाया,
रचना देख चकित तेरी माया ।
जो भक्त तेरे दर पे आया
उस को रिक्त लौटाया नहीं ।।३।।

❖❖

"नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं ।"

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार,
उदासी मन काहे को करे,
काहे को करे, काहे को डरे।

नैया कर दे उसके हवाले,
लहर-लहर प्रभु आप सम्भाले,
प्रभु आप ही उतारें तेरा भार। उदासी...

काबू में पतवार उसी के,
काबू में रफ्तार उसी के,
बाज़ी जीत जाये चाहे हार। उदासी...

गर निर्दोष तुझे क्या है,
हर पल में साथी ईश्वर है,
सच्ची भावना से कर ले पुकार। उदासी...

सहज किनारा मिल जायेगा,
परम सहारा मिल जायेगा,
डोर सौंप के तो देख एक बार। उदासी...

❖❖

"जब तक सांसारिक सुख लेने की वृत्ति नहीं मिटेगी, तब तक कितना ही पढ़-लिख लें, कितने ही चतुर और समझदार बन जायें, कितनी ही योग्यता का सम्पादन कर लें, कितने ही व्याख्यानदाता बन जायें, कितनी ही पुस्तकें लिख लें, पर परम-शान्ति नहीं मिलेगी।"

तेरा वर्णन

तेरा वर्णन स्पष्ट इक इक अणु गुण धाम करता है।
चन्द्रमा दूज का झुककर तुझे प्रणाम करता है।।

अनादि काल से सूरज उदय और अस्त होता है।
दण्डवत् तेरे चरणों में सुबह और शाम करता है।।

तेरे भय से ही तो आकाश का रंग पड़ गया नीला।
भागा फिरता है वायु क्या कभी आराम करता है।।

तेरी महिमा को देख कर सभी मनीषी चकित होते।
चाकरी तेरी ये, ब्रह्माण्ड जो बेदाम करता है।।

❖❖

भगवान ही सब साधनों में साध्य है और सब चराचर प्राणियों में भगवान को देखकर सर्वत्र अखण्ड-भगवद्-बुद्धि को स्थिर रखना और लोकोपकार, तन, मन और प्राण अर्पण करना ही सच्ची हरिभक्ति है।

तेरे दर को छोड़कर

तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं।।

जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाये हैं।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं।।
हूं शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊँ मैं।।१।।

मेरे पाप कर्म ही तुझ से, प्रीत न करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलूं आप से, रोक मुझे ये लेते हैं।।
कैसे स्वामी आप के, दर्शन पाऊँ मैं।।२।।

है तू नाथ वरों का दाता, तुझ से सब वर पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं।।
छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊं मैं।।३।।

जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उम्र संभालूं मैं।
प्रेम पाश में बंधा आपके, गीत प्रेम के गालूं मैं।।
जीवन प्यारे 'देश' का सफल बनाऊँ मैं।।४।।

❖❖

"सत्संग एक संजीवनी है।"
-आचार्य सुधाँशु

तेरे चरणां विच

तेरे चरणां विच रवाँ मैं तेरा नाम जपते-जपते
निकलनगे प्राण मेरे तैनूँ याद करदे-करदे। तेरे चरणां विच...

बिसरे कदी ना मैनूँ तेरा नाम हे प्रभु जी-२
मेरी अख वी ना झपके दीदार करदे-२ तेरे चरणां विच...

दुनियां दी भीड़ अन्दर दामन ना तेरा छोड़ा-२
रब्बा मैं डिग न पवां हंकार करदे-करदे। तेरे चरणां विच...

हे दो जहां दे मलिक तू सब नुँ जानदा एँ-२
कई टुट गये जहां तो तकरार करदे करदे। तेरे चरणां विच...

तेरी भक्ति दा प्याला पींदा ए कोई-कोई
उम्रां नी बीत गइयां फरियाद करदे-करदे। तेरे चरणां विच...

तेरी शरण विच आके विश्राम मन नुँ आया।
मुददतां ने बीत गइयां फरियाद करदे-करदे। तेरे चरणां विच...

❖❖

राम नाम मनि दीप धरू, जोह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरहुँ जो चाहसि उजियारा।।

तेरे तन में राम तेरे मन में राम

तेरे तन में राम, तेरे मन में राम
तेरे रोम रोम में राम रे
राम सिमर ले ध्यान लगाले
छोड़ जगत के काम रे
बोलो राम राम राम बोलो राम राम राम

माया में तू उलझा उलझा दर दर धूल उड़ाये
अब क्यों करता मन को भारी जब माया हाथ छुड़ाये

दिन तो बीता दौड़-धूप में ढल जाये न शाम रे
ध्यान लगाले राम सिमर ले छोड़ जगत के काम रे
बोलो राम ...

तन के भीतर पांच लुटेरे डाल रहे हैं डेरा
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ने तुझको कैसे घेरा

भूल गया तू राम रटन को, भूला पुण्य के काम रे
राम सिमर ले ध्यान लगाले छोड़ जगत के काम रे
बोलो राम ...

बचपन बीता खेल खेल में भरी जवानी सोया
देख बुढ़ापा अब क्यों सोचे क्या पाया क्या खोया

देर नहीं है अब भी बन्दे ले ले उसका नाम रे
राम सिमर ले ध्यान लगाले छोड़ जगत के काम रे,
बोलो राम ...

तेरी रहमतों का

तेरी रहमतों का सहारा ना होता
तो एक पल भी मेरा गुजारा न होता ।

तेरी रहमतों से मैं जिन्दा हूँ मालिक
तेरी बंदगी से मैं बन्दा हूँ मालिक
अगर तू ना होता कोई हमारा ना होता ।।
तो एक पल भी मेरा ...

अल्पज्ञ हूँ मैं दाता, जो तुझे भूल जाऊँ
जो ठोकर लगे तो तेरे पास आऊँ
वरना मेरा यहाँ गुजारा ना होता
तो एक पल भी मेरा ...

तेरे भक्त विष पीकर भी मुस्कराते
तेरी इच्छा पूर्ण हो यही गीत गाते
तू अगर अपने भक्तों का प्यारा ना होता
तो एक पल भी मेरा ...

ये संसार सागर महाजाल घेरा
मेरी जिन्दगी में है छाया अन्धेरा
देता न ज्योति तू उजाला न होता
तो एक पल भी मेरा ...

तेरी सांसें गिनी हुई है

तेरी सांसे गिनी हुई है जरा सोच समझकर जीना ।
प्यारे मन की प्यास बुझाने, प्याला हरि नाम का पीना ।।

जीवन तेरा एक बुलबुला अब टूटा अब फूटा ।
सांसो का भी रिश्ता क्या है, अब टूटा बस टूटा ।।

जीवन तेरा ऐसा जीवन फिर ये मिले कभी ना ।
तेरी सांसे गिनी हुई जरा सोच समझकर जीना ।।

❖❖

दर्शन पाऊँ

दर्शन पाऊँ कैसे तेरा
तेरा परम धाम अति ऊँचा
नीचा है घर मेरा। दर्शन पाऊँ....
तू है निर्विकार निर्भोगी
मैं माया का चेरा। दर्शन पाऊँ....
नहीं विदेह कहीं आना जाना
बन्द हुआ चक फेरा। दर्शन पाऊँ....

तेरी बन्दगी जो की है

तेरी बंदगी जो की है मुझे खुशी मिली है
करूं कैसे शुक्रिया कोई लफ्ज़ भी नहीं है

मैं था बेसहारा गमें दो जहां का मारा,
तूने तरस खा के दाता मेरे भाग्य को संवारा
तेरे हर ऐहसां के आगे मेरी हर नज़र झुकी है।
करूं कैसे शुक्रिया..........

मैं तो अपने ही गुनाहों में दफन हो गया था
अपनी खुदी पे खुद बेखबर सो गया था
अब तूने है जगाया मेरी आँख अब खुली है।
करूं कैसे शुक्रिया..........

जैसे श्वान कोई मालिक बगैर डोले
मेरा भी हाल वो था मेरी आत्मा ये बोले
अब डर नहीं है कोई, तूने डोर थाम ली है।
करूं कैसे शुक्रिया..........

❖❖

बुरी आदतें सिखाए, दोष और ऐब करने के लिए प्रेरित करे, वह मित्र नहीं शत्रु है।

-आचार्य सुधाँशु

तन में बल सेवा नहीं

तन में बल सेवा नहीं मन में प्रेम भाव
बुद्धि ज्ञान भी लुट गया पड़ पापों के दांव।।

पाप किये ताप किये करत न मानी हार
देख पड़ा हूँ द्वार पर रखले चाहे मार।।

मन मोती मिट गया टूट चूर हो चूर
तेरा भरोसा है एक अब मुझे न करना दूर।।

राम नाम आप है संकट मोचन हार
क्षमा करो अपराध सब बेड़ा दो अब तार।।

❖❖

हँस-हँसकर किया पाप रो-रो कर भोगना पड़ता है। हाथों से लगाई गांठों को एक दिन दांतों से खोलना पड़ता है। कष्ट सहकर किया तप एक दिन सुख शान्ति का कारण बनता है।

-आचार्य सुधाँशु

तस्वीर तेरी भगवन

तस्वीर तेरी भगवन, नज़रों में समाई है,
नज़रों में समाई है, नज़रों में समाई है,
तेरे नाम की मस्ती ने सारी दुनियाँ भुलाई है,
सारी दुनियाँ भुलाई है...

उपकार तेरा भगवन्, हरगिज न भुलाऊँगा
तेरे नाम की महिमा को, दिन रात मैं गाऊँगा
तेरे नाम की मस्ती ने, सारी दुनियाँ भुलाई है...

प्रकाश बरसता है, आशा की नागरिया में
बिखरें हैं अब मोती, जीवन की डगरिया में
तेरी जोत से मैंने भी, इक जोत जगाई है...

तुम ज्योति कलश भगवन्, मैं एक पतँगा हूँ
शबरी की तरह मैं भी, तेरे नाम में रंगा हूँ
तेरे नाम की ये मस्ती, अंग-अंग में समाई है

❖❖

अगर उस करुणासागर की करुणा की एक बूँद भी तुम पर गिर जाये तो दुनिया में कुछ भी माँगने की तुम्हें ज़रूरत नहीं रह जायेगी।

तुम्हीं दीनानाथ हो

हृदय में बस प्रकाश तुम्हारा ही नाथ हो ।
माता तुम्हीं, पिता तुम्हीं दीनानाथ हो ।।

आपस के राग द्वेष से मन हो रहा मलिन ।
हृदय में गंगा जल सी बहा प्रेम धार दो ।।

दर्शन की चाह लेके मैं आया हूँ द्वार पर ।
अब दर्श दिखाओ पिता पूरा साथ हो ।।

मिलने की यूँ तड़प बढ़ी नाथ प्राण को ।
करूणा का तेरी सर पे मेरे प्रभु हाथ हो ।।

मेरा तो रोम रोम तुम्हें कर रहा प्रणाम ।
मंदिर में मन के एक तुम्हारा निवास हो ।।

❖❖

"कामनाओं, कल्पनाओं और काम-काज के मायाजाल से निकलकर कुछ समय परमात्मा का प्यार पाने के लिए अवश्य दो। परम प्रभु का संग, ईश्वर का विश्वास और भगवद् सिमरन कभी व्यर्थ नहीं जाता। अशान्त जगत से पीड़ित आत्मा का शरणस्थल केवल परमात्मा है, उसे ही ध्याओ, उसे ही भजो, उसे ही पुकारो ।"

-आचार्य सुधांशु

दया कर दान भक्ति का

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ
अंधेरे दिल में आकर, परम ज्योति जला देना
दया करना हमारी..............

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर
हमें आपस में मिलजुल कर, प्रभु रहना सिखा देना
दया करना हमारी..............

हमारा धर्म हो सेवा, हमारा कर्म हो सेवा
सदा ईमान हो सेवा, सफल जीवन बना देना
दया करना हमारी..............

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना
वतन पर जाँ फ़िदा करना, प्रभो हमको सिखा देना
दया करना हमारी..............

❖❖

"मानव तू सैंकड़ों हाथों से कमा
और हज़ारों हाथों से दान दे।"

देव तुम्हारे कई उपासक

देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं
सेवा में बहुमूल्य भेंटे, वे लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।

धूमधाम से ठाटबाट से, मन्दिर में वह आते हैं,
सोना चाँदी हीरे मोती, ताँबा तुम्हें चढ़ाते हैं।

मैं ही हूँ ऐसा प्रभु जी, जो कुछ भी साथ नहीं लाया,
फिर भी साहस कर मन्दिर में, दर्शन करने को आया।

धूप दीप नैवेध नहीं है, झाँकी का शृंगार नहीं
हन्त गले में पहनाने को, फूलों का भी हार नहीं।

स्तवन करूँ कैसे किस स्वर में, स्वर में माधुरी है नहीं
मन के भाव प्रकट करने को, मुझ में चातुरी है नहीं।

नहीं दान है नहीं दक्षिणा, रीते हाथ चला आया,
पूजा की भी विधि न जानूँ, फिर भी नाथ चला आया।

पूजा और पुजापा प्रभुवर इसी पुजारी को समझो,
दान दक्षिणा और निछावर इसी 'पथिक' को तुम समझो।

मैं उन्मत्त स्नेह रस लोभी हृदय भेंट में लाया हूँ,
जो कुछ भी है पास यही है इसे चढ़ाने आया हूँ।

चरणों में है यही समर्पित, दीन बन्धु स्वीकार करो,
है यह नाथ तुम्हारी वस्तु, ठुकरा दो या प्यार करो।

देखी बहुत निराली महिमा सत्संग की

देखी बहुत निराली महिमा सत्संग की।।
सत्संग अन्दर मोती हीरे,
मिलते लेकिन धीरे-धीरे
जिसने खोज निकाली।।
देखी बहुत...

सत्संग ही सब संकट तारे,
डूब रहे को सत्संग तारे
दिन दिन हो खुशहाली।।
देखी बहुत...

सत्संग सच्चा तीर्थ भाई,
करते जिनकी नेक कमाई
कर्महीन रहें खाली।
देखी बहुत...

सत्संग में प्रेम बढ़ाओ,
समय न अपना व्यर्थ गंवाओ
देख पिटे न ताली।
देखी बहुत...

❖❖

मर कर तो संसार छूटेगा ही, तुम जीते जी छोड़ने का सुख लो। नादानी और मजबूरी में छोड़ना दु:खदायी होता है। समझ कर, परख कर छोड़ना-त्याग करना आनन्ददायी होता है, सुखदायी होता है।

दयालु दया कर

दयालु दया कर, दयाकर, दयाकर, दयाकर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दे भर।।

मुझे जागते सोते हो ध्यान तेरा
विषय-वासना में फंसे मन ना मेरा
तेरा जाप करता हूँ सर को झुकाकर।।

सच्चाई के पथ पर सदा चलता जाऊँ
आये मृत्यु तो भी मैं मुस्कराऊँ
सदा अच्छी संगत में रहने का दो वरदान।।

मेरे मन मन्दिर में प्रकाश कर दो
अविद्या व अन्धकार का नाश कर दो।
विनय करता हूँ अपने सर को झुकाकर।।

❖❖

प्रेम वीराने को गुलिस्तान बना देता है
प्रेम परिचय को पहचान बना देता है
मैं आप बीती कहता हूँ औरों की नहीं।
प्रेम इन्सान को भगवान बना देता है।।

दुनियाँ बनाने वाले

दुनियाँ बनाने वाले कैसी तेरी माया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप कहीं छाया है।
पर्वतों की चोटियां हैं आसमां को चूमतीं।
रेशमी घटाएं काली पर्वतों पे घूमतीं।
कहीं चाँद, सूरज कहीं सागर को बनाया है।
कहीं बरसात कहीं..............

गुजरते पलों की टोली यह ही गुनगुना रही।
रूके न समय की गाड़ी धीरे-धीरे जा रही।
की आज और कल का तूने चक्कर क्या चलाया है।
कहीं बरसात कहीं..............

अच्छे बुरे कर्मों की है पूँजी सब के साथ में।
सभी वो खिलौने जिन की चाबी तेरे हाथ में।
नाचना पड़ा है तूने जैसे भी नचाया है।
कहीं बरसात कहीं..............

कौन सी जगह है खाली कहाँ तेरा वास है।
कहीं तू नहीं है लेकिन फिर भी सब के पास है।
किसी ने भी "पथिक" न इस उलझन को सुलझाया है।
कहीं बरसात कहीं..............

❖❖

दरबार में मेरे सत्गुरु के

दरबार में मेरे सत्गुरु के दु:ख दर्द मिटाए जाते हैं
गर्दिश के सताए लोग यहाँ सीने से लगाए जाते हैं

ये महफिल है दीवानों की, हर भक्त यहाँ दीवाना है
भर भर के प्याले प्रभु नाम के, यहाँ खूब पिलाए जाते हैं।
दरबार में मेरे सत्गुरु के.........................

ऐ जग वालो मत घबराओ, इस दर पे शीश झुकाने से
इसी दर पे ऐ नादानों, सर भेंट चढ़ाए जाते हैं
दरबार में मेरे सत्गुरु के.........................

जिन लोगों पर ऐ जग वालों, हो खास इनायत सत्गुरु की
उनको ही सन्देशा जाता है, और वो ही बुलाऐ जाते हैं
दरबार में मेरे सत्गुरु के.........................

❖❖

जिसके पास कोई कला या हुनर नहीं, विद्या, शिक्षा संस्कार नहीं परन्तु घमण्ड कूट-कूट कर भरा है; अपनी साधन सामग्री से सन्तुष्ट न हों परन्तु दूसरों की साधन सम्पति देख-देख कर अपनी लालसा की आग को बढ़ाता रहे, जो बुरे से बुरा मार्ग अपना कर धन कमाये, और थोड़ा धन पाते ही दूसरों को नीचा दिखाने का प्रयास करे, अपने स्वार्थ के लिए बुरे से बुरा कार्य करने लगे, जो ठोकर लगने पर भी सबक ग्रहण न करे, ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही पतन को प्राप्त होता है। उसे दु:ख भोगने में अधिक देर नहीं लगती।

-आचार्य सुधाँशु

धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार

सब निराकार और निर्विकार साकार बना दिया जग कैसे।
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ता, तुर्या, रचा मुक्ति का मग कैसे।।
क्या वस्तु लई, जिससे देह रची फिर बना दई रग-रग कैसे।
सब धार रहा, रम सब में रहा, फिर सब से रहा अलग कैसे।।
जब अपाणिपादी यवनों गृहीता, फिर कोई पकड़ ले पग कैसे।
जब काशी काबे में पता नहीं, फिर पता बता लगता कैसे।।
बन पृथ्वी सूरज नभ तारे किस विधि रहा तू धार।
धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार।।१।।

कर दिये सूरज से जो चमकते पदार्थ ऐसी चमक निराली कहीं नहीं।
बरसे तो भरदे जल जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं।।
नर-तन सा चोला सींव दिया, सुई धागा हाथ में कहीं नहीं।
पत्ते-पत्ते की कतरन न्यारी, तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं।।
दे भोजन कीरी कुञ्जर को, तेरे चढ़े भण्डारे कहीं नहीं।।
वह यथा योग्य बर्ताव करे, मिले रू औ रियायत कहीं नहीं।
दिन रात न्याय में फर्क पड़े ना, तेरी लगी कचहरी कहीं नहीं।
अखण्ड ज्योति अपार लीला कहूं न पायो तेरो पार।।
धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार।।२।।

जाने किस विधि गर्भ रख कर दे क्रीड़ा बालकपन की।
जाने जवानी आई कहां से, कमी रही ना यौवन की।।
फिर बुढ़ापा देकर दिखाया सबकी बनी सो एक दिन बिगड़न की।
कोई पैसे-पैसे को मुहताज है, कोई खोल रहे कोठी धन की।।
कोई पी संग कामिनी खेल करे, कोई रो-रो राख करे तन की।
कोई भटकते-भटकते उमर गंवादे, कोई तृप्ति कर रहे मन की।।
वन पर्वत भूमि टीले पे टीले, कहीं-कहीं हरियाली वन की।
कहीं ताल समुन्दर जल से भरे, कहीं चोटी चमकती पर्वत की।।

निज चरणों की भक्ति

निज चरणों की भक्ति हे राम मुझे दे दो
वाणी में भी भक्ति भगवान मुझे दे दो

इस जग से क्या लेना, मैं जग का सताया हूँ
ठुकरा के जीवन को, तेरी शरण में आया हूँ
प्रभु तेरा, गान करूँ, वो ज्ञान मुझे दे दो,
निज चरणों की भक्ति.................

मैं भूला हुआ राही, नहीं कोई सहारा है
मझधार में है नैया, और दूर किनारा है
मुझे मंज़िल मिल जाये, वो धाम मुझे दे दो
निज चरणों की भक्ति.................

तेरे नाम की वो मस्ती मुझे ऐ चढ़ जाये
पल-पल तेरा नाम जपूँ और उल्फत बढ़ जाये
खामोश रहूँ पीकर वो जाम मुझे दे दो
निज चरणों की भक्ति.................

❖❖

धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएँ
के बादलों की तरह उड़ जाते हैं।

नन्हा सा फूल हूँ मैं

नन्हा सा फूल हूँ मैं चरणों की धूल हूँ मैं
आया हूँ मैं तो तेरे द्वार प्रभु जी मेरी पूजा करो स्वीकार
गुरुजी मेरी पूजा करो स्वीकार...

मैं तो निर्गुणियाँ हूँ बस इतनी बात है
मेरे जीवन की डोरी अब तेरे हाथ है
थोड़ा सा गुण मिल जाये निर्धन को धन मिल जाये
मानूँ तुम्हारा उपकार प्रभु जी मेरी पूजा करो स्वीकार
गुरुजी मेरी पूजा करो स्वीकार...

सुन लो हमारी अर्ज़ी मुझको कुछ ज्ञान दो
जीवन को जीना सीखूं ऐसा वरदान दो
सूरज सी शान पाऊं चन्दा सा मान पाऊँ
इतना सा दे दो उपहार प्रभु जी मेरी पूजा करो स्वीकार
गुरुजी मेरी पूजा करो स्वीकार...

नन्हा से फूल हूँ मैं चरणों की धूल हूँ मैं
आया हूँ मैं तेरे द्वार प्रभु जी मेरी पूजा करो स्वीकार
गुरुजी मेरी पूजा करो स्वीकार...

नन्हा सा फूल हूँ मैं.........

माथे को जितना ढीला छोड़ कर शान्त रखेंगे चेहरे पर मुस्कुराहट, वाणी में माधुर्य यह श्रृंगार है आपका, जिसे लेकर घर से बाहर जाइये और घर लौटते हुए उसे वापस ले आइये। तो समझना कि घर में से आप सुख शान्ति लेकर के गए थे और सुख शान्ति लेकर घर आ गए।

–आचार्य सुधाँशु

नमस्ते 'प्रभुवर'

नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम् ।
नमस्ते शिवं सत्य सुन्दर स्वरूपम् ।।

नमस्ते अगोचर अगम ओजदायकम् ।
नमस्ते निरंजन निगम नीति नायकम् ।।

नमस्ते महेश्वर महा मोक्षदाता ।
नमस्ते विभो विश्वव्यापी विधाता ।।

नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी ।
नमस्ते नियन्ता त्रिलोक स्वामी ।।

पाके सुन्दर बदन

पा के सुंदर बदन, कर प्रभु का भजन।
ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं।।

जो आया यहां उसको जाना पड़े।
दुनियाँ फ़ानी का कोई भरोसा नहीं।।

बालपन खेल और कूद में खोया।
फिर जवानी का आसार आने लगा।।

इस सुन्दर बेला में कर कमाई भली।
नौजवानी का कोई भरोसा नहीं।।

अरबों वाले गये खरबों वाले गये।
कितने गोली व गोले रिसाले गये।।

कितने राजा गये कितनी रानी गई।
राजधानी का कोई भरोसा नहीं।।

श्रेष्ठ जीवन बना, कर सभी का भला।
तेरे जीवन में सुख शांति आ जायेगी।।

अगर करेगा भला तेरा होगा भला।
बद गुमानी का कोई भरोसा नहीं।।

खाली हाथ जहां से सिकन्दर गया।
सब खज़ाने की चाबी धरी रह गई।।

वैद्य लुकमान को भी कज़ां खा गई।
लाभ हानि का कोई भरोसा नहीं।।

पास रहता हूं तेरे सदा मैं अरे

पास रहता हूं तेरे सदा मैं अरे,
तू नहीं देख पाए तो मैं क्या करूँ।
मूढ़! मृग तुल्य चारों दिशाओं में तुम
ढूंढने मुझ को जाये तो मैं क्या करूँ?
कोसता-दोष देता है मुझे है सदा,
मुझे यह न दिया मुझे वह न दिया!
श्रेष्ठ सब से मनुष्य तन तुम्हें दे दिया,
सब्र तुझको न आए तो मैं क्या करूँ?
तेरे अन्तःकरण में विराजा हुआ,
कर न यह पाप करता हूँ संकेत मैं!
लिप्त विषयों में हो, न सीख मेरी भली,
ध्यान में तू न लाए तो मैं क्या करूं?
जांच अच्छे बुरे कर्म की तुझे हो सके,
इसलिए बुद्धि मैंने तुझे दी अरे!
किन्तु तू मन्दभागी अमृत छोड़कर
घोर विष आप खाए, तो मैं क्या करूँ?
फूल फल शाक मेवा व दुग्ध आदि सम,
मधुर आहार मैंने तुझे हैं दिये!
तू तम्बाकू-नशे-मद्य-मांस आदि खा,
रोग तन में बसाए तो मैं क्या करूँ?
अति सुखकर सुन्दर सुदृश्यों भरा
विश्व "प्रकाश" ये मैंने रचा
अपनी करतूत से स्वर्ग वातावरण,
नरक तू ही बनाए तो मैं क्या करूँ?

❖❖

पग-पग मुझे गिराता आया

पग पग मुझे गिराता आया ये मेरा अभिमान ।
जीवन पथ पर भटक रहा हूँ, राह दिखा भगवान् ।।

मैंने सत्य की राह न जानी
लीला तेरी न पहचानी
अपने को समझा मैं ज्ञानी
करता रहा सदा नादानी
अब डोलूं हैरान। राह दिखा भगवान्।

मन मंदिर में न दीप जलाया
ना ही तुझको शीश झुकाया
माया का फेरा है मन पर
गर्वित हूँ माटी के तन पर
हूं कितना अनजान! राह दिखा भगवान्।

नेकी छोड़ बदी अपनायी
गहरी बात समझ न आयी
अब जो हुआ उसे जाने दे
अपनी शरण में आने दे
छोड़ा सकल जहान।
राह दिखा भगवान्।

❖❖

प्रभु बंधे हुए खिंचे हुए चले आएँगे

प्रभु बंधे हुए खिंचे हुए चले आएँगे
ज़रा तारों से तारों मिला कर के देख

चाहा जिसने उसे मिला मुक्ति का धाम
तरे पत्थर लिखा जिस पर रघुवर का नाम
मेरी नैया किनारे क्यों न लगे
नाम उनका हृदय में लिख कर के देख
प्रभु बंधे हुए..

वो है ठाकुर, पुजारी तू बन कर के देख
वो है दाता, भिखारी तू बन कर के देख
उसके दर से तो खाली कोई लौटा नहीं
उसके आगे तू झोली फैला कर के देख
प्रभु बंधे हुए..

मन के मन्दिर में पगले बिठा ले उसे
जीवन नैया का केवट बना ले उसे
फिर क्या डर है उसे जो प्रभु साथ है
उसके आगे ज़रा विनती करके तो देख
प्रभु बंधे हुए..

❖❖

मनुष्य के तीन सद्गुण हैं :
आशा, विश्वास और दान।

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो ।
भंवर में है नैया इसे पार कर दो ।।

मेरी इन्द्रियां हो सदा मेरे वश में ।
मेरे मन पे मेरा ही अधिकार कर दो ।।

न शुभ कार्य करने में पीछे रहूं मैं ।
कुकर्मों से मुझको खबरदार कर दो ।।

मैं गाऊँ सदा वेद की ऋचायें ।
कि तन मन में मेरे वेदों का संचार कर दो ।।

मेरा सर झुके तेरे दर पर ।
मुझे ऐसा दुनियां में सरदार कर दो ।।

मैं समझूँ न जग में किसी को बेगाना ।
मेरा विश्व भर के लिये प्यार कर दो ।।

"पथिक" राह में हो कोई दीन दुःखिया ।
मदद के लिये मुझको तैयार कर दो ।।

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो ।
भंवर में है नैया इसे पार कर दो ।।

❖❖

जो ईश्वर के भजन पूजन में दुनिया की सारी चीज़ों को भूल जाता है उसे सभी चीजों में ईश्वर ही ईश्वर दिखलायी देने लगता है।

प्रभु मेरे जीवन को

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो
कोई खोट इस में रहने न पाये ।।

करो मेरे जीवन में ऐसा उजाला
हर श्वास हो तेरे चिन्तन की माला
मेरे दिल की दुनियाँ को इतना बदल दे
कि दुनियाँ तेरी मुझे गले से लगाये ।।

घटाओं की रिमझिम पवन के तराने
लताओं का नाच और वृक्षों के गाने
नज़र जिस तरफ जाये भगवान् मेरी
अमर ज्योति तेरी उधर मुस्कराये ।।

जगत् को मैं अपना परिवार समझूं,
परिवार को मैं तेरा उपकार समझूं
कुसंग, लोभ, अभिमान, द्वेष और आलस्य
कोई इन में मुझ को सताने न पाये ।।

❖❖

"सफल मनुष्य वही है जो किसी भी परिस्थिति में तनाव और खिंचाव को प्राप्त नहीं होता"।

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी

प्रभु जी ऽ प्रभु जी ऽ
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी।
जाकी अंग अंग बास समानी।।

प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा
जैसा चितवत चन्द्र चकोरा
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी।

प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती
जाकी जोत जले दिन राती
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी।

प्रभु जी तुम मोती हम धागा
जैसे सोने में मिलत सुहागा
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी।

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा
ऐसी भक्ति करे रैदासा
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी।

❖❖

प्रेम की कसौटी त्याग है।

पितु मातु सहायक

पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।।१।।

सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करूणा उर धारे हो।।२।।

भुलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन का कछु अंत नहीं, छिन जो विस्तारे हो।।३।।

महाराज महा महिमा तुमरी, समझे विरले बुधिवारे हो।
शुभ शांति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो।।४।।

इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सो प्रभु पाय प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो।।५।।

❖❖

सम्पूर्ण अभिमान को त्यागकर प्रभु की शरण में जाने से तुम जनम मरणादि के द्वन्दों से तर जाओगे।

प्रश्न : उत्तर

प्रश्न : जल से पतला कौन है?
कौन भूमि से भारी?
कौन अग्नि से तेज है?
कौन काजल से कारी?

उत्तर : जल से पतला ज्ञान है,
और पाप भूमि से भारी।
क्रोध अग्नि से तेज है,
और कलंक काजल से कारी।।

❖❖

विपत्ति में तथा कष्ट में और अधिक धैर्य व सूझबूझ रखो, सम्पदा में, सुख में विनम्र, सहृदय बनो, पराई वस्तु का लालच त्याग दो, छल कपट अन्याय से कमाई न करो, झूठी शान और अतिशय दिखावे से बचो, नष्ट हुई सम्पदा के दुःख से रोओ नहीं, यह माया छाया की तरह घटती बढ़ती रहती है। कभी भी दिन-रात सदा एक से नहीं रहते। प्रभु प्रेम और प्रभु विश्वास ही सच्चा सहारा है।

–आचार्य सुधाँशु

परमेश्वर के गुण गाने से

परमेश्वर के गुण गाने से खुशियों की दौलत मिलती है ।
मन से छल-कपट मिटाने से खुशियों की दौलत मिलती है ।।

दिन रात संवारा करते हो अपने बिगड़े कामों को ।
औरों की बिगड़ी बनाने से खुशियों की दौलत मिलती है ।।

सुखियों से हँसकर बोलते हो दुःखियों से भी बातें किया करो ।
दुःखियों का दुःख मिटाने से खुशियों की दौलत मिलती है ।।

धन जोड़कर रखने से सौ चिन्ताएँ लग जाती हैं ।
धन को शुभ अर्थ लगाने से खुशियों की दौलत मिलती है ।।

दुर्जन की संगति करने से बल, बुद्धि, यश और आयु घटे ।
सत्संग में प्यारे जाने से खुशियों की दौलत मिलती है ।।

❖❖

"यदि मनुष्य का स्वभाव अच्छा है तो उसके साथ उसका स्वर्ग है। उसकी प्रसन्नता से भरी दुनियाँ उसके साथ है और यदि उसका स्वभाव दोष पूर्ण है तो वह जहाँ भी बैठेगा उसका दुःख उसके साथ चलेगा ।"

–आचार्य सुधाँशु

बहे सत्संग की गंगा

बहे सत्संग की गंगा अरे मन चल नहा आयें।
बुझी ज्योति जो जीवन की उसे फिर से जगा लायें।।

यही बेला है कर ले पान प्यारे ज्ञान अमृत का।
लगा है धर्म का मेला अरे मन चल दिखा लायें।।१।।

तू ही योद्धा, तू ही योगी, तू ही है रूप संतों का।
जिसे तू भूल बैठा है, उसे फिर से दिखा लायें।।२।।

भटकता फिर रहा दर-दर धराया नाम क्यों चंचल।
करे विश्वास जग तेरा, तुझे ऐसा बना लायें।।३।।

❖❖

चार चीजों का सदा सेवन करना चाहिएः
सत्संग, संतोष, दान और दया।

बीत गये दिन भजन बिना रे

बीत गये दिन भजन बिना रे
बाल अवस्था मन खेलने में, जबहिं जवानी जब मान घणां रे।
काहे कारण मूल गंवायो, अजहुँ न गई मन की तृष्णा रे।
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, पार उतरि गये सन्त जणा रे।।

घूँघट का पट खोल री तोको पीव मिलेंगे।
घट घट में वो सांई रमता, कटुक वचन मत बोल री।। तोको...
धन जोबन को गरब न कीजे, झूठा पंचरग चोल री।। तोको...
सुन्न महल में दिवला बारिले, आसन से मत डोल री।। तोको...
जोग जुगत सों रंग महल में, पिव पायो अनमोल री।। तोको...
कहत 'कबीर' आनन्द भयो है, बाजा अनहद ढोल री।। तोको...

❖❖

माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फांस लिये कर डोले, बोले मधुरी बानी।।
केशव के कमला है बैठी, शिव के भवन भवानी।
पण्डा के मूरत है बैठी, तीरथ में भई पानी।।
योगी के योगिन है बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा है बैठी, काहू के कौड़ी कानी।।
भक्तन के भक्तिन है बैठी के ब्रह्मा के ब्रह्मानी।।
कहे कबीर सुनो भई सन्तो यह सब अकथ कहानी।।

❖❖

बोलो-बोलो कागा

बोलो-बोलो कागा मेरे कागा मेरे राम कब आयेंगे,
दुःखिया की झोंपड़ी के भाग जग जायेंगे।

आये नही साँवरे लगायी कहाँ देर रे,
चुन-चुन पंछी मैंने राखे मीठे बेर रे,
बलि-बलि जाऊँगी, जब राम मेरे खायेंगे।...

ला दे रे कागा मेरे, राम की खबरिया,
आयेंगे धनुषधारी, कौन सी डगरिया,
अंखियाँ बिछा दूँ जहाँ चरण वो टिकायेंगे।...

भोले भाले दोनों भाई बड़े रिझवार हैं।
टूटी हुई नौका के वही तो पतवार हैं।
मुझ सी अभागिन को पार कब लगायेंगे।...

बोलो-बोलो कागा.............

❖❖

"दूसरे क्या करते व कर रहे हैं, इस बात पर ध्यान न देकर हम स्वयं क्या कर रहे हैं, इस पर ध्यान देना चाहिए। यही जीवन-निर्माण की प्रक्रिया है।"

ब्रह्म ज्ञान की सीढ़ियों में

ब्रह्म ज्ञान की सीढ़ियों में, कोई-कोई विरला चढ़े,
जो चढ़ जाये सीढ़ियाँ, चौरासी लख उसी दे कटे...

मानुष तन मिला अनमोल, मैंने माटी में इसको रौला
सत्गुरु ने कृपा करके, विवेक का ताला खोला
कि माटी से कंचन करे,
जो चढ़ जाये सीढ़ियाँ चौरासी...

मैं जब से जगत में आया, था अपना आप भुलाया
गुरु ने मेरे मन मन्दिर में, है ज्ञान का दीप जलाया
कि कागा से हंस करे,
जो चढ़ जाये सीढ़ियाँ चौरासी...

गुरु काम, क्रोध से बचायें, और राग द्वेष को भगायें,
ये प्रेम का सागर बनकर, खुद पियें और सब को पिलायें,
कि सब से प्रेम करें,
जो चढ़ जाये सीढ़ियाँ चौरासी...

गुरु आया बन अवतार है, उसकी महिमा अपरम्पार है,
कोई माने या न माने, ये वो ही कृष्ण मुरार है
कि गोपियों के भाग्य बड़े,
जो चढ़ जाये सीढ़ियाँ चौरासी...

❖❖

भूले न भूले

भूले न भूले न भूले न प्रभु याद रहे।
सुख में रहे या दुःख में जैसा भी हाल रहे,
चाहे घर में हो गरीबी, चाहे मालामाल रहे,
भूले न-३

रहते नहीं हमेशा दिन एक से किसी के
जैसे भी बिताना दिन चार ज़िन्दगी के
भूले न-३

मिटते हैं शोक सारे उस देव की दया से
मुश्किल आसान होवे भगवान की कृपा से,
भूले न-३

मंज़िल है दूर तेरी साथी उसे बना ले,
भगवान को तू अपने दिल में 'पथिक' बसा ले,
भूले न-३

किसी को सोने का सुख साज।
मिल गये यदि ऋण भी कुछ आज।
चुका लेता दुःख कल ही ब्याज।
काल को नहीं, किसी की लाज।।
खोलता इधर जन्म लोचन।
मूंदती उधर मृत्यु क्षण-क्षण।
अभी उत्सव और हास-हुलास।
अभी अवसाद, अश्रु उच्छवास।।

भरोसा कर तू ईश्वर पर

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा ।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा ।

कभी सुख है, कभी दुःख है, यह जीवन धूप छाया है ।
हंसी में ही बिता डाले, बितानी ही यह माया है ।।१।।

जो सुख आवे तो हँस देना, जो दुःख आवे तो सह लेना ।
न कहना कुछ कभी जग से प्रभु से ही तू कह लेना ।।२।।

यह कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया ।
तू खुद ही धूप में बैठा, लिखे निज रूप की छाया ।।३।।

कहाँ ये था कहाँ तू था, कभी तो सोच ऐ बन्दे ।
झुकाकर शीश को कह दे, प्रभु वन्दे प्रभु वन्दे ।।४।।

बू न हो जिस गुल में, उस गुल से बेहतर खार है ।
दर्द गर दिल में न हो, ये ज़िन्दगी बेकार है ।।

❖❖

"जैसे महान पर्वत हवा के झकोरों से विकम्पित नहीं होता वैसे ही बुद्धिमान लोग निन्दा और स्तुति से विचलित नहीं होते ।"

–आचार्य सुधाँशु

भगवान मेरा जीवन

भगवान् मेरा जीवन संसार के लिए हो।
ये ज़िन्दगी हो लेकिन उपकार के लिए हो।।

हम में विवेक जागे हम धर्म को न भूलें।
चाहे हमारी गर्दन तलवार के तले हो।।१।।

सुन्दर स्वभाव मेरा दुश्मन के मन को भावे।
वह देखते ही कह दे तुम प्यार के लिए हो।।२।।

मन बुद्धि और तन से सब विश्व का भला हो।
चाहे हमारी नैया मझधार के लिए हो।।३।।

❖❖

जिस व्यक्ति को दूसरों की प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या होती है, जो अपनी प्रशंसा करने तथा दूसरे की निन्दा करने में थकता नहीं, और अपनी आलोचना करने वालों को अपना घोर शत्रु माने, अपनी बुद्धि को जो अधिक माने और दूसरों की सलाह या शिक्षा जिसे अच्छी न लगे ऐसा व्यक्ति स्वयं का शत्रु है। ऐसा व्यक्ति परमात्मा और गुरु को भी प्रिय नहीं।

-आचार्य सुधाँशु

भगवान जैसा कोई नहीं

भगवान जैसा कोई नहीं
वो तो जहान में सबसे बड़ा है
इस जग का दाता वही, आधार वही, करतार वही।
माता पिता बन्धु व सखा सारे जग का भरतार वही है।।
दुःखी निःसहायों का भी वही आसरा है...

जब सब रिश्तेदार तोड़ कर प्यार अगर मुँह मोड़ गये हों।
तुझ पर संकट काल व बिगड़े हाल समझ कर छोड़ गये हों।
कड़े वक्त में भी साथी परमात्मा है...

इधर-उधर को बचा के नज़र दुनिया में अगर कोई पाप करेगा
देख रहा कण-कण में प्रभु,
कोई उसकी नज़र से बच ना सकेगा
जिसे वो न जाने ऐसा दुनियाँ में क्या है...

छल से रहित व्यवहार व सच्चा प्यार तुझे मंजूर नहीं है
बहुत निकट भगवान अरे, इन्सान प्रभु कुछ दूर नहीं
"पथिक" जो बुलाये वह भी उसे ढूंढता है...

❖❖

ईश्वर के चरण कमल पकड़कर संसार का काम
करो बन्धन का डर नहीं रहेगा।

मैं क्या जानूं मेरे रघुराई

मैं क्या जानूं मेरे रघुराई
तू जाने मेरी किस में भलाई
सहारा तेरा रे ओ साईं...

सारे जगत को देने वाले
मैं क्या तुझको भेंट चढ़ाऊँ
जिसकी सांस से आए खुशबू
मैं क्या उसको फूल चढ़ाऊँ

अपरम्पार है महिमा तेरी
कोई न जाने पार
सहारा तेरा रे...

तू वो पारस जिसको छूकर
लोहा भी सोना हो जाए
तेरी शरण में जो भी आए
वो पापी पावन हो जाए

बीच भँवर में नैया मेरी
अब तो लगा दो पार
सहारा तेरा रे...

मैं क्या जानूं मेरे रघुराई..........

❖❖

तेरी बन्दगी से पहले

मैं बुझा हुआ दिया था तेरी बन्दगी से पहले ।
मेरी ज़िन्दगी में क्या था तेरी बन्दगी से पहले ।।

मैं इक ख़ाक का था ज़र्रा मेरी क्या थी हस्ती ।
यूं थपेड़े खा रही थी ज़िन्दगी जैसे तूफानों में कश्ती ।।

मैं दर-दर भटक रहा था तेरी बन्दगी से पहले ।
मैं तो इस तरह था जहां में जैसे हो सीप खाली ।।

मेरी बढ़ गयी है कीमत तूने भर दिये हैं मोती ।
मेरी थी कहां शोभा तेरी बन्दगी से पहले ।।

यूं तो हैं जहां में लाखों तेरे जैसा कौन होगा ।
तेरे जैसे मेरे भगवान्, कहाँ दया निधान होगा ।।

मेरा कौन आसरा था तेरी बन्दगी से पहले ।
तू मेहरबां हुआ है तो जहाँ भी मेहरबां है ।।

यह ज़मीं भी मेहरबां है यह आसमां भी मेहरबां है ।
मैं खुदी तलक से जुदा था तेरी बन्दगी से पहले ।।

मैं नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन है उसी का दिया।
जो कुछ मेरे पास है वह धन किसी का है दिया।।

देने वाले ने दिया और दिया इस शान से।
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।
मैं और मेरा कहने वाला, मन किसी का है दिया।।

जो कुछ भी मेरे पास है वह भी तो रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह जन कह सकता नहीं।
ज़िन्दगानी का मधुबन खिला किसी का है दिया।।

जग की सेवा, खोज अपनी, प्रेम प्रभु से कीजिए।
ज़िन्दगी का राज़ है यह जान कर जी लीजिए।
साधना की राह में, साधन किसी का है दिया।।

❖❖

"आसक्ति और मोह का परित्याग ही भक्ति के मन्दिर का द्वार है। जब तक व्यक्ति मोह का परित्याग नहीं करता तब तक भक्ति का पाठ नहीं सीखता।"

–आचार्य सुधांशु

मैं ढूंढता तुझे था

मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में।।

मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू,
मैं बांट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बाजे बजा-बजा कर मैं था तुझे रिझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन में

तूने दिये अनेकों अवसर न मिल सका मैं
तू कर्म में मगन था मैं व्यस्त था कथन में।
कैसे तुझे मिलूंगा जब भेद इस कदर है,
हैरान होके भगवन् आया हूं मैं शरण में।।

तू अब है रतन में सौंदर्य है सुमन में
तू प्राण है पवन में विस्तार है गगन में।
तू ज्ञान हिन्दुओं में ईमान मुस्लिमों में
विश्वास क्रिश्चियन में तू सत्य है सुजन में।।

हे दीन बन्धु! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर दे,
देखूँ दृगों में, मन में तथा वचन कर दे,
कठिनाइयों, दुःखों का इतिहास ही सुयश है,
मुझको समर्थ कर तू बस कष्ट के सहन में।।

❖❖

मन में जग जाये जोत तुम्हारी

मन में जग जाये जोत तुम्हारी
राम ऐसी करो कृपा-२
कृपा याचक खड़ा द्वारे, भिक्षा दे दो राम प्यारे
चढ़ी रहे नाम खुमारी, राम ऐसी करो कृपा...

मोह, माया का मिटे अन्धेरा, ये जीवन हो जाये तेरा
गूँजें तान तिहारी, राम ऐसी करो कृपा...

भव सागर में घिर गई नैया, प्रभु कृपा बिन कौन खेवैया,
दीजो पार उत्तार, राम ऐसी करो कृपा...

'सूरत' शब्द का मेल मिला दो, मेरा हृदय कमल खिला दो
करो भीतर उजियार, राम ऐसी करो कृपा...

सदा अनुग्रह तेरा माँनू, तेरी कृपा से भव को लाँघू
मोहे न दीजो बिसार, राम ऐसी करो कृपा...

❖❖

भगवान की भक्ति सर्वोपरि है। भगवान की भक्ति से जो काम हो सकता है, वह घोर से घोर तपस्याओं से भी नहीं हो सकता।

मन फूला फूला फिरे जगत में

मन फूला फूला फिरै जगत् में कैसा नाता रे

माता कहै यह पुत्र है मेरा, बहन कहै बीर मेरा।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारी कहै नर मेरा।

पेट पकर के माता रोवे, बांह पकर के भाई।
लपटि-झपट के तिरिया रोवै, बहन रोवै दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवे, फैर करे घर बासा।

चार गजी चरगजी मंगाई, चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कोने आग लगाई, फूंक दिया जस होरी।

हाड़ जरै जस लाकड़ी, केस जरै जस घास।
सोना जैसी काया जर गई, कोई न आया पास।

घर की तिरिया ढूंढन लागी, ढूंढ फिरी चहुं देसा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो! छोड़ो जग की आसा।

-सन्त कबीर

मैंने गुरुवर को देखा

मैंने गुरुवर को देखा तो ऐसा लगा।
जैसे विष्णु स्वरूप जैसे ब्रह्मा का रूप जैसे मन्दिर की धूप।
जैसे गंगा का जल, जैसे पूजा स्थल, जैसे मस्ती का पल।
जैसे ज्योति से ज्योति जलाता हुआ ऽ ऽ ऽ...
मैंने गुरुवर को देखा तो ऐसा लगा-२

जैसे राधा का श्याम, जैसे सीता का राम, जैसे भक्ति निष्काम
जैसे कोयल का गीत, जैसे मीरा का मीत, जैसे राधा की प्रीत,
जैसे रामजी की गाथा सुनाता हुआ ऽ ऽ ऽ...
मैंने गुरुवर को देखा तो ऐसा लगा-२

जैसे गुणों का हो सागर, जैसे ज्ञानभरी गागर,
जैसे शान्त महासागर,
जैसे पूजा उत्कृष्ट जैसा गीता का पृष्ठ, जैसे मोह माया नष्ट
जैसे माधव ने अर्जुन को कुछ हो कहा ऽ ऽ ऽ...
मैंने गुरुवर को देखा तो ऐसा लगा-२

जैसे शीतल पवन, जैसे खिलता चमन, जैसे राम जी का मन
जैसे घटा घनघोर, जैसे दिलों में हिलोर, जैसे श्याम चित चोर
जैसे पर्वत से झरना सा आता हुआ ऽ ऽ ऽ...
मैंने गुरुवर को देखा तो ऐसा लगा-२

-प्रो० एन. डी. कपूर

यह तन विष की बेल है, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरू मिले, तो भी सस्ता जान।।

मेरा शीश झुकायो

-रवीन्द्र नाथ टैगोर

अपनी चरण धूलि के तल में,
मेरा शीश झुका दो।
देव, सब अहंकार मेरे,
आँसू जल में डूबो दो।
अपने को गौरव देने को,
स्वयं को घेरकर, अपने को
अपमानित करता हूं।
पल-पल में,
घूम-घूम कर, स्वयं मरता हूं।
देव, सब अहंकार मेरे,
आँसू जल में डुबो दो।
प्रभो, अपने कामों का आत्मप्रचार न करूं।
अपनी ही इच्छा,
मेरे जीवन में पूर्ण करो।
अपनी चरम शान्ति दो।
प्राणों में परम क्राति दो।
आप खड़े होकर
मुझे हृदय कमल के दल में ओट दें।
देव, सब अहंकार मेरे,
आँसू जल में डुबो दो।।

❖❖

मेरा जीवन है तेरे हवाले

मेरा जीवन है तेरे हवाले,
इसे प्रभु हर पल तू ही सम्भाले,-२

भव सागर में घिर गई नैया,
डोल रही है ओ रे खिवैया
अब, आकार इसको बचा ले,
इसे प्रभु हर पल...

मोह माया के बन्धन खोलो,
अब तो प्रभु मोहे शरण में लेलो
इस पापी को अपना लो
इसे प्रभु हर पल...

ये जीवन है तुम से पाया,
सब तेरे अपने न कोई पराया
सुन धनुष ओ बांसुरी वाले
इसे प्रभु हर पल...

❖❖

अपने सब काम भूलकर सदा
ईश्वर स्मरण करते रहो।

मेरे प्रभु तू इतना बता

मेरे प्रभु तू इतना बता तेरे लिए मैं क्या करूँ।
तेरी शरण को छोड़कर जग की शरण को क्या करूँ।।

फूलों में बस रहे हो तुम
कलियों में खिल रहे हो तुम।
मेरे तो मन में हो ही तुम
मंदिर में जाकर क्या करूँ।।

चन्द्रमा बनकर आप ही
तारों में जगमगा रहे।
तेरी छवि के सामने
दीपक जला के क्या करूँ।।

❖❖

दृढ़ एवम् अचल

अचल रहा हो अपने पथ पर, लाख मुसीबत आने में।
मिली सफलता जग में उसको, जीने में मर जाने में।।
खड़ा हिमालय बता रहा है, डरो न आंधी पानी में।
खड़े रहो तो अपने पथ पर, सब कठिनाई तूफानों में।।

मेरे मन में बसे हो

मेरे मन में बसे हो बसे रहना
प्रभु तन में बसे हो बसे रहना

हाड-माँस का ये है मन्दिर
आप बसे हैं जिसके अन्दर
जिसमें बोले प्यारी मैना
मेरे मन में...

मन मन्दिर में ज्योति जगाई
निश दिन तेरी आरती गाई
अंग में संग में सदा रहना
मेरे मन में...

दास तुम्हारे तुम्हें पुकारे
नैना निश दिन बाट निहारें
दुःख में सुख में यही कहना
मेरे मन में...

जब तक तन में प्राण रहेगा
लब पे हरि का नाम रहेगा
मधुर दास का यही कहना
मेरे मन में...

❖❖

मेरे प्राणों के आधार

मेरे प्राणों के आधार हरि आ जाओ इक बार
हरि आ जाओ, हरि आ जाओ हरि आ जाओ-२

मैंने बहुत गुनाह जीवन में किये
अमृत छोड़े और ज़हर पिये
मेरा छोटा सा परिवार
हरि आ जाओ...

तू मेरा है मैं तेरी हूँ
मैं जन्म-जन्म से तेरी हूँ
मुझे दर्शन दो इक बार
हरि आ जाओ...

विषयों में उम्र गंवाई है
अब याद मोहन तेरी आई है
इस याद को अमर बना दो
हरि आ जाओ...

तेरी याद में आठों याम रहें
तेरे चरण कमल में ध्यान रहे
प्रभु ऐसी लगन लगा जाओ
हरि आ जाओ...

❖❖

भगवान जिसके घर आते हैं उसको घोर विपत्ति में भी सुख-सौभाग्य दिखायी देता है।

मेरे देवता मुझ को

मेरे देवता मुझ को देना सहारा।
कहीं छूट जाए न दामन तुम्हारा।
तेरे रास्ते से हटाती है दुनियाँ।
इशारों से मुझ को बुलाती है दुनियाँ।
न समझूँ मैं जग का ये झूठा इशारा।
कहीं छूट जाए न...

तेरे रास्ते से हटाये न कोई।
लगन का ये दीपक बुझाये न कोई।
तुम्हीं मेरी नैया तुम्हीं हो किनारा।
कहीं छूट जाए न...

सुबह शाम तुझ को ध्याता रहूं मैं।
तेरे प्रेम के गीत गाता रहूँ मैं।
तेरे नाम है मुझ को प्राणों से प्यारा
कहीं छूट जाए न...

❖❖

कामी, क्रोधी, लालची इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा जाति, वरण, कुल खोय।।

चिन्ता ज्वाला शरीर बन, दावा लगि-लगि जाय।
प्रकट धुआं नहि सिंचरे, उर अन्तर धुंध आए।।

मेरे मालिक तेरी

मेरे मालिक तेरी नौकरी सबसे ऊँची है सबसे बड़ी
तेरे दरबार की हाज़री सबसे ऊँची है सबसे बड़ी

खुश नसीबी का जग गुल खिले
उस मालिक का दर मिले
हो गयी जबसे रहमत तेरी
सबसे ऊँची है ...

जब से तेरा गुलाम हो गया
तब से मेरा भी नाम हो गया
वरना औकात क्या थी मेरी
सबसे ऊँची है ...

मैं नहीं था किसी काम का
ले सहारा तेरे नाम का
ढूंढ ली मैने मंज़िल नई
सबसे ऊँची है ...

मेरी तनख्वाह कोई कम नहीं
कुछ मिले न मिले ग़म नहीं
हो गयी शान ऊँची मेरी,
सबसे ऊँची है ...

❖❖

मेरी बाँह पकड़ लो

मेरी बाँह पकड़ लो प्रभु एक बार
प्रभु एक बार, बस एक बार

यह जग अति गहरा सागर है
सिर धरी पाप की गागर है
कुछ हल्का कर दो भार
प्रभु एक बार, बस एक बार

इक जाल बिछा मोह माया का
इक धोखा कंचन काया का
मेरा कर दो मुक्त विचार
प्रभु एक बार, बस एक बार

है कठिन डगर मुश्किल चलना
बलहीन को दे दो बल अपना
कर जाऊँ भव भय पार
प्रभु एक बार, बस एक बार

मैं हार गया अपने बल से
निर्दोष बचाओ जग के छल से
सौ बार नहीं बस एक बार
प्रभु एक बार, बस एक बार

निर्बल हूँ मेरी बांह पकड़ लो
मेरा हाथ पकड़ लो
प्रभु एक बार, बस एक बार

❖❖

मुझे प्रेम का पंथ बता दे

मुझे प्रेम का पंथ बता दे, ऐसा कोई सन्त मिले।
भटक रहा हूँ कब से जग में, इस माया के पड़ बन्धन में,
मेरा आवागमन मिटा दे, ऐसा कोई सन्त मिले.........

इस झूठे जग में भरमाया, सत्य मान कर प्रेम लगाया,
इस भ्रम को कोई मिटा दे, ऐसा कोई सन्त मिले..............

सन्त दरश का बड़ा है महातम, बड़े भाग्य से मिले समागम
मोहे प्रभु की शरण लगा दे, ऐसा कोई सन्त मिले..............

यह जीवन दिन चार रहेगा, ऐसा अवसर नहीं मिलेगा
मानव तन सफल बना दे, ऐसा कोई सन्त मिले..............

सन्त कृपा बिन हरि नहीं मिलते, पाप सभी दर्शन से धुलते
मेरा रोम रोम पुलका दे, ऐसा कोई सन्त मिले..............

❖❖

भगवान से मिलन होने के लिये भाव आवश्यक हैं। नम्र होकर चलना, मधुर बोलना और बाँट कर खाना ये तीन गुण आदमी को ईश्वरीय पद पर पहुँचाते हैं।

मुझे तूने मालिक

मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
न मिलती अगर दी हुई दात तेरी
तो क्या थी ज़माने में औकात मेरी
यह बन्दा तो तेरे सहारे जिया है,
तेरा शुक्रिया है, तेरा...
यह जायदाद दी है यह औलाद दी है,
मुसीबत में हर वक्त इमदाद की है
तेरा ही दिया मैंने खाया पीया है
तेरा शुक्रिया है, तेरा...
मेरा ही नहीं तू सभी का है दाता
सभी को सभी कुछ है देता दिलाता
जो खाली था दामन वो तूने भरा है
तेरा शुक्रिया है, तेरा...
मेरा भूल जाना तेरा न भुलाना
तेरी रहमतों का कहाँ है ठिकाना
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है
तेरा शुक्रिया है, तेरा...
तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हूँ मालिक
तेरे ही करम से मैं ज़िन्दा हूँ मालिक
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है
तेरा शुक्रिया है, तेरा...
मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है
तेरा शुक्रिया है, तेरा...

❖❖

मुझे गर्व न और

मुझे गर्व न और सहारों का, एक तेरा सहारा काफी है
मझधार में डूबने वालों को, एक तेरा किनारा काफी है।

बन बन के सहारे टूटते हैं, ये रस्म पुरानी है जग की
टूटे न कभी छूटे न कभी, बस तेरा सहारा काफी है।।१।।

यहाँ रिश्वत और सिफारिश से, कोई काम नहीं बन सकता है।।
बिगड़ी संवर जाने के लिए, इक तेरा इशारा काफी है।।२।।

नज़रों को धोखा देते हैं ये झूठे नज़ारे दुनियाँ के
मेरी प्यासी नज़रों के लिए, बस तेरा नज़ारा काफी है।।३।।

पपीहे को है मतलब ही क्या, नदियों और तालाबों से
बादल से बरसे स्वाति की, बस एक ही धारा काफी है।।४।।

❖❖

जो भगवान आकाश में सूरज चाँद खिला देता है।
वही अपने भक्तों के लिये बंजर में जल धार बहा देता है।।

मांग बन्दे मांग

मांग बन्दे मांग उस भगवान से
क्या मिलेगा मांगकर इन्सान से

मिल गया जो जिन्दगी की राह में
सबको न दाता समझ अज्ञान से

है वही सारे ज़माने का पिता
उसका ही दामन पकड़ जी जान से

ले बना साथी सखाओं का सखा
फिर तुझे डर खौफ क्या तूफान से

देख ले घर में बैठा है कोई
मिल ज़रा एक बार उस मेहमान से

तज सुपथ को क्यों कुपथ पर चल पड़ा
हो गयी गलती 'पथिक' नादान से

मांग बन्दे मांग.........

❖❖

आदमी-आदमी जो बन जाए
कष्ट सारे जहां का मिट जाये

मैली चादर ओढ़ के कैसे

मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊँ ।
हे मेरे पावन परमेश्वर मन ही मन शर्माऊँ ।।

तूने मुझ को जग में भेजा देकर निर्मल काया,
इस जीवन को पाकर मैंने गहरा दाग लगाया
जन्म-जन्म की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊं ।।

निर्मल वाणी पाकर तुझसे नाम तेरा न गाया,
नयन मूंदकर हे परमेश्वर! कभी न तुझ को ध्याया ।
तार वीणा के टूटे सारे कैसे गीत सुनाऊँ ।।

इन पैरों से चलकर कभी भी सत् संगति न आया,
जहाँ जहाँ हो चर्चा तेरी कभी न शीश झुकाया ।
हे प्रभुवर मैं हार चुका हूँ कैसे तुम्हें रिझाऊँ ।।

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
ओ कृपा करो प्रभु हम पर
बीता जाये समय।।
सारे भय से मुक्त हों, दुःख से नहीं डरें।
कर्म करें, निष्काम हो तेरा ध्यान धरें।।
मन के नील गगन पर होवे,
ज्ञान का सूर्य उदय।।
नेकी करें बदी नहीं, जीवन बने महान।
तेरा नाम पुकारते, तन से निकले प्राण।।
प्रभु सेवा में जीवन बीते
मृत्यु से हों निर्भय।। असतो मा...

माई री मैंने लियो गोविन्द मोल

माई री मैंने लियो गोविन्द मोल।
कोई कहे छोड़े, कोई कहे चौड़े, लिया बजन्ता मोल।।
कोई कहे मंहगो, कोई कहे सस्तो, लिया तराजू तोल।
मीरा के प्रभु दर्शन दीज्यो, पूरब जन्म को कौल।।

❖❖

कोई कछू कहे मन लागा।
ऐसी प्रीत लगी मन मोहन, ज्यों सोने में सुहागा।
जन्म-जन्म का सोया मनुवां सतगुरु शब्द सुन जागा।।
मात पिता सुत कुटुम्ब कबीला टूट गयो ज्यों धागा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा।।

❖❖

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पायी, जग में सभी गवाँयो।
खर्चे नहीं कोई चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तरवायो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरष हरष जस गायो।।

❖❖

अब कैसे छूटे प्रभु रट लागी।
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम वन हम वन मोरा, जैसे चितवन चन्द चकोरा।।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रैदासा।।

मंगल मुहूर्त है

मंगल मुहूर्त है मंगल है बेला
प्यारे लोचन खोलो, ओम् शांति बोलो ।
मंगल मिलन की यह है घड़ियाँ
मन में मगन हो के डोलो
ओम् शांति बोलो ।।

आयी नभ में प्रभु की सवारी
मस्ती में डूबी दिशायें हैं सारी
तुम भी लगा लो ध्यान प्रभु का
ज्ञान की दीपक संजो लो
ओम् शांति बोलो ।।

प्रभु को मिलो ऐ प्रभु के दुलारो
वरदान पालो जीवन संवारो
प्राणों की डोर में परम पिता के
प्रेम के मोती पिरोलो
ओम् शांति बोलो ।।

सुंदर है अवसर मौसम सलोना
इस वक्त को साधक तुम न खोना
भाग्य विधाता के स्नेहामृत में
अपना अन्तर भिगोलो
ओम् शांति बोलो ।।

❖❖

मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान् तुम्हारे चरणों में ।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे बैरी कुल संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।१।।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
पर मन न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।२।।

चाहे कांटों पर मुझे चलना हो,
चाहे अग्नि में भी जलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।३।।

जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे ।
बस याद आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।४।।

मुझको माधव का

मुझको माधव का सहारा मिल गया
मेरी किश्ती को किनारा मिल गया

मैं किसी के द्वार जाऊं किस लिये।
मुझको मोहन का द्वारा मिल गया।।

ढूंढती फिरती थी नज़रें जो नज़र।
प्यासी नज़रों को नज़ारा मिल गया।।

अब रही परवाह नहीं धनमाल की।
हीरे लालों का भण्डारा मिल गया।।

प्रेम में खामोश था मैं इसलिये।
मुझको मेरा कृष्ण प्यारा मिल गया।।

❖❖

"सेवा बहुत बड़ी शक्ति है। भगवान की आराधना या उसका आशीर्वाद प्राप्त करने का सीधा सा तरीका है कि सेवा का काम करना शुरू कर दें।"

–आचार्य सुधांशु

मुझको दो वरदान राम जी

मुझको दो वरदान राम जी
सदा तुम्हारा नाम पुकारूं ।
करूं सदा वन्दना तुम्हारी
अपना अगला जन्म सुधारूं ।।

चाह नहीं है फूल बनूँ मैं
और तुम्हारे शीश चढूं मैं ।
मुझको तो बस नीर बना दो
सदा तुम्हारे चरण पखारूं ।।

चाह नहीं चन्दन बनने की
माथे पर लगते रहने की ।
मुझको तो बस दीप बना दो
सुबह शाम आरती उतारूं ।।

प्रभु दया की भीख मांगता,
द्वार तुम्हारे शीश झुकाता ।
मुझको तो बस दिव्य दृष्टि दो
सदा तुम्हारे रूप को निहारूं ।।

❖❖

ये गर्व भरा मस्तक मेरा झुकने दे

ये गर्व भरा मस्तक मेरा,
प्रभु चरण धूल तक झुकने दे
अहंकार विकार भरे मन को,
निज नाम की माला जपने दे ।।

मैं मन की मैल को धो न सका
इस जीवन में तेरा हो न सका
मैं प्रेमी हूँ, इतना न झुका,
जो गिर भी पड़ूं तो उठने दे ।।

मैं ज्ञान की बातों में खोया,
और कर्महीन पड़कर सोया
जब आँख खुली तो मन रोया
जग सोये मुझ को जगने दे ।।

जैसा भी हूँ खोटा या खरा,
प्रभु शरण तेरी में आ तो गया
इक बार ये कह दे खाली जा,
या प्रीति की रीत छलकने दे ।।

❖❖

ईश्वर को वही प्रिय है जिसको सत्य प्रिय है। जो सत्य का आचरण करता है वह ईश्वर का प्रिय है। सत्य ही ज्ञान का सबसे बड़ा आधार है।

ये नर तन जो तुझ को मिला है

ये नर तन जो तुझ को मिला है, यह गंवाने के काबिल नहीं है ।।
तेरा यह वास अनमोल हीरा, से लुटाने के काबिल नहीं है ।।

पशु जीते जी सेवा कमाये, बाद मरने के भी काम आये ।
पर तेरा जिस्म मरकर किसी के काम आने के काबिल नहीं है ।।
ये नर तन...

तू कुकर्मों में लट्टू है, खर्च करता उन्हीं पर है पैसा ।
मिले बिन मोल, अनमोल सत्संग उसमें जाने के काबिल नहीं है ।।
ये नर तन...

झूठ बोले व गप्पें उड़ाये, गन्दे गाने खुशी से बैठे गाये ।
पर तेरी जीभ प्यारे प्रभु के, गीत गाने के काबिल नहीं है ।
ये नर तन...

जिसने दी तुझ को सुन्दर सी काया, तेरे लिए सब कुछ बनाया ।
ऐसे दाता को तूने भुलाया, जो भुलाने के काबिल नहीं है ।।
ये नर तन...

अगर न समझा तो रोना पड़ेगा, नर्क में गर्क होना पड़ेगा ।
तेरा होगा बुरा हाल ऐसा, जो बताने के काबिल नहीं है ।।
ये नर तन...

ये भावना बना ले

ये भावना बना ले मतकर बुरा किसी का,
उपवन को जगमगा ले, करके भला सभी का।

परहित के हेतु जिसने खुद को किया समर्पित,
धन धाम सब लुटाया अपना स्वदेश के हित,
आया जो काम जग के जीवन सफल उसी का।

कर्त्तव्यशीलता के हृदय में भाव भर ले,
कल पर न टाल, जो कुछ करना है आज कर ले,
बज जाये कब नगाड़ा तेरा चला चली का!

डरकर किसी के डर से किंचित् न डगमगाना,
निश्चित डगर पर अपनी मंज़िल पर चलते जाना,
मन में कभी न लाना एहसास बेबसी का

दुर्देव, दुर्दिनों का हुआ दौर दूर तेरा,
तेरे सुखों का सूरज चमका हुआ सवेरा,
भैया समय मिला अब तुझको हँसी-खुशी का।।

ये भावना बना ले...........

❖❖

आज का मनुष्य अपने दुःख से इतना दुःखी नहीं है, जितना कि वह दूसरे के सुख और उन्नति से दुःखी है।

–आचार्य सुधाँशु

यूं ही जीवन गवाने का क्या फायदा

यूं ही जीवन गवाने का क्या फायदा।
चन्दन ईंधन बनाने का क्या फायदा।।
जान कर जो अनजान बनता रहे।
उसे इतना चेताने का क्या फायदा।।

अपने धर की लगी कब बुझायेगा तू।
दूसरों की बुझाने का क्या फायदा।
दिल के आइने में तेरी सूरत है क्या।
झूठी वाह-२ कमाने का क्या फायदा।।
यूं ही जीवन..................

तूने कर्मों को अपने तो झूठा न किया।
तेरा गंगा नहाने का क्या फायदा।।
अपनी एक भी गलती सुधर न सकी।
दूसरों की गिनाने से क्या फायदा।।
यूं ही जीवन..................

जो दिया उसने वो तो सम्भलता नहीं।
दिल को मैला बनाने का क्या फायदा।।
जिन्दगी में किसी का भला न किया।
तुझे बन्दा बनाने का क्या फायदा।।
यूं ही जीवन..................

❖❖

यह जीवन हमारा तुम्हारे लिए हो

यह जीवन हमारा तुम्हारे लिए हो
इसे अपने चरणो के काबिल बना दो

हो करुणा के सागर दया के हो दाता
तुम्हीं जग के पालक तुम्हीं हो विधाता
यह सोया है मानव इसे तुम जगा दो।।

मैं पथ से गिरूं तो मुझे थाम लेना
दया करके सद्बुद्धि देते ही रहना
जो सच्चा हो मार्ग वही तुम दिखा दो।।

तुम्हारे हवाले है जीवन की नैया
इसे पार कर दो ऐ मेरे खिवैया
कहीं डूब जाये न इसको बचा लो।।

दर्शन को मैं आया हूँ जन्मों का मारा
भटकता हे मनवा यह अब भी हमारा
इसे वश में करने की युक्ति बता दो।।

यह जीवन हमारा तुम्हारे लिए हो..........

भगवान को आत्म निवेदन करने पर,
उनके प्रति भारी दीनता रखना।

राम-वन्दना

राम मेरी वन्दना स्वीकार हो
मैं करूँ प्रणाम मम उद्धार हो

आरती पूजा नहीं मैं जानती
इक दया तेरी से बेड़ा पार हो
राम मेरी वन्दना.........................

जगत् के सब बन्धनों को तोड़ दूँ,
नाम ही तेरा मेरा आधार हो
राम मेरी वन्दना.........................

है यही इच्छा प्रभु इस दास की
शीश मेरा हो तुम्हारा द्वार हो
राम मेरी वन्दना.........................

डूबती भवसिन्धु से तुम तार दो
मेरी नौका के तुम्हीं पतवार हो
राम मेरी वन्दना.........................

सब बातों को छोड़कर अपने परममित्र परमात्मा में लीन होना ही योग की ऊँची अवस्था है।

लबपे आती है

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शमाँ की सूरत हो खुदाया मेरी

हो मेरे दम से यू हीं मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की जीनत

ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
ईल्म की शम्मां से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से जईकों से मुहब्बत करना

मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

❖❖

भगवान की याद से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है और उनको भूल जाने से बढ़कर कोई पाप नहीं।

लिखा कौन मिटाये रे बन्दे

लिखा कौन मिटाये रे बन्दे
लिखा कौन मिटाये
ऊँची हवा में उड़ने वाला
कब नीचे आ जाये रे बन्दे।।
हरि एक निराला माली
उसका बाग अजूबा।
देख कहीं ये निकला सूरज
और कहीं पे डूबा।
किसी पल कौन कली खिल उठे
कौन कली मुरझाये।।
मुश्किल और निराशा में भी
वो देवे मुस्कानें
प्रभु के अहसानों को बन्दे
ज़रा तो तू पहचाने
कितना कुछ समझाया उसने
तू ही समझ न पाये।।
ऊँची हवा में उड़ने वाला
कब नीचे आ जाये।।

❖❖

और सब बातों को कल पर छोड़ दो, परन्तु भगवान का स्मरण और परोपकार में एक मिनट भी देर न करो।

लीला तो तेरी अजब निराली

लीला तो तेरी अजब निराली है
सुख निधान जग फूल बगिया का तू ही माली है।
तू अजर अमर और निराकार भगतन ही के नाना रूप धरे,
बिन पैर चले, बिन कान सुने बिन हाथ करोड़ों काम करे,
हर जगह पे भगवान वास तेरा, हो जाए प्रलय तब भी न मरे,
तू पिता है हम सब पुत्र तेरे, भोजन दे सबका पेट भरे,
तू हाकिम सारी दुनियाँ का, कोई हुक्म तेरा टारे न टरे,
तू दीनबन्धु तेरी याद करे, पल भर में वो भव सिन्धु तरे,
-कहीं अंधेरा किसी के घर में रोज़ दिवाली है।...

कोई चले न बिना सवारी के, कोई नंगे पाँव भाग रहा,
कोई ढेर किया धन-दौलत का, कोई कर्ज़ किसी से मांग रहा
कोई किसी का दुश्मन बन बैठा, कोई प्रेम किसी से पाग रहा,
कोई सुख की निंदिया सोय रहा, कोई पड़ा फिकर में जाग रहा,
कोई धर्म से मुखड़ा मोड़ रहा, कोई धो पापों के दाग रहा,
कोई इस दुनियाँ को तुच्छ जानकर, बनी हवेली त्याग रहा,
-कोई तो गोरा, किसी की दुनियां बिल्कुल काली है...

कोई शहंनशाह बना दिया, कोई टुकड़े मांगे दर-दर के,
कोई बना दिया बेखौफ निडर, कोई गुज़र कर रहा डर-डर के
कोई हंसे ठहाका मार-मार, कोई रोवे आँसू झर-झर के,
कोई देख किसी को सुखी रहे, कोई मिला खाक में जल-जलके
कोई हुक्म चलावे औरों पर, कोई जीवे सेवा कर-कर के,
कोई पेट भरे, कोई भूखा मरे सर बोझ अपना धर-धर के
-तेरी माया मुनियों का मन मोहने वाली है...

सब जगह में तेरा जलवा है, तुझसा जलवागार कोई नहीं,
हे ईश्वर तेरी सानी का, दुनियाँ में दिलावर कोई नहीं,
करूणानिधान तुझसा महान, इस जहाँ के ऊपर कोई नहीं
तू मात-पिता, तू स्वामी सखा, बस तेरे बराबर कोई नहीं,
तू सबके अन्दर बाहर है पर तुझसे बाहर कोई नहीं,
-कहीं अन्धेरा किसी के घर में रोज़ दीवाली है।...

लगता है ईश्वर से यह दिल

लगता है ईश्वर से यह दिल कभी-कभी।
मिलती है सज्जनों की महफिल कभी-कभी।।

मिलते हैं जन्म अनेकों है जीव आत्मा को।
मिलता है आदमी का यह तन कभी-कभी।।

चलना तो रात-दिन है जीवन की राह में।
मिलती है आदमी को मंज़िल कभी-कभी।।

मझधार में हो नैया अंधियारी रात हो।
ऐसी दशा में मिलता है साहिल कभी-कभी।।

इक बूंद जल की प्यासा चातक है चाहता।
स्वाति में बरसता है ये बादल कभी-कभी।।

लाखों जहां में आये लाखों चले गये।
जीवन में है मिलता रहबर कभी-कभी।।

❖❖

"यदि तुम्हारा हृदय एक ज्वालामुखी है तो तुम कैसे आशा करोगे कि तुम्हारे हाथों में फूल खिलेंगे।"

-खलील जिब्रान

वेखीं दिल न किसे दा दुखावीं

वेखीं दिल न किसे दा दुखावीं, दिलां विच रब्बा वसदा ।
रूस्से दिलां नाल दिलां नूं मिलावीं, दिलां विच रब्ब वसदा ।

जिस मिस्तरी ने तैनू सजाया संवारया ।
सब नूं बनाया ओसे सोचे लै तूं प्यारया ।
ओहदे प्यारेयां नूं ऐवे न सतावीं, दिलां विच...

जेहड़ी चीज नाल तेरा जिसम बनाया ए ।
ओहो ही मसाला सारे प्राणियाँ नूं लाया ए ।
एथे माँस न किसे दा खावीं दिलां विच...

खाना पीना सोना तेरा पशुआँ समान है ।
धर्म दी कमाई नाल आदमी महान है ।
बन्दा बन के वी पशु न कहावीं, दिलाँ विच...

दुःखी दिलां दियां आहाँ बिरथा नहीं जाँदियाँ ।
पापियां ते जालिमाँ नूं जड़ां तो मिटादियाँ ।
किसे दिलो बद्दुआवां न कढावीं, दिलां विच...

भुल के कदे वी शीशा दिल न तोड़िए ।
टुटेया जुड़े न भावें लख वारी जोड़िए ।
ऐना दिलां नूं खड़ौणे न बनावीं, दिलां विच...

आखी ए सिआणी गल सोच के सयाणेयां ।
योगियां महामावां राजेयां ते राणेयां ।
तूं वी "पथिक" जमाने नूं सुनावीं दिला विच...

❖❖

शांति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में

शांति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।
जल में थल में और गगन में
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में
औषधि वनस्पति वन उपवन में
सकल विश्व के जड़ चेतन में

ब्राह्मण के उपदेश वचन में
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धन में
और शूद्र के हो चरणन में।
शांति राष्ट्र निर्माण सृजन में

नगर ग्राम में और भुवन में
जीव मात्र के तन में मन में
और जगत् के हो कण-कण में
शांति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में

❖❖

श्री रामचन्द्र कृपालु

श्री रामचन्द्र कृपालु भजमन हरण भवभयदारूणम्
नव कंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारूणम्।

कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दम्
पट पीत मानहु तडित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।

भजु दीन बन्धु दिनेश दानवदैत्यवंशनिकन्दनम्
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथनन्दनम्।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदार अंग विभूषणम्
आजानुभुज शरचापधर संग्रामजित खरदूषणम्।

इति वदति तुलसीदास शंकरशेषमुनिमनरंजनम्
मम हृदयकंज निवास कुरू कामादि खलदलगंजनम्।

❖❖

ईश्वर की सेवा से शरीर में और श्रद्धा से प्राणों में ज्योति प्रकट होती है।

सब निराकार और निर्विकार

सब निराकार और निर्विकार साकार बना दिया जग कैसे।
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ता, तुर्या, रचा मुक्ति का मग कैसे।।
क्या वस्तु लई, जिससे देह रची फिर बना दई रग-रग कैसे।
सब धार रहा, रम सब में रहा, फिर सब से रहा अलग कैसे।।
जब अपाणिपादी यवनों गृहीता, फिर कोई पकड़ ले पग कैसे।
जब काशी काबे में पता नहीं, फिर पता बता लगता कैसे।।
बन पृथ्वी सूरज नभ तारे किस विधि रहा तू धार।
धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार।।१।।

कर दिये सूरज से जो चमकते पदार्थ ऐसी चमक निराली कहीं नहीं।
बरसे तो भरदे जल जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं।।
नर-तन सा चोला सींव दिया, सुई धागा हाथ में कहीं नहीं।
पत्ते-पत्ते की कतरन न्यारी, तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं।।
दे भोजन कीरी कुञ्जर को, तेरे चढ़े भण्डारे कहीं नहीं।।
वह यथा योग्य बर्ताव करे, मिले रू औ रियायत कहीं नहीं।
दिन रात न्याय में फर्क पड़े ना, तेरी लगी कचहरी कहीं नहीं।
अखण्ड ज्योति अपार लीला कहूं न पायो तेरो पार।।
धन्य-धन्य तेरी कारीगरी करतार।।२।।

जाने किस विधि गर्भ रख कर दे क्रीड़ा बालकपन की।
जाने जवानी आई कहां से, कमी रही ना यौवन की।।
फिर बुढ़ापा देकर दिखाया सबकी बनी सो एक दिन बिगड़न की।
कोई पैसे-पैसे को मुहताज है, कोई खोल रहे कोठी धन की।।
कोई पी संग कामिनी खेल करे, कोई रो-रो राख करे तन की।
कोई भटकते-भटकते उमर गंवादे, कोई तृप्ति कर रहे मन की।।
वन पर्वत भूमि टीले पे टीले, कहीं-कहीं हरियाली वन की।
कहीं ताल समुन्दर जल से भरे, कहीं चोटी चमकती पर्वत की।।

सदा फूलता-फलता भगवन्

सदा फूलता-फलता भगवन्, ये याजक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका सदा आपसे प्यार रहे।।

मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करे
देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करे
प्रभो आपकी आज्ञा पालन करता हर नर नारी रहे।।१।।

मिले संपदा जो भी इनको, उसको मानें आपकी
घड़ी न आने पाये इन पर कोई भी संताप की
यही कामना प्रभु आप से कर हम बारंबार रहे।।२।।

दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों
सेवा के सांचे में सब ने जीवन अपने ढाले हों
बच्चा-बच्चा परिवार का बनकर श्रवण कुमार रहे।।३।।

बने रहें संतोषी सारे जीवन के हर काल में
हाल चाल हो ऐसा इनका रहें मस्त हर हाल में
ताकि देश बसाया इनका सुखदायी संसार रहे।।४।।

❖❖

पुरुष और स्त्री दोनों ही मर्यादा में बंधे अपनी-अपनी मर्यादा का पालन करते हैं तो घर में सुख-शान्ति आती है। देशी विदेशी सामान भर लेने से आप सुखी नहीं हो सकते।

सर्व मंगल कामना

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, मेरे भगवान्! पूरी होय।।१।।
विद्या, बुद्धि, तेज, बल, सब के भीतर होय।
दूध-पूत, धन-धान्य से वंचित रहे न कोय।।२।।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।३।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।४।।
पाप से हमें बचाइए करके दया दयाल।
अपना भक्त बना कर, सबको करो निहाल।।५।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य वीरता, सबको दो करतार।।६।।
नारायण तुम आप हो, पाप विमोचनहार।
क्षमा करो अपराध सब, करदो भव से पार।।७।।
हाथ जोड़ विनती करूं, सुनिये कृपा निधान।
साधु संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।८।।

दोहे

आया था कुछ काम को तू सोया चादर तान।
सुरत सम्भाल ऐ गाफ़िल अपना आप पहचान।।
रात गंवाई सोय के दिवस गवाया खाया।
हीरा जन्म अनमोल था कौड़ी बदले जाय।
मांगन मरन समान है मत मांगो कोई भीख।
मांगन से मरना भला यह सत्गुरु की सीख।।
लूट सके तो लूट ले प्रभु नाम की लूट।
फिर पीछे पछताओगे प्राण जाहि जब छूट।।
माया मरी न मन मरा मर मर गये शरीर।
आशा तृष्णा न मरी कह गये दास कबीर।।

सुन नाथ अरज अब मेरी

सुन नाथ अरज अब मेरी।
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी।।
तुम मानुष तन मोहे दीन्हा
भजन प्रभु तुम्हारा नहीं कीन्हा
विषयों ने मेरी मति फेरी
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ...

सुत दारादिक ये परिवारा
सब स्वार्थ का है संसारा
जिन हेतु पाप किये ढेरी
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ...

माया में ये जीव लुभाया
रूप नहीं पर तुम्हारा जाना
पड़ा जन्म मरण की फेरी
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ...

भवसागर में नीर अपारा
मोहे कृपालु प्रभु करो पारा
ब्रह्मानन्द करो नहीं देरी
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ...

❖❖

सीता राम सीता राम कहिए

सीता राम सीता राम कहिए
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए

राम नाम मुख में और राम सेवा हाथ में
तू अकेला नहीं प्यारे राम तेरे साथ में
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए।

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पाएगा
होगा प्यारे वो ही जो श्री रामजी को भाएगा
फल आशा छोड़ शुभ काम करते रहिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए।

ज़िन्दगी की बागडोर सौंप हाथ दीना नाथ के
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए।

आशा एक राम की और आशा छोड़ दे
रोम रोम अंग अंग राम संग रंगिए
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।

सीता राम सीता राम कहिए.................

❖❖

सरल है बहुत जपना प्रभु

सरल है बहुत जपना प्रभु
मगर उसको दिल में बिठाना कठिन है।
जुबां से तो कहते हैं सब कुछ वही है।
मगर उसको अपना बनाना कठिन है।

हमारे हृदय रूपी घर में वही है,
चमन में वही है शहर में वही है
वह नयनों की ज्योति में भी रमा,
बिना योग साधन के पाना कठिन है।

बहुत से पुजारी, नमाज़ी भी देखे
कई वेदपाठी काज़ी भी देखे
सभी अपनी अपनी हवा बांधते हैं
किसी के मगर काम आना कठिन है।

नगर में रहें, चाहे वनवास में हो
उदासी बने चाहे सन्यास में हो
कर्मवीर हो चाहे रणधीर भी हो
मगर दिल से मोह को हटाना कठिन है।

सदा अपने गुणगान करना सरल है
किसी को परेशान करना सरल है
हृदय में अमीरस बहा देने वाला
प्रभु का तराना सुनाना कठिन है।

यूँ ही बीत जायेगी जीवन की घड़ियाँ
सभी टूट जायेगी श्वासों की कड़ियाँ
यह मानव का तुझको जन्म तो मिला है
बिना भाग्य के इसको पाना कठिन है।।

समय बड़ा बलवान रे

समय बड़ा बलवान रे, समय बड़ा बलवान।
इक दिन सबको जाना होगा, निर्धन या धनवान।।

है दुर्लभ ये मानव जीवन, बड़ा कठिन पाना मानव तन।
पाकर धन वैभव यौवन तू, मत करना अभिमान रे।।१।।

जिस दिन आया तू धरती पर, काल चला हमजोली बनकर।
पता नहीं किसी पल धर बैठेगा मूर्ख रुख पहचान रे।।२।।

काम बहुत है जीवन थोड़ा, उस पर मन का चंचल घोड़ा।
रूक जा प्राणी गा ले प्रभु का, सुन्दर प्यारा नाम रे।।३।।

जब चलने का पल आयेगा, कोई रोक नहीं पायेगा।
प्रभु चरणों में शरण बिहारी, सोच समझ नादान रे।।४।।

❖❖

"हर दिन इस तरह बिताओ कि रात को चैन की नींद सो सको हर रात ऐसे बिताओ कि जागो तो चेहरे पर ताज़गी हो, प्रसन्नता हो! जवानी को ऐसे बिताओ कि बुढ़ापे में पछताना न पड़े, बुढ़ापे को ऐसे बिताओ कि किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े।"

–आचार्य सुधांशु

सच्चा तू करतार है

सच्चा तू करतार है सब का पालनहार है ।
तेरा सब को आसरा सुखों का भण्डार है ।।

नदियाँ नाले पर्वत सारे तेरी याद दिलाते हैं ।।
ऋषि मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं ।।१।।

बादल गरजे बिजली चमके छम-छम वर्षा आती है ।
मीठी वाणी कोयल बोले, ये ही गीत सुनाती है ।।२।।

शुद्ध आत्मा होगी उसकी, नाम जो तेरा ध्यायेगा ।
जन्म सफल कर ले अपना अन्त नहीं पछतायेगा ।।३।।

सत्‌चित्‌ आनन्द प्रभु को वेदों ने बतलाया है ।
अन्त तेरा किसी ने न पाया, सुन्दर तेरी माया है ।।४।।

❖❖

मानने से जानना श्रेष्ठ होता है
जानने से अनुभव श्रेष्ठ होता है
भावना से कर्तव्य श्रेष्ठ होता है
स्मरण से ध्यान श्रेष्ठ होता है

संसार के वाली ने

संसार के वाली ने संसार रचाया है
संसार रचाया है कण-कण में समाया है

गरदूं पै सितारों में कैसी चमक निराली है
महताब में ठण्डक है और शम्स में लाली है
कहीं श्याम घटाओं ने कैसा जल बरसाया है...

पतझड़ में बहारों में फूलों में खारों में
तेरा रूप झलकता है रंगीन नज़ारों में
भंवरों की गुंजारों ने कैसा गीत सुनाया है...

कहीं निर्मल धारा है कहीं सागर खारा है
कहीं गहरा पानी है कहीं दूर किनारा है
जगदीश तेरी महिमा कोई जान न पाया है...

कोई चार के कन्धों पर दुनियाँ से जाता है
कोई ढोल बजा करके बारात सजाता है
बेमोल ये सृष्टि का कैसा चक्र चलाया है...

❖❖

ईश्वर अपने आने के पूर्व साधक के हृदय में प्रेम, भक्ति, विश्वास तथा व्याकुलता पहले ही भर देते हैं।

सूंघता कोई नहीं फूल

सूंघता कोई नहीं फूल मुरझाने के बाद
कौन करता है किसी को याद मर जाने के बाद

याद कर इस ज़िन्दगी में, उस प्रभु को यादकर
फिर जगायेगा न कोई, तुझको सो जाने के बाद

लाख कोशिश से मिला था, तुझको यह मानव जन्म
खो दिया तूने मगर यह राह मिल जाने के बाद

कष्ट विरह के सहे तो फिर कहीं दिलबर मिला
ज़िन्दगी मिलती है बन्दे, खुद को खो जाने के बाद

एक परवाने ने जलकर यह कभी सोचा नहीं
क्या करेगा दीप मुझको मेरे जल जाने के बाद

ज़िन्दगी में ही जहां वालों को ऐ मन छोड़ दे
छोड़ जायेंगे तुझे यह तो मर जाने के बाद

❖❖

मिट्टी के पुतले हैं, मिट्टी में मिल जायेंगे।
जो कर्मयोगी हैं कर्मों से याद आयेंगे।।

सदियों से जीव भटकता

सदियों से जीव भटकता पर चैन कभी ना पाया
सौ बार मरा जी जीकर फिर भी जीना ना आया

पशुओं वृक्षों में घूमा, पर उपकार न सीखा
नित नया पाप करने का सीखा नित नया तरीका
पशु पुरुष में क्या अंतर यह ज्ञान अभी न आया।

तह करके ताक पर रखदीं जीवन की सभी किताबें
या खून पिया निर्धन का या विषयों की ज़हर शराबें
प्रभु नाम के अमृत का इक जाम न पीना आया।।

निर्धन गरीब तड़पा भी, पर तेरी दया पिघली ना
पत्थर बन गया कलेजा, सीमेंट बन गया सीना
सीने से सी न निकली, एक ज़ख्म न सीना आया।।

कभी मोर पपीहा बनकर पीपी न कभी पुकारा
सत्संग की वर्षा ऋतु में मन धोकर नहीं निखारा
कई बार तेरे जीवन में सावन का महीना आया।।

इस चौरासी के चक्कर ने तुझे यूँ चक्कर में डाला
इस जीवन तख्ती पर कई बार सवाल निकाला
हर बार गलत ही निकला इक बार सही न आया।।

तेरे कर्मों का लेखा जोखा जब प्रभु ने देखा भाला
नत्थासिंह सर से पैरों तक तेरा जीवन निकला काला
सब पुण्य पड़ गये फीके पापों का पसीना आया।।

❖❖

सतगुरु के चरणों में

सतगुरु के चरणों में सारे तीरथ और अस्नान
लगी रहे जो लगन गुरु से हो जाये कल्याण
गुरु का प्यार है प्यारा, गुरु संसार निराला...

गुरुचरणों की धूलि जो माथे पर लग जाये
किस्मत रेखा बदले-खुशियां सारी मिल जाएँ
दुःखी रहे न वह नर जग में, जिसको तेरा ध्यान
गुरु का प्यार निराला, गुरु संसार निराला...

गुरु चाहे तो पंगु भी पर्वत पर चढ़ जाये
अंधा दुनियाँ देखे, गूंगा भी राग सुनाये
राई को पर्वत कर डाले, रंक बने धनवान
गुरु का प्यार निराला, गुरु संसार निराला...

❖❖

जिसे गुरु का अनुग्रह मिला हो, गुरु सेवा के परमानन्द का जिसने भोग किया हो, वही उसकी माधुरी जान सकता है।

सत्गुरु प्यारे से

सत्गुरु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है

झूठी दुनियाँ से करके किनारा
ले लो सच्चे प्रभु का सहारा
झूठी दुनियाँ का झूठा सहारा
झूठी दुनियाँ का झूठा रंग है
उसको हरदम आनन्द..........

उसको चिन्ता कभी न सतावे
वह तो जन्म जन्म सुख ही पावे
उसका कटना चौरासी का फन्द है
उसको हरदम आनंन्द....................

जिसकी वाणी में कोयल सी चहक हो
जिसकी करनी में फूलों सी महक हो
जिनको सत्संग ही सत्संग पसन्द हो
उसको हरदम आनंन्द..................

❖❖

प्रभु का स्नेह माता के स्नेह से भी बढ़कर है। फिर सोच विचार क्यों करूँ? जिसके सिर पर जो भार है वही जाने।

हे प्रभु तुझसा न कोई

हे प्रभु तुझसा न कोई विश्व का प्रतिपाल है।
एक तू सारे जगत का कितना रखता ख्याल है।।

दौड़ने वालों से पहले है वहाँ मौजूद तू,
चल रहा बिन पैर तू कैसी अनोखी चाल है।।

तेरी सानी का कोई भी दूसरा पाया नहीं,
तू अभी जन्मा नहीं है और नाही काल है।।

है सभी कारीगरों का मुख्य कारीगर तू ही
हाथ बिन सब रच रहा सारे जगत् का जाल है।।

भर रहा धन-धान्य से सबके तू ही परिवार को।
पास कौड़ी है नहीं पर सबसे मालामाल है।।

❖❖

जिस मनुष्य का मन चिन्तन की ज्योति से प्रकाशित है और जिसमें सदा प्रभु का ही विश्वास भरा है, वही सच्चा ज्ञानी है।

हे जगदीश्वर हे भगवान

हे जगदीश्वर हे भगवान।
बहुत निराली तेरी शान।
विश्व विधाता ईश महान्।
बहुत निराली तेरी शान।

अमर अनादि अनन्त अनूपा।
नित्य सनातन सत्य स्वरूपा।
अलख निरंजन शक्तिमान।
बहुत निराली तेरी शान.......

माता पिता बन्धु और भ्राता।
रक्षक पालक तू सुख दाता
तू सब का प्राणों का प्राण
बहुत निराली तेरी शान......

मंगल जनक अमंगल हारी।
कष्ट विदारक पर उपकारी।
दीन-दयाकार कृपानिधान।
बहुत निराली तेरी शान.......

पतित सुपावन शंकर स्वामी।
परम सहायक अन्तर्यामी
"पथिक" करें तेरा गुणगान।
बहुत निराली तेरी शान......

हे जग त्राता विश्व विधाता

हे जग त्राता विश्व विधाता
हे सुख शान्ति निकेतन हे ।
प्रेम के सिन्धु दीन के बन्धु
दुःख दरिद्र विनाशन हे ।
नित्य, अनन्त, अखण्ड अनादि
पूरन ब्रह्म सनातन हे ।
जग आश्रय जगपति जग वन्दन
अनुपम अलख निरंजन हे ।
प्राण सखा त्रिभुवन प्रति पालक
जीवन के अवलम्बन हे ।।

❖❖

प्रातः काल जब संसार में चुपचाप होती है
यह दुनियाँ सब की सब आराम की निद्रा में सोती है।

इधर पृथ्वी उधर आकाश और आकाश के तारे
किसी कारण रुके लगते हैं अपनी चाल से सारे

निराला रंग जब होता है इन चारों दिशाओं में
नया संसार आता है नज़र तारों की छाँव में ।

दया आकाश से भगवान की ऐसी बरसती है
नज़र आता है इस बस्ती में कोई और बस्ती है ।

समय बस है यही तेरा सफल जीवन बनाने का
अमर जगदीश के चरणों में अपना सर झुकाने का

है कृपा तेरी मेरे सत्‌गुरु

है कृपा तेरी मेरे सत्‌गुरु,
तूने जीवन मेरा बना दिया
मैं भटक रहा था जहान में,
तूने सच्चा रास्ता बता दिया
मैं भटक रहा था जहान में.........

मैंने ढूँढा तूझको यहाँ-वहाँ
पर तेरा पता मुझको न मिला
जब मुझको तेरा पता मिला,
मुझे अपना पता तक भुला दिया
मैं भटक रहा था जहान में.........

तेरी वाणी में है वो दाता असर,
जिसको सुनकर कहता है बशर
मैंने जब से तेरी पूजा की,
तूने ज्ञान का दीपक जला दिया
मैं भटक रहा था जहान में.........

मेरे मन में लगी है आस यही,
तेरे दर्शन की है प्यास बड़ी
तेरे दर्शन रूपी बहार ने
मेरे मन के कमल को खिला दिया
मैं भटक रहा था जहान में.........

❖❖

हो जाये मेरी विनती

हो जाये मेरी विनती परवान तेरे दर ते
ऐ जनम कर देवाँ मैं कुर्बान तेरे दर ते

किस्ती वी तू चप्पु वी तू, तू ही है खेवन हारा
मैनू डर नहीं दरया दा, तू ही मेरा किनारा

पापी भी हूँ कुकर्मी भी हूँ अनजान हूँ दाता
मैं जो कुछ भी हूँ तेरी संतान हूँ दाता
मैं आया अपनी भुल्लां बक्शान तेरे दर ते
हो जाये मेरी..............

सुनया मैं तेरे दर ते दाता तकदीर बदल दी
एत्थे मत्थे दी लकीरां दी तासीर बदल दी
मैं आया अपनी किस्मत अजमान तेरे दर ते
हो जाये मेरी..............

तेरे दर ते दाता मैं मुड़-मुड़ के आन्दा हाँ
एत्थे मत्थे दियां लकीरा दे निशां मिटा दां हाँ
मैनूँ जन्म-जन्म तक होवे पहचान तेरे दर दी
हो जाये मेरी..............

❖❖

अपना दोष कभी देखो तो क्षमा नहीं करना।
दूसरों का दोष देखो तो हमेशा क्षमा करना।
-आचार्य सुधाँशु

हर घड़ी हर पल सुमिरन तेरा

हर घड़ी हर पल सुमिरन तेरा
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा

याद तेरी को दिल में बसाऊँ मैं
आठों पहर दाता तेरे गुण गाऊँ मैं
तेरे चरणों में रहे, मन सदा मेरा
ऐसा बना दो प्रभु जीवन...

जग में रहूँ पर जग से आज़ाद रहूँ
तेरे बिना न प्रभु किसी का मोहताज रहूँ
इस जग में है प्यार, पावन तेरा
ऐसा बना दो प्रभु जीवन...

ऐसी तेरी पूजा में दास खो जाये
मैं न रहूँ तू ही तू रह जाये
दास ने पकड़ा है दामन तेरा
ऐसा बना दो प्रभु जीवन...

❖❖

प्रेम का एक ही मूल मंत्र है और वह है सेवा।

हर दम है तैयार तू

हर दम है तैयार तू, पाप कमाने के लिए।
कुछ तो समय निकाल प्रभु गुण गाने के लिए।।

गर्भ काल में कौल किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा।
इस झूठी दुनियाँ में आकर नाम भूल गया मैं तेरा।।
ऋषि मुनि सब आते हैं समझाने के लिए।।१।।

जब तक तेल 'दीये' में बाती जगमग-जगमग हो रहे।
जल गया तेल बुझ गयी बाती, ले चल-ले चल हो रहा।।
चार जने मिल आते हैं ले जाने के लिए।।२।।

हाड़ जैसे सूखी लकड़ी केश जले जैसे घास रे।
कंचन जैसी काया जल गयी कोई न आया पास रे।
अपने पराये रोते हैं दिखलाने के लिए।।३।।

❖❖

हम आये शरण तुम्हारी

हम आये शरण तुम्हारी हैं,
ठुकरा न कहीं हमको देना

भगवान दया के सागर हो,
अपराध क्षमा सब कर देना

है पास न मेरे बल-बुद्धि
तप त्याग नहीं मन की शुद्धि

प्रभु का ही सहारा है लेना
अपराध क्षमा सब कर देना

मैं भटक रहा हूँ इधर-उधर
कुछ पता नहीं हम जायें किधर

प्रभु हमको मार्ग बता देना
अपराध क्षमा सब कर देना

हम लगें डूबने जहाँ कहीं
हो कोई अपना वहाँ नहीं

प्रभु आकर हमें बचा लेना
अपराध क्षमा सब कर देना

❖❖

ईश्वर जिस पर खुश होता है, उसे नदी की सी दानशीलता, सूर्य की सी उदारता और पृथ्वी की सी सहनशीलता प्रदान करता है।

हस्ती तो क्या है

हस्ती तो क्या है हस्ती, दुनियाँ भी लुटा बैठे
जिस दिन से लगन अपने गुरुवर से लगा बैठे
जप तप नियम का कुछ ज्ञान नहीं हमको
हम प्रेम के बंधन में गुरुवर को बांध बैठे
हस्ती तो क्या है हस्ती..................

माया के ये हैं बंधन सारे के सारे झूठे
गुरुवर की शरण में सब कुछ हम सुला बैठे
क्या बांध लेंगे हमको ये मोम जैसे बंधन
गुरुदेव के भजन में जीवन ही भुला बैठे
हस्ती तो क्या है हस्ती..................

डूबेंगे भक्ति रस में बहती ज्यों प्रेम गंगा
गुरुदेव के चरणों में तन मन को लगा बैठे
मुमकिन नहीं इस ज़िद की उनको न खबर कुछ
सब कुछ ही समझकर हम इस दिल को लुटा बैठे
हस्ती तो क्या है हस्ती..................

एक दिन तो खुलेगा ही यह राज़ जमा लेगे
हर तौर से इस जिद एतबार जमा बैठे
हमको नहीं भरोसा जीवन कटेगा कैसे
गुरुइष्ट के चरणों में सुध अपनी गंवा बैठे
हस्ती तो क्या है हस्ती..................

❖❖

हृदय में बस प्रकाश तुम्हारा

हृदय में बस प्रकाश तुम्हारा ही नाथ हो।
माता तुम्हीं, पिता तुम्हीं दीनानाथ हो।।

आपस के राग द्वेष से मन हो रहा मलिन।
हृदय में गंगा जल सी बहा प्रेम धार दो।।

दर्शन की चाह लेके मैं आया हूँ द्वार पर।
अब दर्श दिखाओ पिता पूरा साथ हो।।

मिलने की यूँ तड़प बढ़ी नाथ प्राण को।
करूणा का तेरी सर पे मेरे प्रभु हाथ हो।।

मेरा तो रोम रोम तुम्हें कर रहा प्रणाम।
मंदिर में मन के एक तुम्हारा निवास हो।।

❖❖

"कामनाओं, कल्पनाओं और काम-काज के मायाजाल से निकलकर कुछ समय परमात्मा का प्यार पाने के लिए अवश्य दो। परम प्रभु का संग, ईश्वर का विश्वास और भगवद् सिमरन कभी व्यर्थ नहीं जाता। अशान्त जगत से पीड़ित आत्मा का शरणस्थल केवल परमात्मा है, उसे ही ध्याओ, उसे ही भजो, उसे ही पुकारो।"

-आचार्य सुधांशु

हिम्मत न हारिये

हिम्मत न हारिये, प्रभु न विसारिये

हँसते मुस्कराते हुए जीना जिनको आ गया
टूटे हुए दिलों को सीना जिन को आ गया
ऐसे देवताओं के चरणों को पखारिये
उनकी तरह नेक बन के ज़िन्दगी गुजारिये ... हँसते

काम ऐसे कीजिये कि जिनसे हो सब का भला
बातें ऐसी कीजिये जिनमें हो अमृत भरा
मीठी बोली बोल सबको प्रेम से पुकारिये
कड़वे बोल बोल के न ज़िन्दगी गुज़ारिये ... हँसते

मुश्किलों मुसीबतों का, करना है जो खात्मा
हर समय कहिये तेरा शुक्र है परमात्मा
गिले शिकवे कर के अपना हाल न बिगाड़िये
जैसे प्रभु रखे वैसे ज़िन्दगी गुज़ारिये ... हँसते

शुभ कर्म करते हुये दुःख भी अगर पा रहे
पिछले पाप कर्मों का भुगतान वो भुगता रहे
आगे मत उठाइये पिछले बोझ उतारिये
गलतियों से बचते हुए ज़िन्दगी गुज़ारिये ... हँसते

दिल की नोट बुक पे बातें नोट कर लीजिए
बनके सच्चे सेवक सच्चे दिल से अमल कीजिए
करके अमल बनके कमल, तरिए और तारिए
जग में जगमगाती हुई ज़िन्दगी गुज़ारिये ... हँसते

❖❖

त्रिलोकपति दाता सुखधाम

त्रिलोकपति दाता सुखधाम
स्वीकारो मेरे प्रणाम

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 2786
भारती पुस्तकालय

मन वाणी में वो शक्ति कहाँ
जो महिमा तुम्हारी गान करे।
हे अगम अगोचर अविकारी
निर्लेप हो रहे शक्ति से परे
हम और तो कुछ भी जाने ना
केवल गाते हैं पावन नाम।। स्वीकारो...

आदि, मध्य और अन्त तुम्हीं
और तुम्हीं आत्म आधारे हो
भक्तों के तुम प्राण प्रभु
इस जीवन के रखवाले हो
जनक तुम्हीं पालक तुम ही
और अन्त करे तुम में विश्राम।। स्वीकारो...

सच्चिदानन्द का ध्यान करूँ
और प्राण करे सुमिरन तेरा
दीनाश्रय दीनानाथ प्रभु
भव बंधन काटो ईश मेरा
शरणागत के तुम हो सहारे
हे नाथ मुझे तुम लेना थाम।। स्वीकारो...

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें।।१।।

जो ध्यावे फ़ल पावे, दुःख विनषे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।२।।

माता पिता तुम मेरे शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी।।३।।

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी।।४।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता।।५।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।।६।।

दीनबंधु दुःख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करूणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे।।७।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।८।।
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।।

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 2786
भारती पुस्तकालय

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 2786
भारती पुस्तकालय